॥ श्रीः ॥

प्रेमी वनवारीलाल पचौरी द्वारा लिखित.

हिंदी भाषा व्याकरण।

पहिला भाग.



गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

हिन्दी

भाषा व्याकरण ।

पहिला भाग ।

जिसमें वर्णनिरूपण, शब्दनिरूपण और वाक्य-
निरूपण तीनोंकी व्याख्या की गई है ।

(प्रेमी) वनवारीलाल पचौरी (खैरस्थ)
द्वारा लिखित ।

उसीको
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९७९, शके १८४४.

कल्याण-मुंबई.

भूमिका.

मनुष्य कुछ औरही सोचता है, हो कुछ औरही जाता है। गतवर्ष जब भरतभूमि मासिपत्रका प्रारम्भ हुआ था उसमें पिंगलके नियम प्रकाश करनेका विचार था। फिर सोचा गया कि विना व्याकरणके बताये पिंगलका बनाना अनुचित और असंगत है तो भाषा व्याकरणका आरंभ कर दिया, उस परमात्माको कोटिशः धन्यवाद हैं कि आज समस्त भाषा व्याकरण पाठकोंकी सेवामें अर्पण है। इसे आप ध्यानपूर्वक विचारिये और अपनी संतानको शिक्षाके हेतु पढाइये।

इस व्याकरणमें भाषा व्याकरणकी साधारण रीति सबही स्थान २ पर दिखाई गई है, इस बातका बडा उद्योग किया गया है कि प्रत्येक नियमके साथ उदाहरण रहें जिससे समझनेमें सुगमता हो। जहाँ उदाहरणकी आवश्यकता नहीं समझी वहाँ छोड भी दिया है। अनेक प्रधान नियमोंको स्थल स्थलमें कई बार लिखा है जिससे स्मरण बना रहै। विषयोंको ऐसे क्रमसे लगाया है कि जिसमें क्लिष्टताका भय नहीं रहा है। नित्यकी बोलचालसे जो नियम निकलते हैं उनको अन्य

वैय्याकरणोंके मतसे तुलना की है और जिस बातको यथार्थ जाना है उसको दिखाया है । लगभग गद्यके सब नियम इसमें आ गये हैं और जो शेष हैं वह या तो मेरी क्षुद्र मतिकी अनभिज्ञतासे रहगये हैं या वे हैं जिनके विषयमें यथावत् शंका समाधान नहीं होसका है और वह जानकर इसी आशापर छोडे गये हैं कि जब हृदय अंगीकार करैगा द्वितीयावृत्तिमें बढादिये जायँगे ।

अंग्रेजी विद्याका एक व्याकरण श्रीयुत नेस्फील्ड साहबने बनाया था उस समय बहुत छोटासा था परन्तु उसके प्रकाशित होनेके पीछे उक्त महोदयने अपने परिश्रमको शिथिल नहीं किया वरन बारबार उसको मनन और सुधार करते रहे उसीका प्रभाव है कि आज मेकमिलनके पुस्तकालयमें वही ग्रंथ अंगरेजीके अद्वितीय ग्रंथोंमें गिना जाताहै उसी आशापर इस व्याकरणको भी निर्माण किया गयाहै कि यदि साहित्यप्रेमी अपनी उचित आलोचनाओंसे कृपा करते रहे और एक बारकी मुद्रित पुस्तक सहसा वितरण होगई तो दूसरी और तीसरी आवृत्ति पर यह व्याकरण भी भाषाव्याकरणोंमें एक रत्न होजायगा ।

यहि पहिला भाग है, दूसरे भागमें पिंगल और उसके अधीन विषयोंको प्रकाश किया जावेगा और उन दोनों भागोंको पढनेसे पश्चात् आशा है कि विद्यार्थी भाषाके पंडित होजायेंगे।

कार्तिक १९६४ वि॰ प्रेमी बनवारीलाल पचौरी.

PREFACE.



The compilation of this book was undertaken to facilitate the learning of the Hindi Bhasha with correctness and accuracy. The bulk of the Hindi books-I doubt, if I can term them Hindi literature in press and in library at present are written by those who sometimes may write good and amusing tales and by some who may use a good many Sanskrit words in ordinary Hindi, but do not seem to care for the Grammatical rules of the language. In saying this I do not venture to undervalue the labours and the learnings of Hindi scholars of the time, who do try to maintain the name of Hindi Bhasha in this critical time, but I mean those authers who deal with useless topics, not necessary for the growing needs of the nation or books in which application of grammatical rules is nearly waste of time.

2. The Nagri-pracharini Sabha of Benares is doing the greatest service to our mother language and the gentlemen, in the editorial chairs of the Hindi press, are undoubtedly the main pillors of the "Hindi Bhasha Bhavan." There are a number of Hindi Journals ae present, in circulation in our

country which promulgate the cause of Hindi Bhasha, the reasons put forward by periodicals like the Saraswati of Allahadad and the Devnagar of Calcutta are unanimously agreed to, by all good Hindi writers of the time.

3. I do not introduce this handbook to the public with any great pretentions of originality of treatment or exhaustiveness of the subject. The chapter on Vakya Nirupan (Syntax) is a brief one in this book, and I hrve purposely not mentioned every details' because of my enquiry in respect to new style being incomplete. T. e publication of this book has not put me to rest, but I am doing my best to bring to light the latent rules of the new style in details. If is hoped that the 2nd. Edition of the book will be complete in this respect.

4. The Pingal portion of the Hindi Vyakaru has been left altogether, as their is great difference of opinion regarding the style of language used in lpoetry. In the past Brij-bhasha (the speaking anguage of the Muttra District and its neighbourood) was considered the best language for poetry, it is still the best in my opinion, but the schools

following the new style mentioned above do not wish at all to keep that languge in use any longer. My sincerity towards Brijbhasha is, because I have studied it considerably and because of the sweet sound of the words used in it a lyric poem with rhyme of simple words is the best that one can like mostly. In short I need say that no other dialect of the country possesses such qualification as the Brijbhasha. The second part of the book will deal with all this.

5. Those English or Europeon gentlemen who wish to be the master of the language of the country are requested to go through this compilation once or twice and it is hoped that they will learn Hindi Devnagari Bhasha perfectly. The book is not first of its class but surely first of its style and usefulness, having been written after the model of English grammars, an intelligent scholar can make it out without the help of any teacher. Every rule has an example of it.

MORADABAD.
October. 1907. } B. L. PACHAURI.

श्रीः ।

भाषा व्याकरणकी विषयानुक्रमणिका ।



विषय.	पृष्ठ.

विषय.	पृष्ठ.

इति भाषा व्याकरणकी विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

श्रीः ।

अथ

भाषा व्याकरण ।

प्रथम अध्याय ।

१ जिसके द्वारा मनुष्यके मनका भाव जाना जाता है उसे भाषा कहते हैं ।

२ भाषा दो प्रकारकी है १ गद्य और २ पद्य ।
(पहले गद्यके यथावत् नियमादि विना जाने पद्यका जानना कठिन है और ठीक भी नहीं है । इस कारण आदिमें गद्यका वर्णन करते हैं ।

३ गद्य व्याकरण शुद्ध भाषा लिखने और बोलनेकी रीति सिखाता है ।

४ व्याकरण वर्णनिरूपण, शब्दनिरूपण और वाक्यनिरूपण तीन प्रकरणोंमें बट रहा है ।

वर्णनिरूपण ।

५ वर्णनिरूपण उसे कहते हैं जिसमें वर्ण, अर्थात् अक्षरका स्वरूप, उच्चारण आदिका वर्णन हो ।

६ शब्दके उन छोटे २ टुकडोंको जिससे शब्द बनता है वर्ण

अर्थात् अक्षर कहते हैं । लिखनेमें इसीलिये जो चिह्न माने गये हैं वे भी अक्षर कहाते हैं ।

७ अक्षरोंके यथाक्रम समूहका नाम वर्णमाला है ।

८ देवनागरी वर्णमालामें ५० अक्षर हैं । और इसलिये इसको शतार्द्धाक्षरीय कहते हैं ।

९ देवनागरी वर्णमालाके अक्षरोंके चार भेद हैं । जिनको स्वर, अयोगवाह, व्यञ्जन और वेदाक्षर कहते हैं । उनके स्वरूप ये हैं ।

स्वर॰

ह्रस्व॰	दीर्घ॰
अ, इ, उ ऋ और ऌ ।	आ, ई, ऊ, ॠ और ॡ ।

अयोगवाह॰

अं और अः ।

व्यञ्जन ।

स्पर्श॰

(कवर्ग) क, ख, ग, घ और ङ । (चवर्ग) च, छ, ज, झ और ञ । (टवर्ग) ट, ठ, ड, ढ और ण । (तवर्ग) त, थ, द, ध और न । (पवर्ग) प, फ, ब, भ और म ।

अन्तस्थ॰	ऊष्म॰
य, र, ल और व	श, ष, स और ह ।

वेदाक्षर.

२२ स्वर ।

१० जो अक्षर अपने आप बोलाजाय और किसी दूसरे अक्षरके बोलनेमें सहायता दे उसको स्वर कहते हैं । जैसे अ, इ, उ आदि ।

११ स्वर अयोगवाह और व्यंजन दोनोंहीके बोलनेमें सहायता देते हैं ।

१२ स्वरोंके दो भेद हैं एक ह्रस्व और दूसरा दीर्घ ।

१३ ह्रस्व स्वर वे हैं जिनके बोलनेमें थोडा समय लगता है । ये पाँच हैं आर्थात् अ, इ, ऊ, ऋ और ऌ । यही मूल स्वर हैं और इनको एकमात्रिक भी कहते हैं ।

१४ इन्हींके मेलसे और स्वर बने हैं इसलिये इनको मूल स्वर कहते हैं जैसे अ+अ = आ । इ+इ = ई । उ+उ = ऊ । ऋ+ऋ = ॠ । ऌ+ऌ = ॡ । अ+इ = ए । अ+ए = ऐ । अ+उ = ओ । और अ+ओ = औ ।

१५ दीर्घ स्वर वे हैं जिनके बोलनेमें ह्रस्वसे दूना काल लगता है । यह गिनतीमें ९ हैं अर्थात् आ, ई, ॠ, ॡ*, ए, ऐ, ओ और औ । इन दीर्घ स्वरोंको द्विमात्रिक भी कहते हैं ।

* किसी २ आचार्यने ऌको दीर्घ नहीं माना वरन प्लुत कहा है और मतसे स्वर केवल १३ हैं ।

१६ ह्रस्व स्वरोंमें अ और दीर्घ स्वरोंमें ए और ओ को गुण कहते हैं और दीर्घ आ, ऐ और औ को वृद्धि कहते हैं ।

१७ इन सब स्वरोंमें उच्चारणके समय यदि ह्रस्वसे तिगुनी देर लगे तो उन्हें प्लुत अथवा त्रिमात्रिक कहते हैं और ये त्रिमात्रिक स्वर रोने, दूरसे बुलाने और गानेमें काम आते हैं ।

१८ लिखनेमें प्लुतका चिह्न स्वरके अगाडी ३ का अंक बना देते हैं । जैसे अ ३ आ ३ इ ३ ई ३ उ ३ आदि ।

अयोगवाह ।

१९ अयोगवाह वे हैं जो स्वरकी सहायतासे बोले जाते हैं और जिनका उच्चारण स्वयं नहीं होता । अयोगवाहके आदिमें स्वर रहता है, जैसे॰ और ः इनके सस्वर स्वरूप अं और अः हैं ।

२० अयोगवाह न स्वर ही हैं और न व्यंजन दोनोंसे पृथक् हैं

२१ अयोगवाहोंमें ॰ को अनुस्वार और ः को विसर्ग कहते हैं ।

अनुस्वार ।

२२ अनुस्वारके दो रूप हैं १ पूर्ण (ं) और २ अर्द्ध (ँ) ।

२३ जब अनुस्वारका पूरा उच्चारण होता है तो उसको पूर्ण अनुस्वार कहते हैं जैसा अंशमें ।

२४ जब अनुस्वारका आधा उच्चारण होता है तो उसको अर्द्ध चन्द्र कहते हैं जैसा भाँतिमें।

२५ अनुस्वारके योगसे-ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों प्रकारके स्वर दो भाँतिके होते हैं। अनुनासिक और अननुनासिक।

२६ अनुनासिक उसे कहते हैं जिसके बोलनेमें नासिकाके द्वारा भी शब्द होता है जैसे अाँ, ईं, एँ आदि।

२७ अननुनासिक स्वरके शुद्ध उच्चारणका नाम है और वहाँ नासिकाकी सहायता नहीं लीजाती जैसे अ, ऊ, आदि।

विसर्ग।

२८ विसर्गकेभी वैयाकरणोंने तीन भेद मान रखे हैं। एक (साधारण) विसर्ग दूसरा जिह्वामूलीय और तीसरा उपध्मानीय।

२९ साधारण विसर्ग वही है जैसा रामः के उच्चारणमें बोला जाता है।

३० जिह्वामूलीय विसर्ग जब होता है तब उसके आगे क, और ख आजाता है। जैसा क करोति।

३१ उपध्मानीय विसर्ग जब होता है तब उस विसर्गके आगे प, और फ आजाते हैं। जैसा क ॅ फलति।

व्यंजन ।

३२ व्यंजन उसे कहते हैं जो अपने आप न बोला जाय और जिसके बोलनेमें स्वरकी सहायता ली जाती है ।

३३ व्यंजनमें स्वर पृथक् नहीं रहता वरन् उच्चारणमें मिला रहता है ।

३४ व्यंजन और अयोगवाहमें यही अन्तर है कि अयोगवाहके आदिमें स्वर रहता है और व्यंजनके आदि अन्त दोनों स्थानोंमें स्वर होता है जैसा अक और क ।

३५ व्यंजन तीन भागोंमें बट रहे हैं जिनको स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म कहते हैं ।

३६ पांच २ अक्षरके कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग हैं । इनको कु, चु, टु, तु, पु भी कहते हैं और यह पचीसों व्यंजन स्पर्श कहे जाते हैं ।

३७ य, र, ल और व इनको अन्तस्थ कहते हैं ।

३८ श, ष, स और ह को ऊष्म कहाजाता है ।

वेदाक्षर ।

३९ वेदाक्षर वह है जो अपने आप बोलाजाय परन्तु उसकी सहायतासे दूसरा अक्षर नहीं बोलाजाता और वेदाक्षर केवल वेदमें ही काम आता है । जैसा ळ ।

वेदाक्षरका काम भाषामें न पड़नेके कारण भाषा वैयाकरण इसको वर्णमालामें नहीं गिनते और इस भाँति देवनागरी वर्णमालाके ४९ अक्षर मानते हैं अर्थात् १४ स्वर, २ अयोगवाह और ३३ व्यंजन ।

४० किसी अक्षरके आगे कार शब्द जोड देनेसे वही अक्षर समझा है जैसा अकारसे अ और गकारसे ग ।:

संयुक्त अक्षर ।

४१ दो वा अधिक अक्षरोंके मेलसे जो अक्षर बनता है उसको संयुक्त अक्षर कहते हैं ।

४२ बहुधा क्ष, त्र और ज्ञ तीन संयुक्त अक्षरोंको वर्णमालाके पीछे लिख दिया करते हैं इसका कारण यह है कि जिन अक्षरोंके मेलसे यह अक्षर बने हैं उनमेंसे किसीके रूपका कुछ भी भाग इनमें नहीं रहा है । जैसा क्+ष = क्ष, त् + र = त्र, और ज् + ञ = ज्ञ ।

मात्रा ।

४३ स्वरोंको व्यंजनोंमें मिलाते समय जो स्वरोंके रूप काममें आते हैं उनको मात्रा कहते हैं । जैसेः—

आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ और औ

ा, ि, ी, ु, ू, ृ, ॄ, ॢ, ॣ, े, ै, ो और ौ ।

४४ ह्रस्व अ प्रत्येक व्यंजनमें उच्चारणके समय मिला रहता है । जैसा क में अ रहित: व्यंजनका स्वरूप क् के समान होजाता है इसी कारण ह्रस्व अ की कोई विशेष मात्रा नहीं हैं ।

४५ उच्चारणकी विशेषताको यथावत् लिखनेके लिये शब्द लिखने पढनेवालोंने कुछ काल्पित चिह्न मात्राओंमें बढा दिये हैं । जैसा ऐ का रूप मैय्या और मैलामें, और औ का रूप सौख्य और नौकामें ।

४६ आ, ए और ओ के उच्चारणमें कभी २ विशेषता होजाती है । परन्तु ऐसा उच्चारण बहुधा अन्य भाषाके शब्दोंके लिखनेमें होता है । जैसा मॉस (Moss) मेन् (Men) और डोन्ट (Don't) आदिमें ।

अक्षरोंकी मिलावट ।

४७ दो आदि स्वर आपसमें नहीं मिलते ।

४८ अयोगवाहमें स्वर आदिमें रहकर मिलता है जैसा अं और अः ।

४९ स्वर आदिमें रहकर व्यंजनसे नहीं मिलता ।

५० अयोगवाह पहले नहीं मिलते ।

५१ अयोगवाह व्यंजनसे नहीं मिलते स्वरमय व्यंजनमें

अयोगवाह मिलजाता है । जैसा क्+ः का उच्चारण ही नहीं है और क+ः = कः ।

५२ जब व्यंजन और स्वर मिलते हैं तो व्यंजनका स्वरूप ज्योंका त्यों रहता है अथवा उसका कोई टुकडा नहीं होता परन्तु स्वरकी मात्रा व्यंजनके साथ मिलती है जैसे क्+अ = क, क्+आ = का, क्+ई = की आदि ।

५३ र् के साथ ह्रस्व और दीर्घ उ और ऊ साधारण मात्रासे नहीं मिलता वरन ये स्वरूप होते हैं रु और रू ।

५४ व्यंजनसे व्यंजनके मिलनेकी कई रीतियाँ हैं ।

(अ) जब दो व्यंजन आपसमें मिलते हैं तो पहलेका आध स्वरूप और दूसरेका सम्पूर्ण रूप रहता है । जैसे ल्+य = ल्य, श्+व श्व, ल्+क = ल्क आदि ।

(क) बहुधा ऊपरका नियम है परन्तु कहीं २ उसके विपरीत भी है । अर्थात् पहले अक्षरका सम्पूर्ण स्वरूप रहता है और पिछलेका आधा । जैसे क्त, त्र आदि ।

(ख) ङ, छ, ट, ठ, द और ह आदिमें मिलने पर भी सदा इनका स्वरूप पूरा बना रहता है, जैसे ङ्क, ट्ट और ढ्य आदि ।

(ग) र् जब किसी व्यंजनके आदिमें रहकर मिलता है तो र् लिख दिया जाता है अथवा उस व्यंजनपर (ॅ) ऐसा चिह्न करदेते हैं इस चिह्नको रेफ कहते हैं । जैसे चर्स और धर्ममें । व्यंजनके अन्तमें र् इस आकार (—) में मिलता है । जैसे प्रवरमें ।

(घ) जिस व्यंजनके ऊपर रेफ चढाया जाता है उसको बहुधा द्वित्व बोलते और लिखते हैं । जैसे पूर्व्व, खर्व्व, धर्म्म, कर्म्म आदिमें ।

(च) स्पर्श वर्णके पहले जो अनुस्वार आता है वह जिस वर्गका व्यंजन होता है उसी वर्गके पंचम वर्णके स्वरूपमें व्यंजनसे मिल जाता है । जैसे अंक = अङ्क, पंच = पञ्च, ठंडा = ठण्डा आदि ।

(छ) अर्द्धचन्द्र अनुस्वार किसीसे नहीं मिलता ज्योंका त्यों बना रहता है जैसे भाँतिको भान्ति नहीं लिखसकते ।

(ज) अन्तस्थ और ऊष्मवर्णसे पहले आनेवाला अनुस्वार किसी व्यंजनमें नहीं मिलता । जैसा वंशमें ।

(झ) क् और त् संयोगमें अपने साधारण रूपके अतिरिक्त क और त के रूपमें भी मिलते हैं जैसे चक्र और चक्रमें उस्का और पत्तामें ।

(ट) यदि * किसी वर्गके दूसरे और चौथे अक्षरका द्वित्व होता है तो मिलानेमें आदिके वर्णके स्थानमें उसी वर्गका पहला और तीसरा अक्षर होजाता है । जैसा पथ्‌थर = पत्थर । हमारी वर्णमालामें प्रत्येक अक्षरका स्वरूप दिखायागया है ।

५९ मिलावटमें जो अक्षर आदिमें बोलाजाताहै वही आदिमें लिखा जाता है । जैसे ब्राह्मण और तुम्हारा आदिमें म् का मेल है ।

---

* वर्गके पहले और तीसरे अक्षरको अल्पप्राण कहते हैं वर्गके दूसरे और चौथे अक्षरको महाप्राण कहते है । वर्गके पंचमवर्णको भी अल्पप्राणही कहते हैं परन्तु वह अनुनासिक अल्पप्राण है । अन्तस्थ और ऊष्म वर्णोंमें भी अल्पप्राण और महाप्राणके भेद हैं । वर्णके उच्चारणमें क्यों और कैसे शरीर, रंध्र और स्वर अपना काम करते है आदि उदात्त अनुदात्त स्वारितका उतार चढाव ये सब प्रयत्नके अभ्यन्तर और बाह्य भेद हैं । और विशेषकर इनसे भाषा व्याकरणमें काम नहीं पडता इसी कारण इनकी व्याख्या नहीं की जाती । हमने जहाँ वर्णमालाका इतिहास कहाहै वहाँ यह स्पष्टरूपमें दिखाये गये हैं । साहित्यके नवरसोंके आविर्भावमें कहीं २ यह भाषामें भी काम आते हैं परन्तु भाषा वैय्याकरण और २ चिह्नों और रीतियोंसे अपना काम निकाल लेते हैं ।

उच्चारणस्थान ।

५६ उच्चारण स्थान छः हैं अर्थात् कंठ, तालु, मूर्द्धा, दाँत, होंठ और नासिका । इनमें किसी एक वा एकसे अधिकसे सब अक्षर बोले जाते हैं ।

५७ अ, आ, आ ३, क, ख, ग, घ, ह और (:) विसर्ग कंठसे बोले जातेहैं, और इसलिये यह कंठ्य कहे जाते हैं

५८ इ, ई, ई ३, च, छ, ज, झ, य और श तालुसे जीभ लगानेसे बोले जाते हैं, इसलिये इनको तालव्य कहते हैं ।

५९ ऋ, ॠ, ३, ट, ठ, ड, ढ, र और ष तालुसे भी ऊपर मूर्द्धासे जीभ लगाकर बोले जाते हैं, इस लिये इनको मूर्द्धन्य कहा है ।

६० ऌ, ॡ ॡ, ३, त, थ, द, ध, ल और स दाँतोंसे जीभ लगाकर बोले जाते हैं, इसीसे इनका नाम दन्त्य है ।

६१ उ, ऊ, ऊ ३, प, फ, ब और म होंठसे बोले जाते हैं और इनको इसी कारण ओष्ठ्य कहा है ।

६२ ए, ऐ और ऐ ३ का उच्चारण कंठसे होता है परन्तु जीभको तालुसेभी लगाना पडता है, इसी कारण इनको कंठ-तालव्य कहते हैं ।

६३ ओ औ और औ ३ का उच्चारण कंठ और होंठ दोनोंसे होता है, इसीसे इनका नाम कंठोष्ठ्य है ।

६४ व का उच्चारण होंठपर दाँत लगानेसे होता है और इसको दन्त्योष्ठ्य कहते हैं ।

६५ ङ का उच्चारण कंठ और नासिकासे है और इसको अनुनासिक कंठ्य कहते हैं।

६६ * ञ का उच्चारण नासिका और तालुसे होता है और इसको अनुनासिकतालव्य कहते हैं।

६७ ण का उच्चारण नासिका और मूर्द्धासे है और यह अनुनासिक मूर्द्धन्य कहाजाता है ।

६८ न का उच्चारण नासिका और दाँतसे होता है और इसको अनुनासिक दन्त्य कहते हैं ।

६९ म का उच्चारण नासिका और होंठसे होताहै और इसको अनुनासिक ओष्ठ्य कहा है ।

७० भाषामें बोलनेकी स्पष्टताके लिये किसी २ अक्षरका उच्चारण कुछ बदलकर होताहै । जैसे क़ का उच्चारण क में कंठपर भार देकर होगा । इसी प्रकार क़ ख़ और ग़ आदिका भी ।

ज का उच्चारण ज़ में तालुपर भार देनेसे और उर्दू (;) को ज़ में जीभ लौटती हुई तालुसे मूर्द्धापर भार देती है ।

---

* ञ का शुद्धरूप ञ है परन्तु देशमें मुद्रालय आदिके अक्षर प्रचार पाकर ञ के शुद्धरूपका लोपसा होता जाता है ।

ड़ और ढ़ के उच्चारण जब ड़ और ढ़ के स्वरूपमें होते हैं, तो जीभ लौटकर मूर्द्धासे लगानी पडती है।

व के नीचे जब बिन्दी लगजाती है तो व़ का उच्चारण कंठपर भार देकर होठपर दाँत लगाकर होताहै ।

७१ उपध्मानीय विसर्गका उच्चारणभी होठसे होता है ।

७२ कहीं कहीं मूर्द्धन्य ष को खके समान बोलते हैं परन्तु यह सर्वथा अशुद्ध है ।

७३ भाषाके शब्दोंमें कहीं कहीं एक वर्णके स्थानमें दूसरा वर्ण बोल देते हैं इसमें वर्णके उच्चारणका दोष नहीं परिपाटी ही कारण है । जैसे धोका और धोखा इसको व्याकरणमें वर्णव्यविहार कहते हैं ।

७४ देशकालके कारण वर्णमालाके किसी २ अक्षरके एकसे अधिक स्वरूप होगयेहैं परन्तु यह रूपभेद उच्चारण-स्थानमें कुछ अन्तर नहीं डालते । जैसे अ और ग्र ।

७५ जिन जिन अक्षरोंके उच्चारण स्थान और प्रयत्न एकसे होते हैं उनको एक दूसरेका सवर्ण कहा जाता है । जैसे त और द का एकही उच्चारण स्थान है और दोनों अल्प प्राण हैं यह एक दूसरेके सवर्ण हुए

द्वितीय अध्याय ।

संधिविचार ।

७६ जब कभी पास पासके दो अक्षर एक साथ मिलाकर बोले जाते हैं तो उसको संधि कहते हैं । कहीं दो अक्षरोंके मिलनेसे साधारण अन्तर होता है कहीं अधिक । यह प्रकरण भी संस्कृत व्याकरणका है परन्तु भाषामें संस्कृतके अनेक शब्द काममें आते हैं इस लिये इस विषयका विचार भी भाषा वैय्याकरणका कर्त्तव्य है । संधिके विना जाने भाषामें अनेक शब्दोंकी व्युत्पत्ति और अर्थ नहीं जाने जा सकते ।

७७ भाषा व्याकरणमें सन्धि तीन प्रकारकी होती है अर्थात् स्वरसंधि, व्यजनसंधि और विसर्गसंधि ।

७८ जब स्वरके संग स्वरका मेल होता है तो उसको स्वर-संधि कहते हैं ।

७९ जब स्वरके संग व्यंजनका मेल होता है अथवा व्यंजनका मेल व्यंजनके साथ होता है तो उसको व्यंजन-संधि कहते हैं ।

८० जब स्वर वा व्यंजनके संग विसर्गका मेल होता है तो उसको विसर्गसंधि कहते हैं ।

८१ संस्कृतके शब्द जो अपभ्रंश होकर भाषामें आये हैं उनमें संधिके यह नियम नहीं घटते । उनके लिये अक्षरोंकी मिलावटके नियम हैं और जिनको ऊपर लिखा जा चुका है ।

स्वरसंधि ।

८२ स्वर संधि पाँच भागोंमें बट रही है अर्थात् दीर्घसंधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण वा यादि चतुष्टय संधि और अयादि चतुष्टय संधि । किसी २ के मतसे पररूप संधि और पूर्वरूप संधि दो भेद और इस भांति स्वरसंधिके सात भेद हैं।

पहली दीर्घसंधि ।

८३ ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ वा ऌ के क्रमसे परस्पर मेलको दीर्घ संधि कहते हैं और इनमें दोनों स्वरोंके स्थानमें एक दीर्घ स्वर रहजाता है ।

८४ अ+अ, अ+आ, आ+अ तथा आ+आ के मेलसे आ होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पाका. रूप
वेद+अक्षर	अर्थात्	अ+अ = वेदाक्षर ।
शोक+आतुर	अर्थात्	अ+आ = शोकातुर ।
सेवा+अर्थ	अर्थात्	आ+अ = सेवार्थ ।
विद्या+आलय	अर्थात्	आ+आ = विद्यालय ।

८५ इ+इ, इ+ई, ई+इ तथा ई+ई के मेलसे ई होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
गिरि+इन्द्र	अर्थात्	इ+इ = गिरीन्द्र ।
फणि+ईश	अर्थात्	इ+ई = फणीश ।
मही+इन्द्र	अर्थात्	ई+इ = महीन्द्र ।
नदी+ईश	अर्थात्	ई+ई = नदीश ।

८६ उ+उ, उ+ऊ तथा ऊ+उ तथा ऊ+ऊ के मेलसे ऊ होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
भानु+उदय	अर्थात्	उ+उ = भानूदय ।
लघु×ऊर्मि	अर्थात्	उ+ऊ = लघूर्मि ।
स्वयंभू+उदय	अर्थात्	ऊ+उ = स्वयंभूदय ।
वामोरू+ऊरीकृत	अर्थात्	ऊ+ऊ = वामोरूरीकृत ।

८७ ऋ+ऋ, ऋ+ॠ, ॠ+ऋ तथा ॠ+ॠ के मेलसे ॠ हो जाता है । परन्तु भाषामें प्रायः ऐसे शब्द काममें नहीं आते सो इनके उदाहरण नहीं मिलते इसी भाँति लृ का भी जानो ।

दूसरी गुणसंधि ।

८८ अ वा आ के पीछे ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ, वा लृ आवे तो क्रमसे दोनोंके मेलसे ए ओ अर् तथा अल् हो जाताहै । इसको गुण संधि कहते हैं ।

८९ अ+इ, अ+ई, आ+इ तथा आ+ई के मेलसे ए होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
जित+इन्द्रिय	अर्थात्	अ+इ = जितेन्द्रिय ।
परम+ईश्वर	अर्थात्	अ+ई = परमेश्वर ।
राजा+इन्द्र	अर्थात्	आ+इ = राजेन्द्र ।
महा+ईश	अर्थात्	आ+ई = महेश ।

९० अ+उ, अ+ऊ, आ+उ, तथा आ+ऊ के मेलसे ओ होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
वसन्त+उत्सव	अर्थात्	अ+उ = वसन्तोत्सव ।
जल+ऊर्मि	अर्थात्	अ+ऊ = जलोर्मि ।
गंगा+उदक	अर्थात्	आ+उ = गंगोदक ।
गंगा+ऊर्मि	अर्थात्	आ+ऊ = गंगोर्मि ।

९१ अ+ऋ, अ+ॠ, आ+ऋ तथा आ+ॠ के मेलसे अर होजाता है और इसी भांति ऌ के संयोगसे अल् होता है परन्तु भाषामें इनके उदाहरण प्रायः नहीं मिलते हैं ।

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
देव+ऋषि	अर्थात्	अ+ऋ = देवर्षि ।
राजा+ऋषि	अर्थात्	आ+ऋ = राजर्षि ।

तीसरी वृद्धिसंधि ।

९२ जब अ वा आ के पीछे ए, ऐ, ओ वा औ आता है तो क्रमसे ऐ और औ हो जाताहै और इसको वृद्धि संधि कहते हैं ।

९३ अ+ए, अ+ऐ, आ+ए तथा आ+ऐ के मेलसे ऐ होजाताहै । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
एक+एक	अर्थात्	अ+ए = एकैक ।
परम+ऐश्वर्य	अर्थात्	अ÷ऐ = परमैश्वर्य।
तथा+एव	अर्थात्	आ+ए = तथैव ।
महा+ऐश्वर्य	अर्थात्	आ÷ऐ = महैश्वर्य ।

९४ अ+ओ, आ+ओ, अ+औ तथा आ+औ के मेलसे औ होजाताहै । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
सुन्दर+ओदन	अर्थात्	अ+ओ = सुन्दरौदन ।
महा+औषाधि	अर्थात्	आ+ओ = महौषाधि ।
परम+औषाधि	अर्थात्	अ+औ = परमौषध ।
परम+औदार्य	अर्थात्	आ+औ = परमौदार्य।

अक्ष+ऊहिणी = अक्षौहिणीको भी वृद्धि संधि कहा जाता है परन्तु यह विकार अनियमित है ।

चौथी यण वा यादि चतुष्टयसंधि ।

९५ जब ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ तथा ऌ के पीछे क्रमसे वेही स्वर न आवे वरन कोई भिन्न स्वर आवे तो इ का य, उ का व, ऋ का र, तथा ऌ का ल होकर उस स्वरमें मिलजाते हैं। इसको यण् वा यादि चतुष्टय संधि कहते हैं।

९६ इ+अ, ई+अ, इ+आ, ई+आ, इ+उ, ई+ऊ, इ+ऊ, ई+ऊ इ+ए, ई+ए, इ+ऐ, ई+ऐ, इ+ओ, ई+ओ, इ+औ, ई+औ, तथा इ+ऋ के मेलसे य, य, या, या, यु, यु, यू, यू, ये, ये, यै, यै, यो, यो, यौ, यौ, तथा य हो जाता है। ऋ और ऌ के उदाहरण प्रायः भाषामें नहीं मिलते परन्तु नियम यही रहता है।

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
यदि+अपि	अर्थात्	इ+अ = यद्यपि ।
गोपी+अर्थ	अर्थात्	ई+अ = गोप्यर्थ ।
दधि+आनय	अर्थात्	इ+आ = दध्यानय ।
देवी+आगमन	अर्थात्	ई+आ = देव्यागमन ।
प्रति+उत्तर	अर्थात्	इ+उ = प्रत्युत्तर ।
सखी+उक्त	अर्थात्	ई+उ = सख्युक्त ।
नि+ऊन	अर्थात्	इ+ऊ = न्यून ।
प्रति+एक	अर्थात्	इ+ए = प्रत्येक ।

अति+ऐश्वर्य	अर्थात्	इ+ऐ	= अत्यैश्वर्य।
युवति+ऋतु	अर्थात्	इ+ऋ	= युवत्यृतु।

९७ उ+अ, ऊ+आ, उ+आ, ऊ+आ, उ+इ, ऊ+इ, उ+ई, ऊ+ई उ+ए, ऊ+ए, उ+ऐ तथा ऊ+ऐ उ+ओ ऊ+ओ, उ+औ, ऊ+औ तथा ऋ+अ, ऋ+आ आदिके मेलसे व, व, वा, वा, वि, वि, वी, वी, वे, वे, वै, वै, वो, वो, वौ वौ तथा र, रा आदि हो जाते हैं। जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
मधु+अरि	अर्थात्	उ+अ = मध्वरि।
सरयु+अम्बु	अर्थात्	ऊ+अ = सरय्वम्बु।
सु+आगत	अर्थात्	उ+आ = स्वागत।
अनु+इत	अर्थात्	उ+इ = अन्वित।
अनु+एषणा	अर्थात्	उ+ए = अन्वेषणा।
बहु+ऐश्वर्य	अर्थात्	उ+ऐ = बह्वैश्वर्य।
पितृ+अनुमति	अर्थात्	ऋ+अ = पित्रनुमति।
मातृ+आनन्द	अर्थात्	ऋ+आ = मात्रानन्द।

पाँचवीं अयादि चतुष्टय संधि।

९८ जब ए, ऐ, ओ तथा औ के पीछे कोई स्वर आता है तो क्रमसे ए का अय्, ऐ का आय् ओ का अव तथा औ का आव होजाता है। इसको अयादिकी संधि कहते हैं। जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
ने+अन	अर्थात्	ए+अ = नयन ।
गै+अक	अर्थात्	ऐ+अ = गायक ।
पो+अन	अर्थात्	ओ+अ = पवन ।
पो+इत्र	अर्थात्	ओ+इ = पवित्र ।
गो+ईश	अर्थात्	ओ+ई = गवीश ।
पौ+अक	अर्थात्	औ+अ = पावक ।
भौ+इनी	अर्थात्	औ+इ = भाविनी ।
भौ+उक	अर्थात्	औ+उ = भावुक ।

छठी पररूपसंधि ।

९९. जब उपसर्गके अन्तमें ह्रस्व वा दीर्घ अकार हो और उसके पीछे ए वा ओ आवे तो अकारका लोप होजाता है और उसको किसी विशेष चिह्नसे जनाया भी नहीं जाता जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
उप+ओषण	अर्थात्	अ+ओ = उपोषण ।

सातवीं पूर्वरूपसंधि ।

१०० जब किसी शब्दके अन्तमें ए वा ओ हो और दूसरे शब्दके आदिमें अ हो तो उस अ का उच्चारण नहीं

होता और लिखनेमें भी केवल ऽ का चिह्न लगा देते हैं। जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
सखे+अर्पय	अर्थात्	ए+अ = सखेऽर्पय।

व्यंजनसंधि।

स्वरसंधिके अनुसार व्यंजन संधि सुगम नहीं है परन्तु भाषामें आनेवाले शब्दोंकी व्याख्याके निमित्त इसके सूक्ष्म नियम दिखाये जाते हैं।

१०१ जब क् के पीछे ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, य, र, ल, व, अथवा कोई स्वर हो तो प्रायः क् के स्थानमें ग् होजायगा। जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
दिक्+गज	अर्थात्	क्+ग = दिग्गज।
धिक्+याचना	अर्थात्	क्+य = धिग्याचना।
दिक्+दर्शन	अर्थात्	क्+द = दिग्दर्शन।
धिक्+जड	अर्थात्	क्+ज = धिग्जड।
दिक्+अंबर	अर्थात्	क्+अ = दिगम्बर।
वाक्+ईश	अर्थात्	क्+ई = वागीश।

१०२ जब अनुनासिक वर्णके पहले क्, च्, ट्, त्, प्, मेंसे कोई अक्षर रहता है तो क् के स्थानमें ङ्, ञ्, के

स्थानमें ञ् ट् के स्थानमें ण्, त् के स्थानमें न् और प् के स्थानमें म् हो जाता है । जैसे:—

कच्चा रूप.			पक्का रूप.
प्राक्+मुख	अर्थात्	क्+म	= प्राङ्मुख ।
वाच्+मय	अर्थात्	च्+म	= वाङ्मय ।
षट्+मंडप	अर्थात्	ट्+म	= षण्मंडप ।
जगत्+नाथ	अर्थात्	त्+न	= जगन्नाथ ।
अप्+मय	अर्थात्	प्+म	= अम्मय ।

१०३ जब, ट् वा प् के पीछे ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, य, र, ल, व अथवा कोई स्वर हो तो, च् के स्थानमें ज्, ट् के स्थानमें ड् वा ड़् और प् के स्थानमें ब् होजाता है । जैसे:—

कच्चा रूप.			पक्का रूप.
अच्+विकार	अर्थात्	च्+व	= अज्विकार ।
अच्+अन्त	अर्थात्	च्+अ	अजन्त ।
षट्+दर्शन	अर्थात्	ट्+द	= षड्दर्शन ।
षट्+अंग	अर्थात्	ड्+अ	= षड़ंग ।
अप्+ज	अर्थात्	प्+ज	= अब्ज ।
अप्+ईश्वर	अर्थात्	प्+ई	= अबीश्वर ।

१०४ जब छ के पहले ह्रस्व स्वर आवे तो छको द्वित्व होजाता है और लिखनेमें ८४ वें नियमके ट खंडके अनुसार च और छ को मिलाकर लिखा जायगा । कहीं २ छ से पहले दीर्घ स्वर रहते भी यही विकार होता है ।

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
वृक्ष+छाया	अर्थात्	अ+छ = वृक्षच्छाया ।
परि+छेद	अर्थात्	इ+छ = परिच्छेद ।
लक्ष्मी+छाया	अर्थात्	ई+छ = लक्ष्मीच्छाया ।

१०५ जब त् वा द् से पीछे च, छ ट वा ठ हो तो त् वा द् के स्थानमें च वा ट् हो जाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
सत्+चरित्र	अर्थात्	त्+च = सच्चरित्र ।
उत्+छिन्न	अर्थात्	त्+छ = उच्छिन्न ।
सत्+टीका	अर्थात्	त्+ट = सट्टीका ।
सत्+ठक्कुर	अर्थात्	त्+ठ = सट्ठक्कुर ।

१०६ जब त् वा द् के पीछे ज, झ, ड वा ढ हो तो त वा द् के स्थानमें ज् वा ड् होजाताहै । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
सत्+जाति	अर्थात्	त्+ज = सज्जाति ।
तत्+झंकार	अर्थात्	त्+झ = तज्झंकार ।

तत्+डिमडिम अर्थात् त्+ड = तड्डिमडिम ।

मद्+ढक्का अर्थात् त्+ढ = मड्ढक्का ।

१०७ जब त् वा द् के पीछे श होता है तो त् वा द् का च् होकर श में मिलता है, परन्तु साथके साथ श का भी रूप छ होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
उत्+शिष्ट	अर्थात् त्+श	= उच्छिष्ट ।
सत्+शास्त्र	अर्थात् त्+श	= सच्छास्त्र ।

१०८ जब त् वा द् के पीछे ल होता है तो त् वा द् के स्थानमें ल् होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
उत्+लंघन	अर्थात् त्+ल	= उल्लंघन ।

१०९ जब त् वा द् के पीछे ह होता है तो त् वा द् के स्थानमें द् होजाता है और साथके साथ ह का रूप ध हो जाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप.
उत्+हार	अर्थात् त्+ह	= उद्धार ।
तत्+हित	अर्थात् त्+ह	= तद्धित ।

११० जब त् के पीछे ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व

अथवा कोई स्वर हो तो त् के स्थानमें द् होजाता है और जब द् के पीछे यह अक्षर आते हैं तो द् ज्यों का त्यों बना रहता है । जैसेः—

कच्चा रूप.	पक्का रूप.
पशुवत्+गामी	अर्थात् त्+ग = पशुवद्गामी ।
उत्+घाटन	अर्थात् त्+घ = उ ाटन ।
उत्+दीपन	अर्थात् त्+द = उद्दीपन ।
महत्+धनुष	अर्थात् त्+ध = महद्धनुष ।
भविष्यत्+वाणी	अर्थात् त्+व = भविष्यद्वाणी ।
सत्+भूत	अर्थात् त्+भ = सद्भूत ।
बृहत्+रथ	अर्थात् त्+र = बृहद्रथ ।
सत्+वंश	अर्थात् त्+व = सद्वंश ।
उत्+अय	अर्थात् त्+अ = उदय ।
सत्+आनंद	अर्थात् त्+आ = सदानंद ।
जगत्+इन्द्र	अर्थात् त्+इ = जगदिन्द्र ।
सत्+उत्तर	अर्थात् त्+उ = सदुत्तर ।
महत्+औषध	अर्थात् त्+औ = महदौषध ।

१११ जब अनुस्वारके पीछे कोई स्वर हो तो अनुस्वारका म होजाताहै । जैसेः—

सं+आचार अर्थात् अं+आ = समाचार ।
सं+उदाय अर्थात् अं+उ = समुदाय ।

विसर्ग संधि ।

११२ जब किसी पदके अन्तमें स् वा र् हो तो उसको विसर्ग ऐसा उच्चारण किया जाताहै । जैसेः—

मनस्—मनः दुस् = दुः तथा पुनर् पुनः

११३ जब विसर्गके पीछे ह्रस्व अ होताहै तो उसका ओ होजाता है और संधिके नियमको स्पष्ट करनेके लिये वहाँ ऽका चिह्न लगादेते हैं । जैसेः—

कच्चा रूप. पक्का रूप.

मनः+अभिलाष अर्थात् ः+अ = मनोऽभिलाष ।

११४ जब इ वा उ युक्त अक्षरके सामने विसर्ग और हो उसके पीछे क, ख वा प, फ आवे तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है । जैसेः—

कच्चा रूप. पक्का रूप.

निः+कृति अर्थात् इः+क = निष्कृति ।
निः+खलु अर्थात् इः+ख = निष्खलु ।
निः+पाप अर्थात् इः+प = निष्पाप ।
निः+फल अर्थात् इः+फ = निष्फल ।

चतुः+क अर्थात् उः+क = चतुष्क ।

दुः+फल अर्थात् उः+फ = दुष्फल ।

११५ जब विसर्गके पीछे च वा छ हो तो विसर्गकाभि 'श' होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप. पक्का रूप.

निः+चल अर्थात् ः+च = निश्चल ।

निः+छल अर्थात् ः+छ = निश्छल ।

११६ जब विसर्गके पीछे ट वा ठ हो तो विसर्गका ष् होजाताहै । जैसेः—

कच्चा रूप. पक्का रूप.

धनुः+टंकार अर्थात् ः+ट = धनुष्टंकार ।

११७ जब विसर्गके पीछे त वा थ हो तो विसर्गका स् हो जाताहै । जैसेः—

कच्चा रूप. पक्का रूप.

निः+तार अर्थात् ः+त = निस्तार ।

११८ जब विसर्गके पहले अ वा आ को छोड कोई अन्य स्वर हो और उसके पीछे कोई स्वर वा ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, ङ, ञ, ण, न, म, य, र, ल, व ह मेंसे कोई अक्षर हो तो विसर्गकी जगह र् होजाता है । जैसेः—

कच्चा रूप.			पक्का रूप.
निः+अर्थ	अर्थात्	इः+अ =	निरर्थ ।
निः+इच्छा	अर्थात्	इः+इ =	निरिच्छा ।
निः+गुण	अर्थात्	इः+ग =	निर्गुण ।
निः+जल	अर्थात्	इः+ज =	निर्जल ।
बहिः+देश	अर्थात्	इः+द =	बहिर्देश ।
निः+बल	अर्थात्	इः+ब =	निर्बल ।
निः+घिन	अर्थात्	इः+घ =	निर्घिन ।
निः+धन	अर्थात्	इः+ध =	निर्धन ।
निः+झर	अर्थात्	इः+झ =	निर्झर ।
निः+भय	अर्थात्	इः+भ =	निर्भय ।
निः+नाथ	अर्थात्	इः+न =	निर्नाथ ।
निः+मल	अर्थात्	इः+म =	निर्मल ।
निः+युक्ति	अर्थात्	इः+य =	निर्युक्ति ।
निः+वन	अर्थात्	इः+व =	निर्वन ।
निः+हस्त	अर्थात्	इः+ह =	निर्हस्त ।

११९ जब विसर्गके पीछे ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध, भ, ङ, ञ, ण, न, म, य, र, ल, व अथवा ह हो तो विसर्गका ओ होजाता है । जैसेः—



कच्चा रूप.		पक्का रूप.
मनः+गत	अर्थात्	:+ग = मनोगत ।
[illegible]	अर्थात्	:ज्ञ = मनोज्ञ ।
मनः+भाव	अर्थात्	:+भ = मनोभःव ।
मनः+नीति	अर्थात्	:+न = मनोनीति ।
तेजः+मय	अर्थात्	:+म = तेजोमय ।
मनः+योग	अर्थात्	:+य = मनोयोग ।
मनः+रथ	अर्थात्	:+र = मनोरथ ।
मनः÷हर	अर्थात्	:+ह = मनोहर ।

१२० जब विसर्गसे पहले तो 'अ' व 'आ' को छोड़ कोई स्वर हो और विसर्गसे पीछे र हो तो जो स्वर विसर्गसे पहले है उसको दीर्घ करदेते हैं । जैसेः—

कच्चा रूप.		पक्का रूप,
निः+रोग	अर्थात्	इ÷र = नीरोग ।

तृतीय अध्याय ।

शब्दनिरूपण ।

१२१ व्याकरणका दूसरा अंग शब्द निरूपण है । शब्द-निरूपण वह है जिसमें शब्दोंकी व्युत्पत्ति, भेद, गुण और काममें लानेकी रीति आदिका वर्णन हो ।

१२२ किसी भाँतिकी नाद जो कर्णेन्द्रिय पर खटकती है उसको शब्द कहते हैं, परन्तु व्याकरणमें शब्द उसी विशेष नादको कहागया है, जो किसी अर्थकी बोधक मानलीगयी है। घंटा बजता है और उसमेंसे शब्द निकलता है परन्तु उस शब्दका कुछ अर्थ नहीं कल्पना किया गया इस कारण शब्द-निरूपणमें उस घंटेसे निकले हुए शब्दकी कोई रीति नहीं आसकती। जिस शब्दको सुनते ही कुछ अर्थ बोध होता है उन्हींकी व्याख्या यहाँ की गई है। जैसे रथ नीम टोपी आदि।

१२३ शब्द एक दो वा उससे भी अधिक अक्षरोंके समूहका नाम है। जैसे घी, बेटी लडकी आदि।

१२४ भाषा व्याकरणमें सब सार्थक शब्दोंको तीन भेदोंमें बाँट रखा है अर्थात् संज्ञा, क्रिया और अव्यय।

संज्ञा।

१२५ किसी वस्तु विचार या भावका नाम संज्ञा है। जैसे गोविन्द, रोटी गरमी, शोक आदि।

१२६ व्युत्पत्तिके अनुसार संज्ञाके तीन भेद हैं। अर्थात् रूढि, यौगिक और योगरूढी।

१२७ जिस शब्दके खंडखंडका कुछ अर्थ न हो अथवा जोसके खंडोंका अर्थ उस शब्दके अर्थसे कुछ संबंध न रखता हि उसको रूढि संज्ञा कहा जाता है जैसे रोटी। इसमें रो

का कुछ अर्थ नहीं और न टीकाही कुछ अर्थ है और यदि रोका कुछ भाव माना जाय और टी का भी कुछ अर्थ किया जाय तो उन अर्थोंसे और रोटीसे कुछ संबध नहीं है इस कारण रोटी रूढि संज्ञा है ।

१२८ जो शब्द दो सार्थक शब्दोंके मेलसे बना हो और उसका भाव भी अपने खंडोंके भावको बतावे उसको यौगिक संज्ञा कहते हैं । जैसे घननाद, पँचलडी, जलचर आदि । यहाँ घन नाम बादलका है और नाद नाम शब्दका और घननादसे भी बादलका शब्दबोध होता है । पँचलडीसे पाँच लडीवाली वस्तु, जलचरसे जलमें चलनेवाला पदार्थ बोध होता है ।

१२९ जब यौगिक संज्ञा रूढि होकर किसी एक वस्तुकाही बोध कराती है तो उसको योगरूढि कहते हैं । जैसे दामोदर, पंकज, हनुमान् आदि । जिसके उदरपर रस्सी लिपटी हो उसको दामोदर कहते हैं अर्थात् यह शब्द साधारण यौगिक संज्ञा है परन्तु वृत्तिमें यह केवल श्रीकृष्णके नामका बोधक है इसलिये यह रूढि होगया इसी भाँति पंकज केवल कमलका बोधक है और हनुमान् एक विशेष बन्दरका बतानेवाला है ।

३

तद्धित कृदन्त और समासके प्रकरणमें संज्ञा बनानेके नियम हैं उनमें जो संज्ञा बनती हैं वे भी यौगिक वा योगरूढिही होती हैं ।

१३० भेद और गुणके अनुसार संज्ञा पाँच तरहकी है । अर्थात् जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, गुणवाचक और सर्वनाम ।

व्यक्तिवाचक संज्ञा ।

१३१ व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति विशेष वा मुख्य पदार्थका नाम है, इसीको प्रकृति नामवाचक संज्ञा भी कहते हैं । जैसे सोहनलाल एक व्यक्ति विशेषका नाम है । गंगा एक मुख्य नदीका नाम है । आगरा एक मुख्य नगरका नाम है ।

१३२ एकही नामके अनेक व्यक्ति वा पदार्थ होनेसे व्यक्तिवाचक संज्ञामें कोई विकार नहीं होता वरन सरलताके लिये और स्पष्ट करनेके लिये उस व्यक्तिवाचक संज्ञाके पहले वा पीछे कोई गुणवाचक संज्ञा और लगा देते हैं । जैसे राम गोपाल लोहिया, रामगोपाल कबडिया आदि ।

१३३ साहित्यमें अलंकारके प्रयोगमें व्यक्तिवाचक संज्ञा गुणवाचकका काम भी देती है जैसे किसी अधिक भोजन करनेवालेके लिये कहा जाय " हमारे भीमसेन रामकुमार भी

भोजनपर बैठगये" यहाँ भीमसेन व्यक्तिवाचक है परन्तु गुणवाचकका काम देता है ।

जातिवाचक संज्ञा ।

१३४ जातिवाचक उस साधारण संज्ञाका नाम है जो एक प्रकारकी अनेक वस्तुओंका बोध करती है । जैसे मनुष्य पशु, वृक्ष, लता आदि । यहां मनुष्यसे मनुष्यजातिका भाव लिया जाता है ।

१३५ जातिवाचक संज्ञाके दो भेद होसक्ते हैं अर्थात् व्यापक और व्याप्य ।

१३६ व्यापक जातिवाचक उस संज्ञाको कहते हैं जो एक समस्त जातिका बोधक हो । जैसे पशु इस शब्दमें गौ, घोडे, भैंस, हरिण, ऊँट इत्यादि समस्त पशु आगये और जहाँ पशु बोलाजायगा वहाँ इनमेंसे किसी विशेषका ध्यान नहीं होगा, बरन सब पशुओंकी भ्रान्ति होगी ।

१३७ व्याप्य जातिवाचक उस संज्ञाका नाम है, जो किसी विशेष जातिको बतावे । जैसे गौ, कुत्ता आदि यहां गौ शब्द पशुओंमें विशेष जाति गौका बोधक है ।

१३८ जहाँ एक जातिका एकही पदार्थ वा वस्तु हो वहाँ जातिवाचक उस संज्ञा ही व्यक्तिवाचकका काम देती है । जैसे किसीके पास एकही टोपी है और उसने कहा "टोपी लाओ"

तो वहाँ टोपी शब्द एक विशेष टोपीका बोधक है टोपीकी जातिमात्रका नहीं ।

१३९ अलंकारोंके प्रयोगमें जातिवाचक संज्ञा भी गुणवाचकका काम देती है । जैसे " उस गौ बालकने कुछ उत्तरही न दिया " यहाँ गौ शब्द बालकके गुणका बोधक है ।

भाववाचक संज्ञा ।

१४० भाववाचक संज्ञा उस संज्ञाको कहते हैं, जो किसीके भावमात्रका बोधक है अथवा जिससे किसी व्यापारका बोध होता है । जैसे ज्ञान, प्रकाश, ऊँचाई, लेन देन आदि । ज्ञान किसी वस्तु वा पदार्थका नाम नहीं है वरन एक भाव है, जो बुद्धिमें उत्पन्न होजाता है, लेन देन किसी विशेष पदार्थका बोधक नहीं है, वरन उस व्यापारका भाव बताता है, जो लेन देनमें होता है ।

१४१ बहुधा गुणवाचक संज्ञामें किसी प्रत्ययके लगानेसे भाववाचक संज्ञा बन जाती है । जैसे—सुन्दरता भोलापन, भुलाई आदि ।

प्रत्ययके प्रयोगसे गुणवाचकका भाववाचक कैसे बनता है और क्याका क्या होजाता है इसका वर्णन तद्धितके प्रकरणमें है।

गुणवाचक संज्ञा ।

१४२ गुणवाचक संज्ञा उस संज्ञाको कहते हैं, जो किसी दूसरी संज्ञाके गुण और स्थितिको बतावे । जैसे काला घोडा यहाँ काला शब्द घोडेके रंगका बोधक है ।

१४३ गुणवाचक संज्ञा सदा अपने विशेष्यसे पहले आती है उसी कारण इसको विशेषण भी कहते हैं और जिसका गुण बताती है उसको विशेष्य कहते हैं जैसे लाल पानी । यहाँ लाल विशेषण है और पानी विशेष्य है ।

१४४ कहीं २ ऊपरके नियमके विपरीत भी होजाता है अर्थात् गुणवाचक संज्ञा अपने विशेष्यके पीछे भी आती है । जैसे " घोडा काला अच्छा होता है " साधारण रीतिमें यह वाक्य इसी भाँति कहा जाता है " काला घोडा अच्छा होता है" परन्तु काला इस शब्दको पीछे लानेसे गुणमें विशेषताका भाव झलकने लगा । यह व्यवहार नई शैलीमें काम आने लगा है ।

१४५ गुणवाचक संज्ञाके अपने २ मतसे अनेक भेद मान-लिये गये हैं परन्तु तीन भेद प्रधान हैं अर्थात् परिमाणवाचक संख्यावाचक तथा सामान्य गुणवाचक ।

१४६ जो गुणवाचक संज्ञा अपने विशेष्यके प्रमाणका बोध करती है वह परिमाणवाचक है, जैसे चौडी सडक, ठिगना मनुष्य आदि ।

१४७ जो गुणवाचक संज्ञा अपने विशेष्यकी संख्याका बोध करती है वह * संख्यावाचक है । जैसे दोनों गौ, कोडी भर सोट आदि ।

१४८ परिमाणवाचक और संख्यावाचक गुणवाचकोंको छोडकर फिर सब गुणवाचक संज्ञा सामान्य कही जाती हैं । उनके नामसे ही उनकी परिभाषा जानी जाती है । जैसे— प्राकृतिकगुणवाचक, न्यूनतावाचक, अधिकतावाचक, समान-तावाचक, समयवाचक, दिग्वाचक आदि ।

१४९ गुणवाचक संज्ञा लिंग, वचन आदिमें अपने विशे-ष्यके समान रहती है ।

सर्वनाम संज्ञा ।

१५० जो संज्ञा दूसरी संज्ञाके बदलेमें आवे उसको सर्व-नाम वा संज्ञाप्रतिनिधि कहते हैं । जैसे वह, उस, तुम आदि ।

१५१ जिस संज्ञाकी प्रतिनिधि होकर सर्वनाम संज्ञा आती है उसको निर्दिष्ट कहते हैं । जैसे रामप्रसाद कल गया था

---

* संख्यावाचकके भी किसी २ ने तीन भेद और किये हैं १ संख्यापूरक २ अनिश्चयवाचक ३ समुच्चयवाचक ।

अभी वह लौटा नहीं । इस वाक्यमें वह सर्वनाम है और रामप्रसाद निर्दिष्ट है ।

१५२ सर्वनाम संज्ञा पुरुष, लिंग, वचनमें अपने निर्दिष्टके समान होगी परन्तु कारक प्रायः भिन्न होता है ।

१५३ संज्ञाप्रतिनिधिके भी दो भेद हैं अर्थात् पुरुषवाची और गुणवाची ।

१५४ पुरुषवाची सर्वनाम तीन रूपमें होता है १ उत्तम पुरुष २ मध्यम पुरुष ३ अन्य पुरुष ।

१५५ जो सर्वनाम बात कहनेवालेके बदलेमें आता है उसे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे मैं ।

१५६ जो सर्वनाम जिससे बात कही जाय उसके बदलेमें आता है उसको मध्यमपुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे तू ।

१५७ जो सर्वनाम जिसके विषयकी बात कही जाय उसके बदलेमें आता है उसे अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे वह ।

१५८ सब संज्ञाओंमें पुरुषका भेद इसी भाँति होता है ।

१५९ पुरुषवाची सर्वनाममें ही आदरसूचक सर्वनाम है । जैसे आप । बहुधा यह मध्यम पुरुषका बोधक है परन्तु कहीं २ किसी विशेष भावमें अन्य पुरुषको भी बताता

है । जैसे मोहनलाल सोहनलालसे गोपीनाथकी ओर इंगित करके पूछे कि आप कहाँसे आते हैं । तो यहाँ आप अन्य पुरुषवाची होगा ।

१६० गुणवाची सर्वनामके बहुत भेद हैं । जैसे निश्चय-वाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक, प्रश्नवाचक, प्रमाणवाचक, उपमावाचक आदि । इनमेंसे कुछका वर्णन कारकरचनामें किया गया है ।

१६१ कोई २ उपमावाचक "ऐसा" सर्वनामको गुण-वाचक संज्ञा कहते हैं परन्तु इसको सर्वनाम ही मानना चाहिये ।

चतुर्थ अध्याय ।

लिङ्ग ।

१६२ भाषामें लिंगका विषय बडा सूक्ष्म है और इसमें बुद्धि बल और अभ्यासकी आवश्यकता है । लिंग चिह्न विशेषका नाम है । जिसमें जैसा चिह्न हो वही उसका लिंग है । संस्कृतमें तीन लिङ्ग हैं, पुरुषचिह्नयुक्तको पुँल्लिंग, स्त्रीचि-ह्नयुक्तको स्त्रीलिंग और जिन पदार्थोंमें दोनों चिह्नोंका अभाव है उसको नपुंसकलिंग कहा है । परन्तु भाषामें नपुंसक

लिंगकी आवश्यकता नहीं मानी गयी और जिस चिह्नरहित संज्ञामें अन्यगुण पुरुषके समान मिले उसको पुँल्लिङ्ग और जिसमें स्त्रीके समान मिले उसको स्त्रीलिंग कहा है । इस कारण हिन्दीभाषामें केवल दो लिंग हैं एक पुँल्लिंग दूसरा स्त्रीलिंग ।

१६३ पुँल्लिंग वह संज्ञा है जो पुरुषवाची शब्दकी बोधक हो । जैसे गधा राजा आदिक ।

१६४ स्त्रीलिंग वह संज्ञा है; जो स्त्रीवाची शब्दकी बोधक हो । जैसे घोडी रानी आदि ।

१६५ संस्कृतके नपुंसक लिंग शब्द जो भाषामें काम आते हैं वे प्रायः पुँल्लिंग कहे जाते हैं । जैसे रत्न, जल, मुसल, मार्ग आदि ।

१६६ कुछ संस्कृत शब्द जो निर्जीव और चिह्नरहित संज्ञाके बोधक होनेपर भी स्त्रीलिंग माने गये हैं वह भाषामें भी स्त्रीलिंग कहे जाते हैं ।.जैसे लज्जा, सभा, भूमि आदि ।

१६७ जिन निर्जीववाचक शब्दोंके अन्तमें ' त ' वा ' द ' होता है वह प्रायः स्त्रीलिंग कहे जाते हैं । जैसे बात, रात, खाट, बाट आदि ।

१६८ जिन निर्जीववाचक शब्दोंके अन्तमें 'ई' होता है वह स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे चोली, डोली, रसोई, थैली आदि।

१६९ जिन निर्जीववाचक शब्दोंके अन्तमें त वा ट नहीं होता वह प्रायः पुँल्लिंग है। जैसे धर्म्म, कर्म्म, काल, पाप आदि।

१७० जिन निर्जीववाचक शब्दोंके अन्तमें 'ति' प्रत्यय पाया जाता है वह स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे गति, मति, जाति, पाँति आदि।

१७१ जिन संस्कृत शब्दोंके अन्तमें 'आ' का प्रयोग किया गया है वह प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे पंडिता, उत्तमा, मनोरमा आदि।

१७२ जिन भाववाचक संज्ञा शब्दोंके अन्तमें 'क' है वह प्रायः स्त्रीलिंग है। जैसे चमक, दमक, मटक, भडक, चटक आदि।

१७३ जिन शब्दोंके अन्तमें 'आव, त्व, पन, पा' आदि प्रत्यय लगे हैं और इस भाँति वह भाववाचक संज्ञा बनायेगये हैं वह पुँल्लिंग हैं। जैसे चढाव, मनुष्यत्व, लडकपन, बुढापा आदि।

१७४ जिन शब्दोंके अन्तमें 'आई, ता, वट, वा हट' आदिक प्रत्यय हों और भाववाचक संज्ञाके बोधक हैं वह

स्त्रीलिंग हैं। जैसे अधिकाई, कोमलता, सजावट, चिकना-हट आदि।

१७५ जो शब्द समाससे बनते हैं उनके लिंग अन्त-वाले शब्दके लिंगके अनुसार होते हैं। जैसे दयासागर, इसमें सागर अन्तवाला शब्द पुँल्लिंग है इस कारण सामासिक दयासागर शब्दभी पुँल्लिंग है।

१७६ जिन शब्दोंमें 'आस' प्रत्ययका प्रयोग पाया जाय वह स्त्रीलिंग हैं। जैसे प्यास, सुवास, करास आदि।

१७७ कुछ निर्जीववाचक शब्दोंके लिंग नीचेके चक्रसे ज्ञात होसकैंगे और इसी भाँति और शब्दोंके लिंग भी जानो।

पुँल्लिंग	पुँल्लिंग	पुँल्लिंग
अंश	अकल्याण	अकाज वृक्ष
अखाडा	अगवाडा	अगस्ती वृक्ष
अगहन	अघ	अंग
अंग	अंगन	अँगरखा
अंगार	अचंभा	अचार
अंजाति [हो)	अजीत वर्ण	अंचल
आतिथ (चाहे स्त्रीही	अध्याय	अनरस
अपयश	अभाष	इंधन
उडगण	उदधि	कुचला

कुंभ	खलड़ा	खारुवा
गरल	घर	गेहूँ
गोखरू	गोला	ग्रन्थ
घड़ा	घाट	घी
घूँघरू	चक्र	चौंर
चचेंडा	चन्द्रमा	छींक
जटुल	जथा	झाग
झाबा	टापू	टूँक
तार	थप्पड़	दगड़ा
दुशाला	नग	पनघट
बक्कल	मुगदर	भाग
लठ	सोग	

स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
वायु	विधि	जय
फटकार	हींग	संतान
आँख	वस्तु	धूप
बास	वय	आयु
रेणु	दंडवत	प्रणाम
लौंग	पुस्तक	अकड़
अख्याति	अंगड़ाई	अँगारी

आँगिया	अँगीठी	अजुगत
अटकल	अनरीति	अपराजिता
अविजा	इरा	उठ बैठ
उत्प्रेक्षा	किरण	किर्च
कुल्हिया	कूँची	केवली
खडाऊँ	खपरैल	खाल
गाजर	गुठली	घडत
घास	चंचला	छुरी
जुगनी	झाँझी	टोंटी
ताल(बजाना)	थई	देहरी
नाव	पालथी	बदली
मूँछ	भाजी	लपेट
सोंफ	हांस	

१७८ कुछ ऐसे शब्द जो पुँल्लिंग स्त्रीलिंग दोनों भाँति काममें आते हैं। आहुति, कुहुक, अग्नि, खोह, गीता, घीगुआर, छींट (जलकी बूँदके अर्थमें), जड, हुलास बूरा, दही।

स्त्रीलिंग प्रत्यय।

१७९ यह विषय प्रत्ययके प्रकरणका था परन्तु इस ध्यानसे कि इस स्थलमें इसका विचार करनेसे लिंगका ज्ञान

बालकोंके हृदयमें स्थान करलेगा इससे यहीं लिखते हैं । पुँल्लिंग शब्दको स्त्रीलिंग बनानेके लिये 'ई, इया, इन, अन, नी, आनी, आइन' आदि प्रत्ययका प्रयोग करते हैं । इन प्रत्ययोंके प्रयोगसे जो शब्द बनते हैं वह सब स्थलोंमें स्त्री-स्वभाववाचक ही नहीं होते वरन बहुतसे लघुताका भाव बताते हैं, परन्तु उनके लिये वाक्यमें स्त्रीलिंग क्रिया आती है इस कारण स्त्रीलिंग कहते हैं ।

१८० अकारान्त वा आकारान्त पुँल्लिंग शब्दोंमें अन्त्य 'अ' वा 'आ' का लोप करके 'ई' लगादेते हैं । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
अहीर	अहीरी	देव	देवी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	दास	दासी
रोट	रोटी	कुम्हार	कुम्हारी
थाल	थाली	चमार	चमारी
चेला	चेली	गधा	गधी
घोडा	घोडी	भांजा	भांजी
काका	काकी	फूफा	फूफी
चेंटा	चेंटी	कटोरा	कटोरी
लडका	लडकी	छिपकला	छिपकली
भौंरा	भौंरी	तोता	तोती

१८१ अकारान्त वा आकारान्त पुँल्लिंग शब्दोंमें स्त्रीलिंग बनानेको 'इया' लगादेते हैं । कहीं अन्त्य 'अ' वा 'आ' का लोप भी करदेते हैं जहां अन्त्य व्यंजन द्वित्व होगा वहाँ एक व्यञ्जनका भी लोप होजाता है । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुतिया	छप्पर	छपारिया
बिल्ला(बिलाव)	बिलइया(बिलैया)	पालिका	पालिकिया
ताल	तलइया(तलैया)	ओढना	ओढनिया (ओढनी)
गधा	गाधिया	लठ्ठ	लठिया
फुलका	फुलकिया	घडा	घडिया
लोटा	लुटिया	मुट्टा	मुटिया
बैल	बिलिया	भैंसा	भैंसिया(भैंस)
कूआ	कुइया	घोडा	घुडिया
पत्थर	पथरिया	पारा	परिया

१८२ किसी कामके करनेसे जो जातिवाचक पुँल्लिंग नाम बने हैं उनमें 'इन' वा 'अन' लगादेनेसे स्त्रीलिंग हो जाते हैं इनमें अन्त्य स्वरका लोपभी करदेना चाहिये जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुनार	सुनारिन(सुनारी)	लुहार	लुहारिन

ब्योपारी	ब्योपारिन	तेली	तेलिन
धोबी	धोबिन	नाई	नाइन
गद्दी	गद्दिन	दरजी	दरजिन
बारी	बारिन	ग्वाला	ग्वालिन
अहीर	अहीरिन	काछी	काछिन
तमोली	तमोलिन	हलवाई	हलवाइन
ठठेरा	ठठेरिन	बढ़ई	बढइन
बिसाइती	बिसाइतिन	मनिहार	मनिहारिन
पटवा	पटविन	कोरी	कोरिन

१८३ जिन पुँल्लिंग शब्दोंमें 'अन' लगादेनेसे स्त्रीलिंग बनजाते हैं उनके कुछ उदाहरण नीचे लिखते हैं यह भी बहुधा काम करनेसे वा देशके ध्यानसे जो जातिवाचक पुँल्लिंग बने हैं उन्हींमेंसे हैं और यहाँ भी कभी २ अन्त्य-स्वरका लोप होजाता है । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
कुँजडा	कुँजडन	बैरागी	बैरागन (बैरागन)
फिरंगी	फिरंगन	नैपाली	नैपालन
कहेरा	कहेरन	गुजराती	गुजरातन

जोगी	जोगन	बंगाली	बंगालन
मद्रासी	मद्रासन	कत्थक	कत्थकन

वास्तवमें यह प्रत्यय 'इन' प्रत्ययका अपभ्रंश है परन्तु लोकमें 'अन' का उदाहरण भी व्यवहारमें आगया है इस कारण इसका उल्लेखभी आवश्यक है क्योंकि व्याकरण देशकी भाषा पर निर्भर है ।

१८४ जिन पुँल्लिंग शब्दोंमें 'नी' लगा देनेसे स्त्रीलिंग बनजाते हैं उनके कुछ उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं ।

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
भूत	भूतनी	मल्लाह	मल्लाहनी
सिंह	सिंहनी	नट	नटनी (नटी)
पति	पत्नी	अहि	अहिनी
पापी	पापिनी	मोर	मोरनी
ऊँट	ऊँटनी	बाघ	बाघनी
रीछ	रीछनी	चांडाल	चांडालनी
कायथ	कायथनी	स्वामी	स्वामिनी
पंडा	पंडानी (पंडाइन)	तुरक	तुरकनी
सय्यद	सय्यदनी	डोम	डोमनी

जाट	जाटनी	राजपूत	राजपूतनी

१८५ कुछ पुँल्लिंग शब्दोंमें 'आनी' प्रत्ययके संयोगसे स्त्रीलिंग बन जाता है ऐसे अवसर पर कभी २ अन्त्यस्वरमें विकार होता है । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
क्षत्री	क्षत्रानी	भव	भवानी
मिस्सर	मिसरानी	ठाकुर	ठकुरानी
(मिश्र)	(मिश्रानी)		
टट्टू	टटवानी	इन्द्र	इन्द्रानी
मुंसिफ	मुंसिफानी	पुरोहित	पुरोहितानी
रुद्र	रुद्राणी	पंडित	पंडितानी
			(पंडिता)
खत्री	खत्रानी	यवन	यवनानी
	(खतरानी)		
मेहतर	मेहतरानी	मुगल	मुगलानी
रजपूत	रजपूतानी	वकील	वकीलानी

१८६ उपाधिवाचक तथा अन्य पुँल्लिंग शब्दोंमें 'आइन' प्रत्ययके प्रयोगसे स्त्रीलिंग बनजाता है । संयोगके कारण यहाँ भी स्वरमें विकार होता है । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
चौबे	चौबाइन	मुंशी	मुंशाइन
चौधरी	चौधराइन (चौधरीन)	दुबे	दुबाइन
ओझा	ओझाइन	बाबू	बबुआइन
पंडा	पंडाइन	बनिया	बनिआइन (बनैनी)

१८७ अनेक संबंधके पुँल्लिंग शब्दोंके तथा और शब्दोंके स्त्रीलिंग स्वरूप अनियमित रीतिसे बनते हैं । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	बाप	मा, मैया, महतारी
भाई	बहिन, बीबी	भाई	भावज, भावी, भौजाई, भौजी
ससुर	सासु, सास, ससुरी	राजा	रानी
पुरुष	स्त्री	युवा	युवती
साला	साली	साला	सलहज
जेठ	जिठानी	देवर	दौरानी
मर्द	बैयरबानी	डाकू	डायन

१८८ उन पुँल्लिंग शब्दोंके कुछ उदाहरण जो स्त्रीलिंग शब्दोंसे बने हैं ।

स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग
फूफी	फूफा	धी	जमाई
मा	मामा (मामी)	बहिन	बहनोई
नन्द	नन्दोई, नन्दोउ		

१८९ उन शब्दोंके कुछ उदाहरण जिनके लिंग बदलनेकी आवश्यकता ही नहीं होता ।

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
अन्त	चुडैल
फैन	दाई
गेहूँ	आँख
गरल	चंचला
धर्म्म	दिशा
स्थान	ओर
जल	आदि

वचन ।

१९० व्याकरणमें वचन शब्द संख्याका बोधक होता है अर्थात् एक वा कितने । जैसे मैं, हम आदि ।

१९१ भाषामें केवल दोही वचन हैं अर्थात् एक वचन और बहुवचन ।

१९२ जिस शब्दसे एकताका भाव जाना जाता है उसे एक वचन कहते हैं । जैसे मैं तू वह, आदि ।

१९३ जिस शब्दसे एकसे अधिकका भाव ज्ञात हो उसको बहुवचन कहते हैं । जैसे हम, तुम, वे, सब ।

१९४ एक वचनसे बहुवचन बनानेमें 'आँ' 'एँ' 'ओ' आदि प्रत्यय लगाने होते हैं और कभी २ अन्त्य स्वरको दीर्घसे ह्रस्व करना होता है । कारकरचनाके साथ २ यह वचनभेद भली भाँति समझमें आजायगा ।

१९५ आदरसूचक वाक्यमें एक वचनके स्थानमें बहुवचन लाया करते हैं । जैसे 'पंडित रामलाल मेरे गुरु हैं उनकी क्या बात है ! ' इस पद्में हैं क्रिया और उनके सर्व नाम आदरके कारण बहुवचन आये हैं ।

१९६ लोग, भर, मात्र, गण आदि शब्द किसी जातिवाचक संज्ञामें जोड दिये जाते हैं तो यह बहुतायत दिखाते हैं । जैसे हिन्दूलोग, जातिभर, सिक्खमात्र, राजपूतगण । कभी२ इन यौगिक शब्दोंके भी दूसरी बार बहुवचन बनालिये जाते हैं । जैसे हिन्दूलोगों ।

पंचम अध्याय ।

कारक अर्थात् संज्ञाकी अवस्था ।

१९७ जिसके द्वारा वाक्यमें एक संज्ञाका संबंध दूसरी संज्ञासे, विशेष कर क्रियासे अथवा अन्य शब्दोंसे स्पष्ट प्रकाशित होता है उसको कारक कहते हैं ।

१९८ भाषामें आठ कारक होते हैं अर्थात् १ कर्त्ता, २ कर्म, ३ करण, ४ संप्रदान, ५ अपादान, ६ संबंध, ७ अधिकरण तथा ८ संबोधन ।

१९९ जो कारक क्रियाके व्यापारको करताहै उसको कर्ता कारक कहते हैं । साधारणमें उसका कोई चिह्न नहीं है परन्तु सकर्मक क्रियासे किसी २ कालमें कर्ताके आगे 'ने' लगादिया जाताहै । जैसे 'लडका लिखता है' इस वाक्यमें लडका कर्त्ता है और इसका कोई विशेष विभक्तियुक्त रूप नहीं बनाया गया है । "लडकेने लिखा" इस पदमें भी लडका कर्त्ता है परंतु उसका विभक्तियुक्त रूप लडकाने वा लडकेने है ।

२०० जिस कारक पर क्रियाके व्यापारका फल रहता है उसको कर्म कहते हैं । जैसे 'लडका पोथीको लिखता है'

इस वाक्यमें पोथी कर्म है । किसी स्थलमें जहाँ वाक्य सरल है और विभक्तिके रहजानेसे वाक्यके अर्थ बदलनेका भय नहीं होता वहाँ कर्मकी विभक्तिका लोप भी करदेते हैं जैसे 'लडका पोथी लिखता है' यह नई शैली है परंतु बडे और मिश्रित वाक्योंमें विभक्तिका छोडदेना नियमका उल्लंघन करना है ।

२०१ जिसके द्वारा कर्त्ता कार्यको सिद्ध करता है उसको करण कारक कहते हैं । इसका विभक्ति चिह्न ' से ' है । जैसे लडका लेखनीसे पोथीको लिखता है । इस वाक्यमें लडका कर्त्ता और पोथी कर्म उसको लिखनेका व्यापार लडकेने लेखनीसे सिद्ध किया इस कारण लेखनी करण है ।

२०२ जिसके लिये क्रियाका कर्त्ता व्यापार करे उसको संप्रदान कारक कहते हैं । इसके विभक्ति चिह्न ' को, के, लिये-ए' हैं । जैसे " लडका पोथीको लडकीके लिये लिखता है " इस वाक्यमें लडकी संप्रदान कारक है ।

२०३ जिसके द्वारा क्रिया किसी पदार्थको अलग करे वा भिन्नता लावे उसको अपादान कारक कहते हैं । इसका विभक्ति चिह्न ' से ' है । ' वृक्षसे पत्ता गिरा ' इस वाक्यमें वृक्ष अपादान कारक है ।

२०४ संबंध कारक वह है जिसका सत्व किसी दूसरी संज्ञामें हो इसके विभक्ति चिह्न 'का, के, की' हैं। जैसे मालीकी डलिया, मोहनका पैसा, लालाके बरतन। इन पदोंमें माली, मोहन तथा लाला संबंध कारक हैं।

२०५ जिसपर कर्त्ता और कर्मके द्वारा क्रियाका आधार हो उसको अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'में, पै, पर' हैं। जैसे 'घडेमें जलको भरते हैं। तुम कोठेपै सोते हो। हम आसनपर बैठते हैं।' इन वाक्योंमें घडे, कोठे, आसन अधिकरण हैं।

२०६ शब्दकी उस अवस्थाको संबोधन कहते हैं जिसमें संबोध्यको किसी विशेषतासे आकर्षित किया जाय इसके सूचक प्रत्यय हे, अरे, हो, रे, ऐरे आदि हैं। संबोधनका चिह्न संबोध्यसे पहले आता है जैसे रे मोहनलाल! तू यहाँ आ। संबोधन सदा मध्यम पुरुषमें होता है।

२०७ इन ऊपर कही हुई परिभाषाओंके अनुसार प्रत्येक संज्ञा आठ अवस्थाओंमें होसक्ती है और इनकी आठ विभक्ति जो नीचेके चक्रसे स्पष्ट हैं।

विभक्तिक्रम	कारक	विभक्तिरूप
पहली	कर्त्ता	०, ने
दूसरी	कर्म	को
तीसरी	करण	से
चौथी	संप्रदान	को
पाँचवीं	अपादान	से
छठी	संबंध	का, के, की
सातवीं	अधिकरण	में, पै, पर
आठवीं	संबोधन	हे, अरे, हो, रे, ऐ रे

इसको विभक्ति नहीं कहते वरन संबोधनसूचक चिह्न कहा जाता है अर्थात् केवल सात विभक्ति और १ संबोधन इस भांति आठों कारक होगये ।

२०८ जबतक इन विभक्तियोंमेंसे कोई किसी संज्ञाके साथ न आवे तबतक वह निरर्थक हैं ।

२०९ विभक्तिके संयोगसे शब्दके रूपमें बहुधा विकार हो जाता है ।

२१० संबोधनके बहुवचनमें अनुनासिक अनुस्वार नहीं लगता केवल रूप बदल जाता है । जैसे " हे साधुओ ।"

संज्ञाकी रूपावली अर्थात् कारकरचना ।

२११ किसी संज्ञा शब्दको सातों विभक्ति युक्त स्वरूपोंमें लानेका नाम रूपावली वा कारकरचना है ।

२१२ जब किसी संज्ञा शब्दको विभक्तियुक्त रूपमें लानेके लिये कोई प्रत्यय लगाया जाय और वह किसी अक्षरको उठाकर वहाँ लिखाजाय तो उसको आदेश कहते हैं कहा है 'शत्रुवदादेशः ।'

२१३ परन्तु जब प्रत्यय मूल शब्दमें कोई विकार नहीं उत्पन्न करता अर्थात् मित्रके समान उसकी बराबरमें बैठ जाता है तो उसको आगम बोलते हैं । कहा है 'मित्रवदागमः ।

२१४ भाषामें ह्रस्व अकारान्त शब्दोंके प्रायः हलन्तके समान रूप होते हैं ।

२१५ किसी २ ने संज्ञा पदोंको चार भागोंमें बाँट दिया है और प्रत्येक भाग एक एकसे विकारका सूचक है परन्तु विद्यार्थियोंके सुभीतेके लिये यहाँ क्रमानुसार सब रूप दिखाये गये हैं और प्रत्येकका नियम उसीके साथमें है ।

हलन्त वा अकारान्त पुँल्लिंग राम शब्द ।

२१६ एकवचन और कर्त्ताके बहुवचनमें कुछ विकार नहीं होता और शेष कारकोंके बहुवचनमें 'ओं' और सम्बोधनमें 'ओ' करते हैं ।

सूचना—यह स्मरण रहे कि सब शब्दोंकी रूपावलीमें जहाँ कर्त्ताका चिह्न "ने" आवे वहाँ कर्म आदिकासा रूप

बनाकर विभक्ति जोडते हैं और कर्मके चिह्नका लोप हो तो कर्मका रूप कर्त्ताकासा होता है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	राम वा रामने	राम वा रामोंने
कर्म	रामको	रामोंको
करण	रामसे-करके	रामोंसे-करके
सम्प्रदान	रामको-के लिये-ए	रामोंको-के लिये ए
अपादान	रामसे	रामोंसे
सम्बन्ध	रामका के-की	रामोंका-के-की
अधिकरण	राममें-पै-पर	रामो मैं प-पर
सम्बोधन	हे राम अरे-ए-रे	हे रामो-अरे-ए-रे

हलन्त वा अकारान्त स्त्रीलिंग लौंग शब्द ।

२१७ एकवचनमें कुछ विकार नहीं होता और बहुवचनके कर्त्तामें 'एँ' और शेष कारकोंमें 'ओं' पर सम्बोधनमें 'ओ' करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	लौंग वा लौंगने	लौंग वा लौंगोंने
कर्म	लौंगको	लौंगोंको
करण	लौंगसे	लौंगोंसे
सम्प्रदान	लौंगको	लौंगोंको

अपादान	लौंगसे	लौंगोंसे
सम्बन्ध	लौंगका-के-की	लौंगोंका-के-की
अधिकरण	लौंगमें-पै-पर	लौंगोंमें-पै-पर
सम्बोधन	हे लौंग	हे लौंगो

आकरांत पुँल्लिग लडका शब्द ।

२१८ कर्त्ताके एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता शेष कारकोंके एक वचन और कर्त्ताके बहुवचनमें ' आ ' को ' ए ' आदेश करते हैं शेष कारकोंके बहुवचनमें ' ओं ' पर सम्बोधनमें ' ओ ' आदेश करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	लडका वा लडकेने	लडके वा लडकोंने
कर्म	लडकेको	लडकोंको
करण	लडकेसे	लडकोंसे
सम्प्रदान	लडकेको	लडकोंको
अपादान	लडकेसे	लडकोंसे
सम्बन्ध	लडकेका-के-की	लडकोंका-के-की
अधिकरण	लडकेमें पै-पर	लडकोंमें पै-पर
सम्बोधन	हे लडके	हे लडको

आकारान्त स्त्रीलिंग गैय्या शब्द ।

२१९ एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता। कर्त्ताके बहुवचनमें पिछला 'आ' सानुनासिक विकल्पसे होता है और शेष कारकोंके बहु वचनमें 'ओं' तथा सम्बोधननें 'ओ' का आगम करते हैं।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	गैय्या वा गैय्याने	गैय्या (गैय्याँ) वा गैय्याओंने
कर्म	गैय्याको	गैय्याओंको
करण	गैय्यासे	गैय्याओंसे
सम्प्रदान	गैय्याको	गैय्याओंको
अपादान	गैय्यासे	गैय्याओंसे
सम्बन्ध	गैय्याका-के-की	गैय्याओंका-के-की
अधिकरण	गैय्यामें-पै-पर	गैय्याओंमें-पै-पर
सम्बोधन	हे गैय्या	हे गैय्याओ

२२० संस्कृतके शब्द जो भाषामें आजाते हैं चाहे पुँल्लिंग हों वा स्त्रीलिंग उनके एक वचन और कर्त्ताके बहु वचनमें कुछ विकार नहीं होता। परन्तु शेष कारकोंके बहु वचनमें 'ओं' और सम्बोधनमें 'ओ' का आगम करते हैं।

आकारांत पुँल्लिंग दाता शब्द ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	दाता वा दाताने	दाता वा दाताओंने
कर्म	दाताको	दाताओंको
करण	दातासे	दाताओंसे
सम्प्रदान	दाताको	दाताओंको
अपादान	दातासे	दाताओंसे
सम्बन्ध	दाताका-के-की	दाताओंका-के-की
अधिकरण	दातामें-पै-पर	दाताओंमें-पै-पर
सम्बोधन	हे दाता	हे दाताओ

आकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाशब्द ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	संज्ञा वा संज्ञाने	संज्ञा वा संज्ञाओंने
कर्म	संज्ञाको	संज्ञाओंको
करण	संज्ञासे	संज्ञाओंसे
सम्प्रदान	संज्ञाको	संज्ञाओंको
अपादास	संज्ञासे	संज्ञाओंसे
सम्बन्ध	संज्ञाका-के-की	संज्ञाओंका-के-की
अधिकरण	संज्ञामें पै-पर	संज्ञाओंमें पै-पर
सम्बोधन	हे संज्ञा	हे संज्ञाओ

इकरांत पुंल्लिंग हरि शब्द ।

२२१ एक वचन और कर्त्ताके बहुवचनमें कुछ विकार नहीं होता; परन्तु शेष कारकोंके बहु वचनमें 'यों' और सम्बोधनमें 'यो' का आगम करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	हरि वा हरिने	हरि वा हरियोंने
कर्म्म	हरिको	हरियोंको
करण	हरिसे	हरियोंसे
संप्रदान	हरिको	हरियोंको
अपादान	हरिसे	हरियोंसे
संबंध	हरिका-के-की	हरियोंका-के-की
अधिकरण	हरिमें-पै-पर	हरियोंमें-पै-पर
संबोधन	हे हरि	हे हरियो

इकारांत स्त्रीलिंग लिपि शब्द ।

२२२ एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता; पर कर्त्ताके बहु वचनमें 'याँ' शेष कारकोंके बहु वचनमें 'यों' और संबोधनमें 'यो' का आगम करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	लिपि वा लिपिने	लिपियाँ वा लिपियोंने
कर्म्म	लिपिको	लिपियोंको

करण	लिपिसे	लिपियोंसे
संप्रदान	लिपियोंको	लिपियोंको
अपादान	लिपिसे	लिपियोंसे
संबंध	लिपिका-के-की	लिपियोंका-के-की
अधिकरण	लिपिमें-पै-पर	लिपियोंमें-पै-पर
संबोधन	हे लिपि	हे लिपियो

इकारांत पुँल्लिंग माली शब्द ।

२२३. एक वचन और कर्त्ताके बहु वचनमें कुछ विकार नहीं होता; शेष कारकोंके बहु वचनमें अन्त्य ईकारको इकार करके 'यों' और संबोधनमें 'यो' का आगम करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	माली वा मालीने	माली वा मालियोंने
कर्म्म	मालीको	मालियोंको
करण	मालीसे	मालियोंसे
संप्रदान	मालीको	मालियोंको
अपादान	मालीसे	मालियोंसे
संबंध	मालीका-के-की	मालियोंका-के-की
अधिकरण	मालीमें-पै-पर	मालियोंमें-पै-पर
संबोधन	हे माली	हे मालियो

ईकारांत स्त्रीलिंग पोथी शब्द।

२२४ एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता। बहु वचनमें ईकारको इकार करके कर्त्तामें 'या' शेष कारकोंमें 'यों' और संबोधनमें 'यो' का आगम करते हैं।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	पोथी वा पोथीने	पोथियां वा पोथियोंने
कर्म्म	पोथीको	पोथियोंको
करण	पोथीसे	पोथियोंसे
संप्रदान	पोथीको	पोथियोंको
अपादान	पोथीसे	पोथियोंसे
संबंध	पोथीका-के-की	पोथियोंका-के-की
अधिकरण	पोथीमें पै-पर	पोथियोंमें-पै-पर
संबोधन	हे पोथी	हे पोथियो

उकारांत पुँल्लिंग बटु शब्द।

२२५ एकवचन और कर्त्ताके बहु वचनमें कुछ विकार नहीं होता। शेष कारकोंके बहुवचनमें 'ओं' और संबोधनमें 'ओ' का आगम करते हैं।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	बटु वा बटुने	बटु वा बटुओंने;

	बटुको	बटुओंको
करण	बटुसे	बटुओंसे
संप्रदान	बटुको	बटुओंको
अपादान	बटुसे	बटुओंसे
संबंध	बटुका-के-की	बटुओंका-के-की
अधिकरण	बटुमें-पै-पर	बटुओंमें-पै-पर
संबोधन	हे बटु	हे बटुओ

उकारांत स्त्रीलिंग धेनु शब्द ।

२२६ उकारांत पुँल्लिंग शब्दकी तरहसे कारक रचना होती है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	धेनु वा धेनुने	धेनु वा धेनुओंने
कर्म	धेनुको	धेनुओंको
करण	धेनुसे	धेनुओंसे
संप्रदान	धेनुको	धेनुओंको
अपादान	धेनुसे	धेनुओंसे
संबंध	धेनुका-के-की	धेनुओंका-के-की
अधिकरण	धेनुमें-पै-पर	धेनुओंमें-पै-पर
संबोधन	हे धेनु	हे धेनुओ

ऊकारांत पुँल्लिंग उल्लू शब्द ।

२२७ एक वचन और कर्त्ताके बहु वचनमें कुछ विकार नहीं होता पर शेष कारकोंके बहुवचनमें अंत्य 'ऊ' को ह्रस्व करके 'ओं' और संबोधनमें 'ओ' का आगम करते हैं ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	उल्लू वा उल्लूने	उल्लू वा उल्लुओंने
कर्म	उल्लूको	उल्लुओंको
करण	उल्लूसे	उल्लुओंसे
संप्रदान	उल्लूको	उल्लुओंको
अपादान	उल्लूसे	उल्लुओंसे
संबंध	उल्लूका-के-की	उल्लुओंका-के-की
अधिकरण	उल्लूमें पै-पर	उल्लुओंमें-पै-पर
संबोधन	रे उल्लू	रे उल्लुओ

ऊकारांत स्त्रीलिंग झाडू शब्द ।

२२८ ऊकारांत पुँल्लिंग शब्दोंकी रीतिसे कारक रचना होती है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	झाडू वा झाडूने	झाडू वा झाडुओंने

कर्म	झाडूको	झाडुओंको
करण	झाडूसे	झाडुओंसे
संप्रदान	झाडूको	झाडुओंको
अपादान	झाडूसे	झाडुओंसे
संबंध	झाडूका-के-की	झाडूओंका-के-की
अधिकरण	झाडूमें पै-पर	झाडुओंमें पै-पर
संबोधन	हे झाडू	हे झाडुओ

एकारांत पुँल्लिंग चौबे शब्द ।

२२९ उकारांत पुँल्लिंगकी रीतिसे कारक रचना होती है पर किसी २ आचार्यके मतसे इसके 'ए' के स्थानमें 'औं' और 'ओ' आदेशभी होते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	चौबे वा चौबेने	चौबे वा चौबोंने वा चौबेओंने
कर्म	चौबेको	चौबोंको वा चौबेओंको
करण	चौबेसे	चौबोंसे वा चौबेओंसे
संप्रदान	चौबेको	चौबोंको वा चौबेओंको
अपादान	चौबेसे	चौबोंसे वा चौबेओंसे
संबंध	चौबेका-के-की	चौबोंका वा चौबेओं-का-के-की

अधिकरण	चौबेमें पै-पर	चौबोंमें वा चौबेओं-में-पै-पर
संबोधन	हे चौबे	हे चौबो चौबेओ

ओकारांत स्त्रीलिंग कट्टो शब्द ।

२३० उकारांत पुँल्लिंग शब्दकी तरहसे कारक रचना होती है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	कट्टो वा कट्टोने	कट्टो वा कट्टोओंने
कर्म	कट्टोको	कट्टोओंको
करण	कट्टोसे	कट्टोओंसे
संप्रदान	कट्टोको	कट्टोओंको
अपादान	कट्टोसे	कट्टोओंसे
संबंध	कट्टोका-के-की	कट्टोओंका-के-की
अधिकरण	कट्टोमें-पै-पर	कट्टोओंमें-पै-पर
संबोधन	हे कट्टो	हे कट्टोओ

ओकारांत स्त्रीलिंग सरसों शब्द ।

२३१ ओंकारांत स्त्रीलिंग शब्दकी भी कारक रचना इसी रीतिसे जानो ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	सरसों वा सरसोंने	सरसों वा सरसोंओंने
कर्म	सरसोंको	सरसोंओंको
करण	सरसोंसे	सरसोंओंसे
संप्रदान	सरसोंको	सरसोंओंको
अपादान	सरसोंसे	सरसोंओंसे
सम्बन्ध	सरसोंका-के-की	सरसोंओंका-के-की
अधिकरण	सरसोंमें-पै-पर	सरसोंओंमें-पै-पर
सम्बोधन	हे सरसों	हे सरसोंओ

औकारान्त स्त्रीलिंग गौ शब्द ।

२३२ उकारान्त पुँल्लिंग शब्दकी रीतिसे कारक रचना होती है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	गौ वा गौने	गौ वा गौओंने
कर्म्म	गौको	गौओंको
करण	गौसे	गौओंसे
संप्रदान	गौको	गौओंको
अपादान	गौसे	गौओंसे
संबंध	गौका-के-की	गौओंका-के-की

अधिकरण	गौमें-पै-पर	गौ ओंमें-पै-पर
सम्बोधन	हे गौ	हे गौओ-

षष्ठ अध्याय ।

सर्वनामकी रूपावली ।

२३३ यह स्मरण रखने योग्य है कि सर्वनाम कारकमें संबोधन अवस्था कभी नहीं होती ।

२३४ संबंध कारककी विभक्ति ' का ' के ' की ' के स्थानमें उत्तम और मध्यम पुरुषोंमें ' रा ' रे ' री ' आता है निजवाचक अथवा आदरसूचक आप सर्वनाममें 'का' के ' की ' के स्थानमें ' ना, ने नी, आता है ।

पुरुषवाची सर्व्वनाम ।

उत्तम पुरुष ।

२३५ उत्तम पुरुष कर्त्ताके एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता पर शेष कारकोंके एक वचनमें ' मैं ' को ' मुझे आदेश करते हैं पर एक २ रूप संप्रदान और संबंधमें ' मे ' किया जाता है और बहु वचनमें ' मैं ' को ' हम ' सब स्थानोंमें आदेश करते हैं परन्तु एक २ रूप संप्रदान और संबंधमें

'मैं' को 'हमा' कर देते हैं। एक वचनमें 'ने' के साथही 'मैं' ही रहता है। कर्म्म और संप्रदानके एक वचनमें 'मुझे' और बहु वचनमें 'हमें' भी होता है।

मैं शब्द।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	मैं वा मैंने	हम वा हमने
कर्म्म	मुझको वा मुझे	हमको वा हमें
करण	मुझसे	हमसे वा हमोंसे
संप्रदान	मुझको, मुझे वा मेरे लिये	हमको, हमें वा हमोंको हमारे लिये
अपादान	मुझसे	हमसे वा हमोंसे
संबंध	मेरा-रे-री	हमारा-रे-री
अधिकरण	मुझमें-पै-पर	हममें वा हमोंमें पै-पर

२३६ हम शब्दके पीछे 'लोग' वा 'सब' शब्दके जोड़ देनेसे भी बहु वचन होता है। जैसे हम सब जाते हैं।

मध्यम पुरुष।

२३७ कर्त्ताके एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता, पर 'ने' के योगमें 'तू' को 'तैं' भी कर देते हैं। शेष कारकोंके एक वचनमें 'तू' को 'तुझ' आदेश करदेते हैं, परन्तु एक २ रूप संप्रदान और संबंधमें 'ते' किया जाता है और बहु

वचनमें ' तू ' को ' तुम ' सब अवस्थाओंमें आदेश करते हैं सिवाय एक २ रूप संप्रदान और संबंधके, जिनमें कि ' तू ' को ' तुम्हा ' करदेते हैं । कर्म और संप्रदानके एक वचनमें ' तुझे ' और बहु वचमें ' तुम्हें ' भी होता है ।

तू शब्द ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	तू वा तूने वा तैंने	तुम वा तुमने
कर्म्म	तुझको, तुझे	तुमको वा तुम्हें
करण	तुझसे	तुमसे
संप्रदान	तुझको, तुझे तेरे लिये	तुमको, तुम्हें, तुम्हारे लिये
अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरा-रे-री	तुम्हारा-रे-री
अधिकरण	तुझमें-पै-पर	तुममें-पै-पर

अन्य पुरुष ।

२३८ कर्त्ताके एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता । शेष कारकोंके एक वचनमें ' वह ' को ' उस ' आदेश करते हैं कर्त्ताके बहु वचनमें ' वह ' को ' वे ' और शेष कारकोंके बहु वचनमें ' उन ' या ' उन्हें ' आदेश करते हैं । कर्म और संप्रदानके एकवचनमें ' उसे ' और बहु वचनमें ' उन्हें ' भी होता है ।

वह शब्द ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	वह वा उसने	वे वा उनने वा उन्होंने
कर्म	उसको, उसे	उनको वा उन्होंको वा उन्हें
करण	उससे	उनसे वा उन्होंसे
संप्रदान	उसको, उसे	उनको वा उन्होंको वा उन्हें
अपादान	उससे	उनसे वा उन्होंसे
सम्बन्ध	उसका-के-की	उनका वा उन्होंका-के-की
अधिकरण	उसमें-पै-पर	उनमें वा उन्होंमें-पै-पर

आदरसूचक आप शब्द ।

२३९ एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता । पर बहु वचनमें लोग शब्दका आगम करके हलन्त पुँल्लिंगके समान रचना करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	आप वा आपने	आप लोग वा आप लोगोंने
कर्म	आपको	आप लोगोंको

करण	आपसे	आप लोगोंसे
संप्रदान	आपको	आप लोगोंको
अपादान	आपसे	आप लोगोंसे
सम्बन्ध	आपका-के-की	आप लोगोंका-के-की
अधिकरण	आपमें-पै-पर	आप लोगोंमें-पै-पर

निश्चयवाचक ।

२४० निकटवर्तीके एक वचनके कर्त्तामें कुछ विकार नहीं होता । शेष कारकोंके एक वचनमें ' यह ' को ' इस ' आदेश करदेते हैं । कर्त्ताके बहु वचनमें 'यह ' को ' ये' और शेषोंके बहु वचनमें ' इन ' वा ' इन्हों ' आदेश होता है । दूर-वर्त्तीकी कारकरचना अन्य पुरुष सर्वनामके सदृश है ।

निकटवर्त्ती यह शब्द ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	यह वा इसने	ये वा इनने वा इन्होंने
कर्म	इसको वा इसे	इनको वा इन्होंको वा इन्हें
करण	इससे	इनसे वा इन्होंसे
संप्रदान	इसको वा इसे वा इसके लिये	इनको वा इन्होंको, इन्हें वा इनके लिये
अपादान	इससे	इनसे वा इन्होंसे

सम्बन्ध	इसका-के-की	इनका वा इन्होंका-के-की
अधिकरण	इसमें-पै-पर	इनमें वा इन्होंमें-पै-पर

दूरवर्त्ती वह शब्द ।

२४१ इसके उदाहरण वह शब्द अन्य पुरुषके समान हैं।

अनिश्चयवाचक कोई शब्द ।

२४२ कर्त्ताके एक वचनमें कुछ विकार नहीं होता पर शेष कारकोंमें 'कोई' को 'किसी' आदेश करते हैं। इसमें बहु वचन नहीं होता जो आवश्यकता हो तो दो बार इसीको बोलते हैं।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	कोई वा किसीने	कोई २ वा किसी २ ने
कर्म	किसीको	किसी २ को
करण	किसीसे	किसी २ से
संप्रदान	किसीको वा किसीके लिये	किसी २ को वा किसी २ के लिये
अपादान	किसीसे	किसी २ से
सम्बन्ध	किसीका-के-की	किसी २ का-के-की
अधिकरण	किसीमें-पै-पर	किसी २ में-पै-पर

प्रश्नवाचक ।

कौन शब्द ।

२४३ कर्त्ताके दोनों वचनोंमें कुछ विकार नहीं होता शेष कारकोंके एक वचनमें 'कौन' को 'किस' और बहुवचनमें 'किन' वा 'किन्हों' आदेश करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	कौन वा किसने	कौन वा किनने
कर्म	किसको वा किसे	किनको वा किन्हें
करण	किससे	किनसे वा किन्होंसे
संप्रदान	किसको वा किसे	किनको वा किन्होंको किन्हें
अपादान	किससे	किनसे वा किन्होंसे
सम्बन्ध	किसका-के-की	किनका वा किन्होंका-के-की
अधिकरण	किसमें-पै-पर	किनमें वा किन्होंमें-पै-पर

सम्बन्धवाचक जो वा जौन शब्द ।

२४४ कर्त्तामें कुछ विकार नहीं होता पर शेष करकोंके एक वचनमें 'जो' को 'जिस' और बहुवचनमें 'जिन' व 'जिन्हों' आदेश होता है ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
क.	जो वा जिसने	जो वा जिनने वा जिन्होंने

कर्म	जिसको वा जिसे	जिनको जिन्होंको, जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे वा जिन्होंसे
संप्रदान	जिसको वा जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
अपादान	जिससे	जिनसे वा जिन्होंसे
सम्बन्ध	जिसका-के-की	जिनका वा जिन्होंका-के-की
अधिकरण	जिसमें-पै-पर	जिनमें वा जिन्होंमें-पै-पर

जो वा जौनका सम्बन्धी सो वा तौन शब्द ।

२४९ कर्त्तामें कुछ विकार नहीं होता । पर शेष कारकोंके एक वचनमें 'सो' को 'तिस' और बहुवचनमें 'तिन' वा 'तिन्हों' आदेश करते हैं ।

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	सो वा तिसने	सो वा तिनने वा तिन्होंने
कर्म	तिसको वा तिसे	तिनको वा तिन्हें
करण	तिससे	तिनसे वा तिन्होंसे
संप्रदान	तिसको वा तिसे	तिनको वा तिन्हें, तिन्होंको
अपादान	तिससे	तिनसे वा तिन्होंसे
सम्बन्ध	तिसका-के-की	तिनका वा तिन्होंका-के-की
अधिकरण	तिसमें-पै-पर	तिनमें वा तिन्होंमें-पै-पर

'सो' के रूपोंके स्थानमें कभी २ 'वह' के रूप भी आ जाते हैं ।

निजवाचक आप शब्द ।

२४६ कर्त्तामें कुछ विकार नहीं होता । शेष कारकोंमें 'आप' को अपना आदेश कर अकारांत पुँल्लिंगकी रीति पर रचना करते हैं । इसके एक वचनके रूपही बहु वचनमें काम आते हैं ।

कारक	एक वचन वा बहु वचन
कर्त्ता	आप
कर्म	अपनेको
करण	अपनेसे
संप्रदान	अपनेको
अपादान	अपनेसे
संबंध	अपना ने नी
अधिकरण	अपनेमें-पै-पर

२४७ 'कुछ' और 'क्या' यह दोनों अव्यय हैं और इनकी कारकरचना नहीं होती है । विशेष कर 'कुछ' किसी न किसी संज्ञाके पहले आता है और गुणवाचकका काम करता है । जैसे कुछ पानी, कुछ आदमी । जब कुछ अकेला आवेगा तो प्रायः 'क्या' का काम देता है जैसे 'कुछका कुछ' अर्थात् 'क्या का क्या'

२४८ 'कोई' 'कौन' और 'क्या' शब्द बहुधा विशेषणके रूपमें किसी न किसी संज्ञाके पहले आते हैं परन्तु जब अकेले आते हैं तो 'कोई' और 'कौन' तो प्राणवाची मनुष्यका बोधक होता है और 'क्या' निर्जीववाचकको बताता है। जैसे 'कोई कपडा होता' 'कौन चीज है' 'क्या वस्तु है'। संज्ञासे पहले आनेके उदाहरण हैं परन्तु जैसे 'कोई है' 'कौन था, 'क्या हो' आदिमें 'कोई' और 'कौन' तो प्राण-वाची हैं और 'क्या' निर्जीववाचक वस्तु वा बातका बोधक है।

२४९ 'इस' 'उस' 'किस' 'जिस' और 'तिस' सर्व-नामोंके 'स' को 'तना' आदेश करनेसे ये प्रमाणवाचक सर्वनाम बन जाते हैं। जैसे इतना, उतना, कितना, जितना और तितना।

२५० इन्हीं ऊपरके नियममें कहे गये सर्व नामोंमें यदि 'स' के स्थानमें 'सा' वा 'सी' आदेश कर दिया जाय तो वह उपमावाचक सर्वनाम होजायेंगे। जैसे इस+सा = ऐसा उस+सा = वैसा, किस+सा = कैसा, जिस+सा = जैसा और तिस+सा = तैसा।

२५१ कभी २ एक, दो, दोनों, सब, अन्य, कई और के आदिभी सर्व्वनामकी भाँति काममें आते हैं।

सप्तम अध्याय ।



अन्वय ।

२५२ संस्कृतमें अन्वयसे पदच्छेदका तात्पर्य जाना जाता है परन्तु भाषाव्याकरणमें शब्दकी अवस्थाको यथावत् बता देनेका नाम अन्वय है ।

२५३ शब्दनिरूपणमें संज्ञाके नियम लिखे जाचुके अब संज्ञापदोंका विद्यार्थियोंको यथार्थ बोध होजाय इस लिये संज्ञाके अन्वय भी यहीं दिखाते हैं ।

२५४ संज्ञाके नियमोंको विचार कर संज्ञाके अन्वय इस प्रकार होसकते हैं ।

संज्ञा–१ संज्ञा, २ भेद, ३ प्रभेद (यदि हो तो), ४ पुरुष ५ लिंग, ६ वचन ७ कारक, ८ क्रिया वा और शब्दके साथ संबंध *

यथा ।

२५५ (मोहन) (छोटी) (पोथी) को पढ़ताथा. (वह) (गुणवान्) (लडका) है इस वाक्यमें केवल संज्ञाओंके अन्वय लिखे जाते हैं ।

---

* क्रियाके साथ कर्त्ता और कर्मका संबंध अवश्य जताना चाहिये शेषमें यदि प्रश्न किया गया हो तो ।

मोहन—रूढि, संज्ञा, व्यक्तिवाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता (पढता था) क्रियाका ।

छोटी—रूढि, संज्ञा, गुणवाचक (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य (पोथी) के समान ।

पोथी—रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्यपुरुष, स्त्रीलिंग, एक वचन, कर्म (पढता था) क्रियाका ।

वह—रूढि, संज्ञा, सर्वनाम, गुणवाची, निश्चयवाचक दूरवर्त्ती (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्यरूपी निर्दिष्ट (लडका) के समान ।

गुणवान् } यौगिक संज्ञा, गुणवाचक, (पुरुष, लिंग,
गुण+वान् } वचन और कारक) में अपने विशेष्य (लडका) के समान ।

लडका—रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्यपुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन, कर्त्ता (है) क्रियाका ।

२५६ (वह) (लडका) (जो) (पाठशाला) को जाता था (बडा) (परिश्रमी) है ।

वह—रूढि, संज्ञा सर्वनाम, गुणवाची, निश्चय वाचक

दूरवर्त्ती (पुरुष, लिंग, वचन कारक) में अपने विशेष्यरूपी निर्दिष्ट (लडका) के समान ।

लडका—रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्यपुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन, कर्त्ता (है) क्रियाका ।

जो—रूढि, संज्ञा, सर्वनाम, गुणवाची संबंधवाचक (पुरुष, लिंग और वचन) में अपने संबंधी निर्दिष्ट (लडका) के समान कर्त्ता (जाता था) क्रियाका ।

पाठशाला—(पाठ+शाला) यौगिक संज्ञा, जातिवाचक, अन्य पुरुष स्त्रीलिंग, एक वचन, अधिकरण ।

बडा—रूढि, संज्ञा, गुणवाचक (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य (परिश्रमी) के समान है जो कि आप भी विशेषणभावमें है ।

परिश्रमी—(परि+श्रमी) यौगिक संज्ञा, गुणवाचक (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने पूर्वोक्त विशेष्य (लडका) के समान ।

अष्टम अध्याय ।

क्रिया ।

२५७ क्रियापद उस शब्दका नाम है जिससे करना वा होना पाया जाता है और इसका संबंध काल पुरुष और वचनसे होता है । जैसे 'वह करता है' इस वाक्यमें 'करता है' क्रिया है और वर्त्तमान कालकी बोधक है यह पुँल्लिंग और एक वचन है ।

२५८ क्रियाका साधारण रूप किसी धातुमें ना लगानेसे बन जाता है । जैसे उठ+ना = उठना, बैठ+ना = बैठना इसी साधारण रूपका नाम क्रियार्थक संज्ञा है ।

२५९ धातु क्रियाके मूलका नाम है । धातुके अर्थ बीजके हैं जैसे बीज सब स्थानोंमें एकसा रहता है उसी भाँति क्रियाकी धातु सब स्वरूपोंमें अपने स्वरूपको नहीं छोडती । जैसे लिख धातुके अनेक स्वरूप लिखता था, लिखेगा, लिख चुका, लिखा करते थे आदि सबमें मूल लिख पाया जाताहै ।

२६० केवल मात्र धातुसे किसी व्यापारका ज्ञान होता है । जैसे लिख ।

२६१ क्रियाके दो भेद हैं अर्थात् अकर्मक और सकर्मक ।

२६२ अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जो अपने कर्त्ता परही समाप्त होजाती है अर्थात् जिसके फल और व्यापार दोनों कर्त्तामें घटते हैं और जिसके साथ कर्मकी आवश्यकता नहीं होती । जैसे 'लडका सोता है' इस वाक्यमें लडका कर्ता है और सोना क्रियाका व्यापार उसहीपर समाप्त हो गया कर्मकी आवश्यकताही नहीं है ।

२६३ अकर्मक क्रियाके दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान दूसरा भावप्रधान ।

२६४ जिस क्रियाका कर्त्ता पहली विभक्तिमें हो और क्रियाका पुरुष लिंग और वचन कर्त्ताके समान हो उसको कर्तृप्रधान क्रिया कहते हैं । जैसे वह सोता है ।

२६५ भावप्रधान क्रिया अन्य पुरुष पुँल्लिंग एक वचनमें आती है । जैसे सोया नहीं जाता है । बहुधा 'नहीं' शब्दको ही भावप्रधान सूचक बताते हैं ।

२६६ सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जो केवल अपने कर्त्ता पर समाप्त न हो और जिसमें कर्मकी आवश्यकता रहे जैसे लडका पोथीको पढता है इस वाक्यमें पोथी कर्म्म है यदि वाक्यमेंसे पोथी शब्दको निकाल लियाजाय तो

लडका पढता है, ऐसा पद रह गया इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि लडका क्या पढता है इस कारण पढना क्रिया सकर्मक है ।

२६७ सकर्मक क्रियाके भी दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान दूसरा कर्मप्रधान ।

२६८ कर्तृप्रधानको तो अकर्मकके कर्तृप्रधानके समान मानना चाहिये अर्थात जब पुरुष लिंग और वचनमें क्रिया पहली विभक्तिके कर्त्ताके समान हो । जैसे लडकी कपडा सीती है ।

२६९ कर्मप्रधान उसको कहते हैं जिस क्रियाका पुरुष लिंग वचन कर्मके अनुसार हो और कर्मही पहली विभक्तिमें उसके साथ आया हो । जैसे 'कपडा सीया जाता है' 'वह मारा गया' इन वाक्योंमें कपडा और वह शब्द कर्म हैं और सीना और मारना क्रियाके पुरुष लिंग वचन कपडा और वहके पुरुष, लिंग, वचनके अनुसार हैं ।

२७० जब कर्मप्रधान वाक्यमें कर्त्ताको स्पष्ट लिखनेकी आवश्यकता होती है तो वह पहली विभक्तिके रूपसे नहीं आता वरन तीसरी विभक्ति अर्थात् करणके रूपमें आता है । जैसे कपडा लडकीसे सीया जाताहै ।

२७१ ऊपरके इन नियमोंसे यह बात सिद्ध हुई कि जब कर्तामें प्रत्यय होगा तो उसको कर्त्तृप्रधान कहेंगे जब कर्ममें प्रत्यय होगा उसको कर्मप्रधान कहेंगे और जब भावमें प्रत्यय होगा तो उसको भावप्रधान कहेंगे ।

२७२ भावप्रधान और कर्मप्रधानके रूप क्रमसे अकर्मक और सकर्मक क्रियाओंके सामान्य भूतके अन्तमें जाना क्रियाके जो जोडनेसे बनते हैं । इनका कर्त्ता सदा तीसरी विभक्तिके साथ रहता है । जैसेः—

अकर्मक ।

कर्त्तृप्रधान	भावप्रधान
वह नहीं सोता ।	उससे नहीं सोया जाता

सकर्मक ।

कर्त्तृप्रधान	भावप्रधान
लडकेने पोथी पढी ।	पोथी लडकेसे पढी गयी ।

काल ।

२७३ कह आये हैं कि पुरुष, लिंग और वचनमें बहुधा क्रिया अपने कर्त्ताके समान होती है कभी कर्मके समान ।

२७४ जैसे संज्ञापदोंमें कारक अवस्थाका बोधक है उसी भाँति क्रियापदमें काल अवस्थाका बोधक है ।

२७५ इससे यह न समझ लेना चाहिये कि कर्त्ता और कर्मका कालसे कुछ संबंध होता है।

२८६ कालका अर्थ समयका है। क्रियाका काल यह प्रकाश करता है कि क्रियाका व्यापार किस समयमें किया गया या हुआ।

२७७ क्रियाके चिह्नोंको प्रत्यय कहते हैं और वे धातु वा किसी क्रियाके अन्तमें पुरुष, लिंग और वचनके अनुसार जोडे जाते हैं।

२७८ काल अर्थात् समय स्वाभाविक रीतिपर तीन अवस्थाओंमें बटरहा है अर्थात् भूत, वर्त्तमान और भविष्यत्।

२७९ भूतकाल उस कालका नाम है, जो बीत चुका हो अर्थात् जिससे यह प्रकाश होता है कि व्यापारका कर्म आरंभ हुआ था और उसकी समाप्ति होगई। जैसे देवदत्त पढा। यहाँ देवदत्तके पढनेका काम हो चुका।

२८० वर्त्तमान काल जो अवस्था बीतरही है उसका बोधक है अर्थात् क्रियाके व्यापारका आरंभ होचुका है परन्तु समाप्ति नहीं हुई। जैसे देवदत्त पढता है। यहाँ देवदत्तके पढनेका काम आरंभ तो होगया परन्तु समाप्ति नहीं हुई है।

२८१ जो आवेगा उसे भविष्यत् काल कहते हैं अर्थात् क्रियाका व्यापार वहाँ प्रारंभ नहीं हुआ वरन होगा। जैसे

देवदत्त पढेगा। यहाँ देवदत्तके पढनेका काम आरंभ होगा।

२८२ भूतकालकी क्रियाकी छः भिन्न अवस्था होती हैं। १ सामान्य भूत, २ आसन्न भूत, ३ पूर्ण भूत, ४ संदिग्ध भूत, ५ हेतुहेतुमद्भूत और ६ अपूर्ण भूत।

२८३ सामान्य भूतकालकी क्रिया उसे कहते हैं जिससे क्रियाकी समाप्ति तो ज्ञात होती है परन्तु कालकी विशेषता भास नहीं होती। धातुमें 'आ' अथवा 'या' प्रत्ययके लगानेसे सामान्य भूतकालका रूप बन जाता है। जैसे देख+आ = देखा, खा+या = खाया।

२८४ जिस भूतकालिक क्रियासे इस बातका बोध होता है कि क्रियाका व्यवहार अभी समाप्त हुआ है उसको आसन्न भूत कहते हैं। इसका प्रत्यय 'है' है। जब सामान्य भूतके स्वरूपमें 'है' लगादिया जाता है तो वह आसन्न भूतका रूप होजाता है। जैसे खाया+है = खाया है इस रूपसे खानेके व्यापारकी निकटता प्रकाशित होती है कि अभी खाया है।

२८५ जिस भूतकालिक क्रियासे यह बात जानी जाय कि क्रियाके व्यापारकी समाप्ति अधिक काल हुआ जब होचुकी उसको पूर्ण भूत कहते हैं इसका प्रत्यय 'था' है।

जब सामान्य भूतके स्वरूपमें ' था लगादिया जाता है तो वह पूर्ण भूतका रूप होजाता है जैसे खाया+था = खाया था । इस रूपसे खानेके व्यापारकी दूरता प्रकाशित होती है कि देर हुई जब खाया है ।

२८६ संधिग्ध भूत कालकी क्रिया उसे कहते हैं जिसमें सन्देहका भाव हो । इसका प्रत्यय ' होगा ' है । जब सामान्य भूतके स्वरूपमें ' होगा ' लगादिया जाता है तो वह संदिग्ध भूतका रूप बन जाता है । जैसे खाया+होगा = खाया होगा । इसमें सन्देह होता है कि खानेका व्यापार हुआ कि नहीं ।

२८७ हेतुहेतुमद्भूत कालकी क्रियाके भूतकालमें कार्य और कारणका फल रहता है । इसका प्रत्यय ' ता ' है । जब धातुके पीछे ' ता ' लगादिया जाता है तो हेतुहेतुमद्भूतका रूप बन जाता है । जैसे देखता, खाता ।

२८८ पुरानी हिन्दीमें तो हेतुहेतुमद्भूतकाल केवल भूतकालहीका बोधक था, परन्तु अब नई शैलीके व्यवहारमें यह एक ही रूपसे भूत वर्तमान और भविष्यत् तीनों कालमें काम आता है । जैसे भूतकाल, वह कल ' खाता ' तो अच्छा था । वर्तमान काल, तू अभी ' खाता ' तो अच्छा था । भवि-

व्यत् काल वह परसों 'खाता' तो अच्छा होता ।

२८९ जो क्रिया भूत कालका बोध तो करती है परन्तु उसका पूरा होना नहीं भासता उसको अपूर्णभूतकालिक क्रिया कहते हैं । इसका प्रत्यय 'था' है । हेतुहेतुमद्भूतके स्वरूपके पीछे 'था' लगादिया जाता है तो वह अपूर्ण भूतका रूप हो जाता है । जैसे खाता+था = खाता था । यहां यह निश्चय नहीं होता कि खानेका व्यापार समाप्त हुआ था या नहीं ।

२९० वर्तमान कालकी क्रियाकी दो अवस्था होती हैं एक सामान्य वर्त्तमान दूसरी संदिग्ध वर्त्तमान ।

२९१ सामान्य वर्त्तमान कालकी क्रिया इस बातको प्रकाश करती है क्रियाका व्यापार अभी हो रहा है । इसका प्रत्यय 'है' है । हेतुहेतुमद्भूतके स्वरूपमें 'है' जोड देनेसे सामान्य वर्त्तमानका रूप बन जाता है । जैसे खाता + है = खाता है यहाँ स्पष्ट है कि क्रियाका व्यापार हो रहा है ।

२९२ संदिग्ध वर्त्तमान कालकी क्रिया वर्त्तमान कालके व्यापारको तो जताती है परन्तु उसमें संदेह झलका करता है । इसका प्रत्यय 'होगा' है । हेतुहेतुमद्भूतके स्वरूपमें 'होगा' जोड देनेसे संदिग्ध वर्त्तमान कालकी क्रिया बन

जाती है । जैसे खाता + होगा = खाता होगा । यहाँ क्रियाका व्यापार हो तो रहा है परन्तु संदेह झलकता है ।

२९३ भविष्यत् कालिका· क्रियाकी भी दो अवस्था होती हैं अर्थात् सामान्य भविष्यत् और संभाव्य भविष्यत् ।

२९४ सामान्य भविष्यत् कालकी क्रिया इस बातको प्रकाशित करती है कि क्रियाका व्यापार अभी आरंभ नहीं हुआ । इसका प्रत्यय ' गा ' है । संभावनाके स्वरूपमें 'गा' जोड देनेसे सामान्य भविष्यत् कालकी क्रिया बन जाती है । जैसे खाए+गा = खाएगा । यहां क्रियाका व्यापार खाना अभी आरंभ नहीं हुआ ।

२९५ संभाव्य भविष्यत् कालकी क्रियासे भविष्यत् काल अथवा वर्त्तमान काल दोनोंका बोध होता है और इसमें किसी बातकी चाहना पाई जाती है । इसके प्रत्यय ' ए ' वा ' ये ' हैं । धातुमें 'ए' वा 'ये' लगानेसे संभाव्य भविष्यत्-का रूप बन जाता है जैसे खा+ए = खाए । यहां दोनों वर्त्त-मान और भविष्यत् कालोंका बोध होता है अभी खाये या भविष्यत्में खाए । वाक्यके अर्थपर इसके कालकी स्पष्टता है । इसको संभावना भी कहते हैं ।

२९६ इन ऊपर कही हुई अवस्थाओंके अतिरिक्त

क्रियाकी दो अवस्था और भी हैं अर्थात् पूर्वकालिक क्रिया और विधि ।

२९७ पूर्वकालिक क्रिया किसी दूसरी क्रियाके साथ आती है और अपनी सहगामिनी क्रियासे पहिलेके समयको बताती है । अकेली इससे लिंग वचन और पुरुषका ज्ञान नहीं होता । इसके प्रत्यय 'के' 'कर' वा 'करके' हैं । जब धातु वा विधिकालिक क्रियाके पीछे 'के' 'कर' वा 'करके' लगादिया जाता है तो पूर्वकालिक क्रियाका रूप बनजाता है । जैसे खा+के = खाके, खा+कर = खाकर और खा+करके = खाकरके । कभी विना कोई प्रत्यय लगाये ही पूर्वकालिकका ज्ञान हो जाता है ।

२९८ विधिकालकी क्रियासे आज्ञा वा अनुज्ञाका बोध होता है प्रायः यह वर्त्तमान कालमें आती है । इसका कोई प्रत्यय नहीं है केवल धातु रूपही काममें आती है जैसे खा । परन्तु जब आदर और सन्मानके भावमें आवे तो धातुमें 'इये' लगा देते हैं जैसे खा+इये = खाइये । जब परोक्षमें हो तो 'इये' के स्थानमें 'इयो' लगाया जाता है जैसे खा+इयो = खाइयो ।

नवम अध्याय ।

क्रियाकी रूपावली ।

२९९ ऊपरके नियमोंमें यह दिखाया गया है कि किस प्रत्ययके प्रयोगसे किस कालकी क्रिया बनसक्ती है, प्रत्ययका प्रयोग धातुमें होगा वा किसी कालकी क्रियाके स्वरूपमें यह भी लिखा जा चुका है, परन्तु विद्यार्थियोंको अपनी धारणाके पुष्ट करनेके हेतु नीचेके नियमोंको फिर ध्यानपूर्वक समझना चाहिये। वाक्यका भाव क्रियाके कालपरही निर्भर है।

३०० धातु, सामान्यभूत और हेतुहेतुमद्भूत इन तीन कालकी क्रियायोंमें प्रत्ययके प्रयोगसे समस्त कालकी क्रिया बन जाती हैं।

३०१ धातुमें आ वा या लगानेसे * सामान्य भूतकालकी क्रिया बनती है 'ता, लगानेसे हेतुहेतुमद्भूत कालकी क्रिया बनती है। 'ए, वा 'ये, लगानेसे संभाव्य भविष्यत् कालकी क्रिया बनती है। 'के, 'कर, वा 'करके, लगानेसे पूर्वकालिक क्रिया बनती है। साधारण रूपमें धातु विधिकालकी क्रियाका रूप है। 'इये, लगानेसे सन्मानपूरित विधिकालकी क्रिया

बनती है । 'इयो, लगानेसे परोक्षदर्शी विधिकालिक क्रिया बनती है ।

२०२ सामान्य भूतमें 'है, लगानेसे आसन्न भूतकालकी क्रिया बनती है ।' था, लगानेसे पूर्ण भूतकालिक क्रिया बनती है । 'होगा, लगा देनेसे संदिग्ध भूतकालकी क्रिया बनती है ।

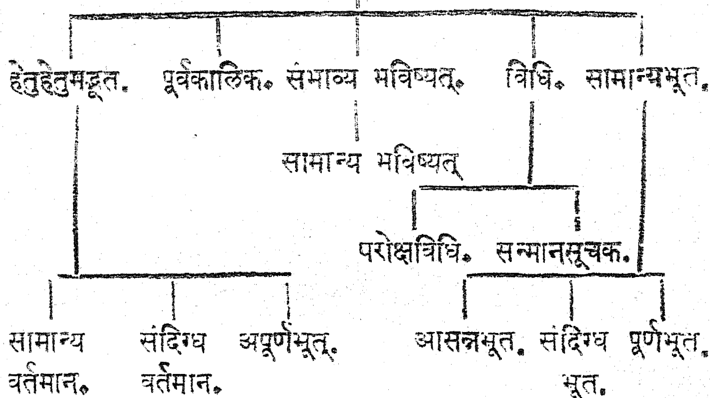
२०३ हेतुहेतुमद्भूतमें 'था, लगानेसे अपूर्ण भूतकालिक क्रिया बनजाती है । 'है' लगानेसे सामान्य वर्त्तमान कालकी क्रिया बन जाती है । 'होगा' लगादेनेसे संदिग्ध वर्त्तमान कालकी क्रिया बन जाती है ।

२०४ अब केवल सामान्य भविष्यत्‌कालकी क्रिया रहगई सो कह आये हैं कि संभाव्य भविष्यत्‌के रूपमें 'गा' के प्रयोगसे इसका रूप बनता है ।

---

* यदि धातुके अन्तमें दीर्घ 'ई' वा 'ऊ' हो तो 'आ' वा 'या' का आगम करते समय ह्रस्व 'इ' वा 'उ' होजाता है जैसे पी धातु से पिया, छू धातुसे छुआ ।

२०५ यदि वंशवृक्षके अनुसार रूपावलीका वृक्ष बनाया जाय तो वह इस प्रकार होगा ।



२०६ इस वृक्षको देखनेसे स्पष्ट होता है, कि क्रिया: भिन्न भिन्न रूपोंमें १२ प्रकारकी होसक्ती है और जिसमें भी विधिकी दो अवस्था और हैं ।

२०७ प्रत्येक कालकी क्रियाके रूप, पुरुष, लिंग और वचनके अनुसार बारह बारह होते हैं और एक धातुके समस्तरूप १२० होगये इनमें विधिकी दोनों अवस्था जोडनेसे १२२ रूप होते हैं ।

२०८ पहले प्रत्येक रूपमें जो चिह्न आते हैं उनको रूपावलीके क्रमसे लिखते हैं । इनके कंठस्थ होनेपर विद्यार्थी बड़ी सुगमतासे रूप बना सकेंगे ।

२०९	सामान्यभूतका	'आ' वा 'या' चिह्न है ।
	हेतुहेतुमद्भूतका	'ता' चिह्न है ।
	धातुका	कोई चिह्न नहीं है ।

२१० वह काल जो सामान्य भूतसे बने हैं ।

१ सामान्य भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या वा आ	ये वा ए
मध्यम पुरुष	या वा आ	ये वा ए
अन्य पुरुष	या वा आ	ये वा ए

स्वरान्तमें बहुधा 'या' आता है और व्यंजनान्तमें 'आ' ।

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी वा ई	यीं वा ईं

मध्यम पुरुष	यी वा ई	यीं वा ईं
अन्य पुरुष	यी वा ई	यीं वा ईं

स्वरान्तमें 'यी' और व्यंजनान्तमें 'ई'।

२ आसन्न भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या हूँ	ये हैं
मध्यम पुरुष	या है	ये हो
अन्य पुरुष	या है	ये हैं

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी हूँ	यी हैं
मध्यम पुरुष	यी है	यी हो
अन्य पुरुष	यी है	यी हैं

३ पूर्ण भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या था	ये थे
मध्यम पुरुष	या था	ये थे
अन्य पुरुष	या था	ये थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी थी	यी थीं
मध्यम पुरुष	यी थी	यी थीं
अन्य पुरुष	यी थी	यी थीं

४ संदिग्ध भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या होऊँगा	ये होवेंगे, होंगे
मध्यम पुरुष	या होवेगा, होगा	ये होओगे, होंगे
अन्य पुरुष	या होवेगा, होगा	ये होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी होऊंगी, हूंगी	यी होवेंगी, होंगी
मध्यम पुरुष	यी होवेगी, होगी	यी होओगी, होगी
अन्य पुरुष	यी होवेगी, होगी	यी होवेंगी, होगी

३११ वह काल जो हेतुहेतुमद्भूतसे बने हैं ।

५ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ता	ते
मध्यम पुरुष	ता	ते
अन्य पुरुष	ता	ते

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ती	तीं
मध्यम पुरुष	ती	तीं
अन्य पुरुष	ती	तीं

६ अपूर्ण भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ता था	ते थे
मध्यम पुरुष	ता था	ते थे
अन्य पुरुष	ता था	ते थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ती थी	तीं थीं

मध्यम पुरुष	तीं थीं	तीं थीं
अन्य पुरुष	ती थी	ती थीं

७ सामान्य वर्त्तमान काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ता हूँ	ते हैं
मध्यम पुरुष	ता है	ते हो
अन्य पुरुष	ता है	ते हैं

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ती हूँ	ती हैं
मध्यम पुरुष	ती है	ती है
अन्य पुरुष	ती है	ती हैं

८ संदिग्ध वर्त्तमान काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ता होऊंगा, हूंगा	ते होवेंगे, होंगे

मध्यम पुरुष	ता होवेगा, होगा	ते होओगे, होगे
अन्य पुरुष	ता होवेगा, होगा	ते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंगकर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ती होऊंगी, हूंगी	ती होवेंगी, होंगी
मध्यम पुरुष	ती होवेगी, होगी	ती होओगी, होगी
अन्य पुरुष	ती होवेगी, होगी	ती होवेंगी, होंगी

३१२ सामान्य भूत और हेतुहेतुमद्भूतके अतिरिक्त और जो काल धातुसे बनते हैं ।

९ पूर्वकालिक ।

इसके स्वतः रूप किसी कालके बोधक नहीं होते जिस कालकी क्रियाके साथ आये उसीके समान रूप जानो । इसके चिह्न ०, के, कर वा करके हैं ।

१० विधिकाल ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंगके समान रूप होते हैं ।

कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ऊँ	वें
मध्यम पुरुष	०	ओ
अन्य पुरुष	वे	वें
सन्मानमें	इये	परोक्षमें इयो

व्यंजनान्तमें 'वे' के स्थानमें 'ए' होगा ।

११ सामान्य भविष्यत् काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ऊँगा	वेंगे
मध्यम पुरुष	वेगा	ओगे
अन्य पुरुष	वेगा	वेंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ऊँगी	वेंगी
मध्यम पुरुष	वेगी	ओगी
अन्य पुरुष	वेगी	वेंगी

व्यंजनान्तमें 'वे' के स्थानमें 'ए' दोनों लिंगोंमें होगा ।

१२ संभाव्य भविष्यत् काल ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंगके समान रूप होते हैं ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	ऊँ	वें
मध्यम पुरुष	वे	ओ
अन्य पुरुष	वे	वें

व्यंजनान्तमें 'वे' के स्थानमें 'ए' होगा ।

३१३ ऊपरके स्वरूप स्वरांत और व्यंजनान्त दोनों अकर्मक क्रियाओंमें समान रहते हैं जहाँ अन्तर पडा है वहाँ प्रकाश करदिया गया है।

३१४ सकर्म्मक क्रियाके रूप कर्मकी अवस्थामें बिलकुल इसी भाँति होते हैं परन्तु कर्त्ताकी अवस्थामें आसन्नभूत और संदिग्धभूतके रूपोंमें कुछ अन्तर पडता है। जैसे—

कर्त्ता तीनों पुरुष।

आसन्नभूतकाल।

पुँल्लिंग।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या है	ये हैं
मध्यम पुरुष	या है	ये हैं
अन्य पुरुष	या है	ये हैं

स्त्रीलिंग।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी है	यी हैं
मध्यम पुरुष	यी है	यी हैं
अन्य पुरुष	यी है	यी हैं

संदिग्ध भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	या होगा	ये होंगे
मध्यम पुरुष	या होगा	ये होंगे
अन्य पुरुष	या होगा	ये होंगे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	यी होगी	यी होंगी
मध्यम पुरुष	यी होगी	यी होंगी
अन्य पुरुष	यी होगी	यी होंगी

३१५ अब कुछ धातुओंके रूप लिखते हैं जो इन्हीं रूपोंके संयोगसे बने हैं ।

३१६ स्वरांत अकर्मक क्रियाकी रूपावली नीचे लिखे रूपोंके अनुसार हुआ करती है । उनके चिह्न जो पुरुष, लिंग और वचनके कारण बदल जाते हैं । उनके रूपभी साथही लिखे हैं ।

सूचना—यद्यपि अशुद्ध है पर तोभी आजकल सभी लोग पुँल्लिंग बहु वचनकी क्रियाओंको स्त्रीलिंग बहु वचनमें काममें लाते हैं ।

सोना क्रिया ।

१ सामान्य भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—आ वा या (या, या, या, ये, ये, ये,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोया।	हम सोये
मध्यम पुरुष	तू सोया	तुम सोये
अन्य पुरुष	वह सोया	वे सोये

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—या वा आ (यीं, यी, यी, यीं, यीं, यीं, अथवा ई, ई, ईं, ईं, ईं, ईं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोयी वा सोई	हम सोयीं वा सोईं
मध्यम पुरुष	तु सोयी वा सोई	तुम सोयीं वा सोईं
अन्य पुरुष	वह सोयी वा सोई	वे सोयीं वा सोईं

२ आसन्न भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—है (हूं, है, है, हैं हो, है)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोया हूं	हम सोये हैं, वा सोए हैं
मध्यम पुरुष	तू सोया है	तुम सोये हो वा सोए हो
अन्य पुरुष	वह सोया है	वे सोये हैं वा सोए हैं

स्त्रीलिंग कर्त्ता।

चिह्न—है (हूं, है, है, हैं, हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोयी हूं, सोई हूं	हम सोयी हैं सोई हैं
मध्यम पुरुष	तू सोयी है, सोई है	तुम सोयी हो, सोई हो
अन्य पुरुष	वह सोयी है, सोई है	वे सोयी हैं, सोई हैं

२ पूर्णभूत काल।

पुँल्लिंग कर्त्ता।

चिह्न—था (था, था, था, थे, थे, थे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोया था	हम सोये थे
मध्यम पुरुष	तू सोया था	तुम सोये थे
अन्य पुरुष	वह सोया था	वे सोये थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता।

चिह्न—था (थी, थी, थी, थीं, थीं, थीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं सोयी थी, सोई थी	हम सोयी थीं, सोई थीं
म० पु०	तू सोयी थी, सोई थी	तुम सोयी थीं, सोई थीं
अ० पु०	वह सोयी थी, सोई थी	वे सोयी थीं, सोई थीं

४ संदिग्ध भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा (होऊँगा, होवेगा, होवेगा, होवेंगे, होओगे, होवेंगे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं सोया होऊँगा, हूँगा	हम सोये होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू सोया होवेगा, होगा	तुम सोये होओगे, होगे
अ० पु०	वह सोया होवेगा, होगा	वे सोये होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा (होऊँगी, होवेगी, होवेगी, होवेंगी, होओगी होवेंगी)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं सोयी होऊँगी,	हम सोयी होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू सोयी होवेगी, होगी	तुम सोयी होओगी, होगी
अ० पु०	वह सोयी होवेगी, होगी	वे सोयी होवेंगी, होंगी

८ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न-ता (ता, ता, ता, ते, ते, ते,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोता	हम सोते
मध्यम पुरुष	तू सोता	तुम सोते
अन्य पुरुष	वह सोता	वे सोते

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न-ता (ती, ती, ती, तीं, तीं, तीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोती	हम सोतीं
मध्यम पुरुष	तू सोती	तुम सोतीं
अन्य पुरुष	वह सोती	वे सोतीं

६ अपूर्ण भूतकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न-था (था, था था, थे, थे, थे,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोता था	हम सोते थे
मध्यम पुरुष	तू सोता था	तुम सोते थे
अन्य पुरुष	वह सोता था	वे सोते थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—थी (थी, थी, थी, थीं, थीं, थीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोती थी	हम सोती थीं
मध्यम पुरुष	तू सोती थी	तुम सोती थीं
अन्य पुरुष	वह सोती थी	वे सोती थीं

७ सामान्य वर्त्तमान काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—है (हूं, है, है, हैं, हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोता हूं	हम सोते हैं
मध्यम पुरुष	तु सोता है	तुम सोते हो
अन्य पुरुष	वह सोता है	वे सोते हैं

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—है (हूं, है, है, हैं, हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोती हूं	हम सोती हैं
मध्यम पुरुष	तु सोती है	तुम सोती हो
अन्य पुरुष	वह सोती है	वे सोती हैं

८ संदिग्ध वर्त्तमानकाल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न–होगा (होऊंगा, होवेगा, होवेगा, होवेंगे, होओगे, होवेंगे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं सोता होऊंगा, हूंगा	हम सोते होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू सोता होवेगा, होगा	तुम सोते होओगे, होगे
अ० पु०	वह सोता होवेगा, होगा	वे सोते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न होगा (होऊंगी, होवेगी, होवेगी, होवेंगी, होओगी होवेंगी)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं सोती होऊँगी, हूँगी	हम सोती होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू सोती होवेंगी, होगी	तुम सोती होओगी, होगी
अ० पु०	वह सोती होवेगी, होगी	वे सोती होवेंगी, होंगी

९ पूर्व कालिक ।

कह आये हैं कि अकेली पूर्वकालिक क्रियाके पुरुष लिंग वचनके अनुसार रूप नहीं होते अन्य क्रियाके रूपोंमें लगा

देते हैं इसके चिह्न–०, के, कर वा करके । सो, सोके, सोकर वा सोकरके ।

१० विधिकाल ।

इसमें स्त्रीलिंगके रूप पुँल्लिंगके समान होते हैं ।

पुल्लिंग स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न–० (ऊं, ०, वे, वें, ओ, वें)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोऊं	हम सोवें
मध्यम पुरुष	तू सो	तुम सोओ
अन्य पुरुष	वह सोवे	वे सोवें
सन्मानमें	सोइये	परोक्षमें सोइयो

११ सामान्य भविष्यत्काल ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न–गा (गा, गा, गा, गे, गे, गे,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं सोऊंगा	हम सोवेंगे
मध्यम पुरुष	तू सोवेगा	तुम सोओगे
अन्य पुरुष	वह सोवेगा	वे सोवेंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—गा (गी, गी, गी, गी, गी, गी)

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं सोऊंगी	हम सोवेंगी
मध्यम पुरुष	तू सोवेगी	तुम सोओगी
अन्य पुरुष	वह सोवेगी	वे सोवेंगी

१२ सम्भावना वा संभाव्यभविष्यत् काल ।

इसमें स्त्रीलिंगके रूप पुँल्लिंगके समान होते हैं ।

पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—ए (ऊँ, वे, वे, वें, ओ, वें)

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं सोऊँ	हम सोवें
म० पु०	तू सोवे	तुम सोओ
अ० पु०	वह सोवे	वे सोवें

३१७ व्यंजनांत अकर्मक क्रियाकी रूपावली नीचे लिखे रूपोंके अनुसार हुआ करती है, चिह्नभी उनके साथमें दिखाये गये हैं ।

बैठना क्रिया ।

१ सामान्यभूत ।

पुँल्लिंग कर्ता ।

चिह्न-आ (आ, आ, आ, ए, ए, ए,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठा	हम बैठे
मध्यम पुरुष	तू बैठा	तुम बैठे
अन्य पुरुष	वह बैठा	वे बैठे

स्त्रीलिंग कर्ता ।

चिह्न–आ (ई, ई, ई, ईं, ईं, ईं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठी	हम बैठीं
मध्यम पुरुष	तू बैठी	तुम बैठीं
अन्य पुरुष	वह बैठी	वे बैठीं

२ आसन्न भूत ।

पुँल्लिंग कर्ता ।

चिह्न–है (हूँ, है, है, हैं, हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठा हूँ	हम बैठे हैं

मध्यम पुरुष	तू बैठा है	तुम बैठे हो
अन्य पुरुष	वह बैठा है	वे बैठे हैं

स्त्रीलिंग कर्ता ।

चिह्न—है (हूं, है, है, हैं, हो हैं)

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठी हूं	हम बैठी हैं
मध्यम पुरुष	तू बैठी है	तुम बैठी हो
अन्य पुरुष	वह बैठी है	वे बैठी हैं

३ पूर्णभूत ।

पुल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—था (था, था, था, थे, थे, थे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठा था	हम बैठे थे
मध्यम पुरुष	तू बैठा था	तुम बैठे थे
अन्य पुरुष	वह बैठा था	वे बैठे थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—था (थी, थी, थी, थीं, थीं, थीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठी थी	हम बैठी थीं

मध्यम पुरुष	तू बैठी थी	तुम बैठी थीं
अन्य पुरुष	वह बैठी थी	वे बैठी थीं

४ संदिग्ध भूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा (होऊँगा, होवेगा, होवेगा, होवेंगे, होओगे, होवेंगे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं बैठा होऊंगा, हूंगा	हम बैठे होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू बैठा होवेगा, होगा	तुम बैठे होवोगे, होगे
अ० पु०	वह बैठा होवेगा, होगा	वे बैठे होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा (होऊँगी, होवेंगी, होवेगी, होवेंगी, होओगी, होवेंगी)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं बैठी होऊँगी, हूंगी	हम बैठी होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू बैठी होवेगी, होगी	तुम बैठी होओगी, होगी
अ० पु०	वह बैठी होवेगी, होगी	वे बैठी होवेंगी, होंगी

५ हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—ता (ता, ता, ता, ते, ते, ते)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठता	हम बैठते
मध्यम पुरुष	तू बैठता	तुम बैठते
अन्य पुरुष	वह बैठता	वे बैठते

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—ता (ती, ती, ती, तीं, तीं, तीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठती	हम बैठतीं
मध्यम पुरुष	तू बैठती	तुम बैठतीं
अन्य पुरुष	वह बैठती	वे बैठतीं

६ अपूर्ण भूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—था (था, था, था, थे, थे, थे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठता था	हम बैठते थे
मध्यम पुरुष	तू बैठता था	तुम बैठते थे
अन्य पुरुष	वह बैठता था	वे बैठते थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता।

चिह्न-थी (थी, थी, थी, थीं, थीं, थीं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठती थी	हम बैठती थीं
मध्यम पुरुष	तू बैठती थी	तुम बैठती थीं
अन्य पुरुष	वह बैठती थी	वे बैठती थीं

७ सामान्य वर्त्तमान।

पुँल्लिंग कर्त्ता।

चिह्न—है (हूँ, है, है, हैं, हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठता हूँ	हम बैठते हैं
मध्यम पुरुष	तू बैठता है	तुम बैठते हो
अन्य पुरुष	वह बैठता है	वे बैठते हैं

स्त्रीलिंग कर्त्ता।

चिह्न—है (हूँ, है, है, हैं हो, हैं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठती हूँ	हम बैठती हैं
मध्यम पुरुष	तू बैठती है	तुम बैठती हो
अन्य पुरुष	वह बैठती है	वे बैठती हैं

८ संदिग्ध वर्त्तमान ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा (होऊँगा, होवेगा, होवेगा, होवेंगे, होओगे, होवेंगे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं बैठता होऊँगा, हूँगा	हम बैठते होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू बैठता होवेगा, होगा	तुम बैठते होओगे, होगे
अ० पु०	वह बैठता होवेगा, होगा	वे बैठते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—होगा(होऊँगी,होवेगी,होवेगी, होवेंगी, होओगी होवेंगी)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं बैठती होऊँगी, हूँगी	हम बैठती होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू बैठती होवेगी, होगी	तुम बैठती होओगी, होगी
अ० पु०	वह बैठती होवेगी, होगी	वे बैठती होवेंगी, होंगी

९ पूर्वकालिक ।

इस कालकी क्रियाके अकेले रूप नहीं होते ।

इसके चिह्न—०, के कर वा करके । बैठ, बैठके, बैठकर वा बैठकरके ।

१० विधि ।

इसमें स्त्रीलिंगके रूपभी पुँल्लिंगके समान होते हैं ।

पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—० (ऊँ, ०, ए, एं, ओ, एं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठूँ	हम बैठें
मध्यम पुरुष	तू बैठ	तुम बैठो
अन्य पुरुष	वह बैठे	वे बैठें
आदरमें बैठिये		परोक्षमें बैठियो

११ सामान्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

चिह्न—गा (गा, गा, गा, गे, गे, गे)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठूँगा	हम बैठेंगे
मध्यम पुरुष	तू बैठेगा	तुम बैठोगे
अन्य पुरुष	वह बैठेगा	वे बैठेंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

चिह्न—गा (गी, गी, गी, गी, गी, गी,)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठूँगी	हम बैठेंगी
मध्यम पुरुष	तू बैठेगी	तुम बैठोगी
अन्य पुरुष	वह बैठेगी	वे बैठेंगी

१२ सम्भावना ।

इसमें स्त्रीलिंगके रूपभी पुँल्लिंगके समान होते हैं ।

पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग कर्ता ।

चिह्न—ए (ऊं, ए, ए, एं, ओ, एं)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं बैठूं	हम बैठें
मध्यम पुरुष	तू बैठे	तुम बैठो
अन्य पुरुष	वह बैठे	वे बैठें

३१८ स्वरांत सकर्मक क्रियाकी रूपावली नीचे लिखे रूपोंके समान होती है । चिह्न फिर नहीं लिखे गये अकर्मकके समान समझना चाहिये ।

खाना क्रिया ।

कर्ता तीनों पुरुष ।

१ सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खाया	मैंने वा हमने खाये
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खाया	तूने वा तुमने खाये
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खाया	उसने वा उन्होंने खाये

स्त्रीलिंग कर्म्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खायी, खाई	मैंने वा हमने खायीं खाईं
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खायी, खाई	तूने वा तुमने खायीं खाईं
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खायी खाई	उसने वा उन्होंने खायीं खाईं

२ आसन्न भूत।

पुँल्लिंग कर्म्म।

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उ॰ पु॰	मैंने वा हमने खाया है	मैंने वा हमने खाये हैं
म॰ पु॰	तूने वा तुमने खाया है	तूने वा तुमने खाये हैं
अ॰ पु॰	उसने वा उनने खाया है	उसने वा उन्होंने खाये हैं

स्त्रीलिंग कर्म्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खायी है खाई है	मैंने वा हमने खायी हैं, खाई हैं
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खायी है खाई है	तूने वा तुमने खायी हैं, खाई हैं

अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खायी है खाई है	उसने वा उन्होंने खायी हैं खाई हैं

३ पूर्ण भूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खाया था	मैंने वा हमने खाये थे खाए थे
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खाया था	तूने वा तुमने खाये थे खाए थे
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खाया था	उसने वा उन्होंने खाये थे खाए थे

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खायी थी खायी थी	मैंने वा हमने खायी थीं खायी थीं
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खायी थी, खाई थी	तूने वा तुमने खायी थीं खाई थीं
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खायी थी खाई थी	उसने वा उन्होंने खायी थीं खाई थीं

४ संदिग्ध भूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने खाया होगा।	मैंने वा हमने खाये होंगे, खाए होंगे
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने खाया होगा	तूने वा तुमने खाये होंगे, खाए होंगे
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने खाया होगा	उसने वा उन्होंने खाये होंगे, खाए होंगे

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने खायी होगी खाई होगी	मैंने वा हमने खायी होंगी, खाई होंगी
म० पु०	तूने वा तुमने खायी होगी, खाई होगी	तूने वा तुमने खायी होंगी खाई होंगी
अ० पु०	उसने वा उन्होंने खायी होगी, खाई होगी	उसने वा उन्होंने खायी होंगी, खाई होंगी

कर्म तीनों पुरुष ।

१ सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाया	हम खाये, खाए
मध्यम पुरुष	तू खाया	तुम खाये, खाए
अन्य पुरुष	वह खाया	वे खाये, खाए

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खायी खाई	हम खायीं खाईं
मध्यम पुरुष	तू खायी खाई	तुम खायीं खाईं
अन्य पुरुष	वह खायी खाई	वे खायीं खाईं

२ आसन्न भूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाया हूं	हम खाये हैं खाए हैं
मध्यम पुरुष	तू खाया है	तुम खाये हो खाए हो
अन्य पुरुष	वह खाया है	वे खाये हैं खाए हैं

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खायी हूं खाई हूं	हम खायी हैं खाई हैं

मध्यम पुरुष	तू खायी है खाई है	तुम खायी हो खाई हो
अन्य पुरुष	वह खायी है खाई है	वे खायी हैं खाई हैं

३ पूर्णभूत ।

पुल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाया था	हम खाये थे खाए थे
मध्यम पुरुष	तू खाया था	तुम खाये थे खाए थे
अन्य पुरुष	वह खाया था	वे खाये थे खाए थे

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु	मैं खायी थी, खाई थी	हम खायी थीं, खाई थीं
म० पु०	तू खायी थी, खाई थी	तुम खायी थीं, खाई थीं
अ० पु०	वह खायी थी, खाई थी	वे खायी थीं, खाई थीं

४ संदिग्ध भूत

पुँल्लिंग कर्म

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं खाया होऊँगा हूँगा	हम खाये होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू खाया होवेगा, होगा	तुम खाये हो ओगे, होंगे
अ० पु०	वह खाया होवेगा, होगा	वे खाये होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्म्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु० मैं	खायी होऊँगी हूँगी	हम खायी होवेंगी होंगी
म० पु० तू	खायी होवेगी होगी	तुम खायी होओगी होगी
अ० पु० वह	खायी होवेगी होगी	वे खायी होवेंगी होंगी

कर्त्ता तीनों पुरुष

८ हेतुहेतुमद्भूत।

पुँल्लिंग कर्ता।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाता	हम खाते
मध्यम पुरुष	तू खाता	तुम खाते
अन्य पुरुष	वह खाता	वे खाते

स्त्रीलिंग कर्ता।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाती	हम खातीं
मध्यम पुरुष	तू खाती	तुम खातीं
अन्य पुरुष	वह खाती	वे खातीं

६ अपूर्णभूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाता था	हम खाते थे
मध्यम पुरुष	तू खाता था	तुम खाते थे
अन्य पुरुष	वह खाता था	वे खाते थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाती थी	हम खाती थीं
मध्यम पुरुष	तू खाती थी	तुम खाती थीं
अन्य पुरुष	वह खाती थी	वे खाती थीं

७ सामान्य वर्तमान

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाता हूँ	हम खाते हैं
मध्यम पुरुष	तू खाता है	तुम खाते हो
अन्य पुरुष	वह खाता है	वे खाते हैं

स्त्रीलिंग कर्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाती हूँ	हम खाती हैं

मध्यम पुरुष	तू खाती है	तुम खाती हो
अन्य पुरुष	वह खाती है	वे खाती हैं

८ संदिग्ध वर्त्तमान

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं खाता होऊंगा, हूँगा	हम खाते होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू खाता होवेगा, होगा	तुम खाते होओगे, होगे
अ० पु०	वह खाता होवेगा, होगा	वे खाते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं खाती होऊँगी, हूँगी	हम खाती होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू खाती होवेगी, होगी	तुम खाती होओगी, होगी
अ० पु०	वह खाती होवेगी होगी	वे खाती होवेंगी, होंगी

९ पूर्वकालिक ।

खा खाके खाकर वा खाकरके ।

१० विधि ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाऊँ	हम खावें
मध्यम पुरुष	तू खा	तुम खाओ

अन्य पुरुष	वह खावे	वे खावें
आदरमें	खाइये	परोक्षमें खाइयो

११ सामान्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाऊँगा	हम खावेंगे
मध्यम पुरुष	तू खावेगा	तुम खाओगे
अन्य पुरुष	वह खावेगा	वे खावेंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाऊँगी	हम खावेंगी
मध्यम पुरुष	तू खावेगी	तुम खाओगी
अन्य पुरुष	वह खावेगी	वे खावेंगी

१२ संभाव्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं खाऊँ	हम खावें
मध्यम पुरुष	तू खावे	तुम खाओ
अन्य पुरुष	वह खावे	वे खावें

३१८ व्यंजनांत सकर्मक क्रियाकी रूपावली नीचेके रूपोंमें देखलो । चिह्न अकर्मकके समान जानो ।

लिखना क्रिया ।

कर्त्ता तीनों पुरुष ।

१ सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने लिखा	मैंने वा हमने लिखे
म० पु०	तूने वा तुमने लिखा	तूने वा तुमने लिखे
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखा	उसने वा उन्होंने लिखे

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु	मैंने वा हमने लिखी	मैंने वा हमने लिखीं
म० पु०	तूने वा तुमने लिखी	तूने वा तुमने लिखीं
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखी	उसने वा उन्होंने लिखीं

२ आसन्न भूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने लिखा है	मैंने वा हमने लिखे हैं

म० पु०	तूने वा तुमने लिखा है	तूने वा तुमने लिखे हैं
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखा है	उसने वा उन्होंने लिखे हैं

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने लिखी है	मैंने वा हमने लिखी हैं
म० पु०	तूने वा तुमने लिखी है	तूने वा तुमने लिखी हैं
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखी है	उसने वा उन्होंने लिखी हैं

२ पूर्णभूत ।

पुँल्लिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने लिखा था	मैंने वा हमने लिखे थे
म० पु०	तूने वा तुमने लिखा था	तूने वा तुमने लिखे थे
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखा था	उसने वा उन्होंने लिखे थे

स्त्रीलिंग कर्म्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैंने वा हमने लिखी थी	मैंने वा हमने लिखी थीं
म० पु०	तूने वा तुमने लिखी थी	तूने वा तुमने लिखी थीं
अ० पु०	उसने वा उन्होंने लिखी थी	उसने वा उन्होंने लिखी थीं

४ संदिग्ध भूत ।

पुँल्लिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने लिखा होगा	मैंने वा हमने लिखे होंगे
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने लिखा होगा	तूने वा तुमने लिखे होंगे
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने लिखा होगा	उसने वा उन्होंने लिखे होंगे

स्त्रीलिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैंने वा हमने लिखी होगी	मैंने वा हमने लिखी होंगी
मध्यम पुरुष	तूने वा तुमने लिखी होगी	तूने वा तुमने लिखी होंगी
अन्य पुरुष	उसने वा उन्होंने लिखी होगी	उसने वा उन्होंने लिखी होंगी

कर्म तीनों पुरुष।

१ सामान्यभूत।

पुँल्लिंग कर्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा	हम लिखे
मध्यम पुरुष	तू लिखा	तुम लिखे
अन्य पुरुष	वह लिखा	वे लिखे

स्त्रीलिंग कर्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी	हम लिखीं
मध्यम पुरुष	तू लिखी	हम लिखीं
अन्य पुरुष	वह लिखी	वे लिखीं

२ आसन्न भूत।

पुँल्लिंग कर्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा हूं	हम लिखे हैं
मध्यम पुरुष	तू लिखा है	तुम लिखे हो
अन्य पुरुष	वह लिखा है	वे लिखे हैं

स्त्रीलिंग कर्म।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी हूँ	हम लिखी हैं

मध्यम पुरुष	तू लिखी है	तुम लिखी हो
अन्य पुरुष	वह लिखी है	वे लिखी हैं

३ पूर्ण भूत ।

पुँल्लिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा था	हम लिखे थे
मध्यम पुरुष	तू लिखा था	तुम लिखे थे
अन्य पुरुष	वह लिखा था	वे लिखे थे

स्त्रीलिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी थी	हम लिखी थीं
मध्यम पुरुष	तू लिखी थी	तुम लिखी थीं
अन्य पुरुष	वह लिखी थी	वे लिखी थीं

४ संदिग्धभूत ।

पुँल्लिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं लिखा होऊँगा, हूँगा	हम लिखे होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू लिखा होवेगा, होगा	तुम लिखे होओगे, होगे
अ० पु०	वह लिखा होवेगा, होगा	वे लिखे होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्म ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ॰ पु॰	मैं लिखी होऊँगी, हूँगी	हम लिखी होवेंगी होंगी
म॰ पु॰	तू लिखी होवेगी, होगी	तुम लिखी होओगी, होगी
अ॰ पु॰	वह लिखी होवेगी, होगी	वे लिखी होवेंगी, होंगी

कर्त्ता तीनों पुरुष ।

९ हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखता	हम लिखते
मध्यम पुरुष	तू लिखता	तुम लिखते
अन्य पुरुष	वह लिखता	वे लिखते

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखती	हम लिखतीं
मध्यम पुरुष	तू लिखती	तुम लिखतीं
अन्य	वह लिखती	वे लिखतीं

६ अपूर्ण भूत ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखता था	हम लिखते थे
मध्यम पुरुष	तू लिखता था	तुम लिखते थे
अन्य पुरुष	वह लिखता था	वे लिखते थे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखती थी	हम लिखती थीं
मध्यम पुरुष	तू लिखती थी	तुम लिखती थीं
अन्य पुरुष	वह लिखती थी	वे लिखती थीं

७ सामान्य वर्त्तमान ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखता हूं	हम लिखते हैं
मध्यम पुरुष	तू लिखता है	तुम लिखते हो
अन्य पुरुष	वह लिखता है	वे लिखते हैं

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखती हूँ	हम लिखती हैं

मध्यम पुरुष	तू लिखती है	तुम लिखती हो
अन्य पुरुष	वह लिखती है	वे लिखती हैं

८ संदिग्ध वर्त्तमान ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं लिखता होऊँगा, हूँगा	हम लिखते होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू लिखता होवेगा, होगा	तुम लिखते होओगे, होगे
अ० पु०	वह लिखता होवेगा, होगा	वे लिखते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं लिखती होऊँगी, हूँगी	हम लिखती होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू लिखती होवेगी होगी	तुम लिखती होओगी, होगी
अ०पु०	वह लिखती होवेगी, होगी	वे लिखती होवेंगी, होंगी

९ पूर्वकालिक ।

लिख, लिखके, लिखकर वा लिखकरके ।

१० विधि ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखूं	हम लिखें

मध्यम पुरुष	तू लिखे	तुम लिखो
अन्य पुरुष	वह लिखे	वे लिखें

११ सामान्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखूँगा	हम लिखेंगे
मध्यम पुरुष	तू लिखेगा	तुम लिखोगे
अन्य पुरुष	वह लिखेगा	वे लिखेंगे

स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखूँगी	हम लिखेंगी
मध्यम पुरुष	तू लिखेगी	तुम लिखोगी
अन्य पुरुष	वह लिखेगी	वे लिखेंगी

१२ संभाव्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग और स्त्रीलिंग कर्त्ता ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखूँ	हम लिखें
मध्यम पुरुष	तू लिखे	तुम लिखो
अन्य पुरुष	वह लिखे	वे लिखें

२१९ ऊपर सकर्मक क्रियाकी रूपावली लिखनेमें कर्तृप्रधानके तो सब रूप दिखाये हैं परन्तु कर्मप्रधानको केवल सामान्य भूत आसन्न भूत पूर्ण भूत और संदिग्ध भूत चारही कालोंमें दिखाया है । नई शैलीकी प्रथामें कर्मप्रधान सकर्मक क्रिया भी सब कालोंमें आती है और अब सर्वथा बोलनेमें इनकी आवश्यकता पडने लगी है इस लिये उसके भी सब रूप दिखाते हैं । इसमें सामान्य भूतकालके रूपमें जाना क्रिया वा उसका कोई रूप लगा देते हैं ।

लिख धातु ।

१ सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा गया	हम लिखे गये
मध्यम पुरुष	तू लिखा गया	तुम लिखे गये
अन्य पुरुष	वह लिखा गया	वे लिखे गये

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी गयी, गई	हम लिखी गयीं गईं
मध्यम पुरुष	तू लिखी गयी, गई	तुम लिखी गयीं गईं
अन्य पुरुष	वह लिखी गयी गई	वे लिखी गयीं, गईं

२ आसन्न भूत ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा गया हूं	हम लिखे गये हैं
मध्यम पुरुष	तू लिखा गया है	तुम लिखे गये हो
अन्य पुरुष	वह लिखा गया है	वे लिखे गये हैं

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी गई हूं	हम लिखी गई हैं
मध्यम पुरुष	तू लिखी गई है	तुम लिखी गई हो
अन्य पुरुष	वह लिखी गई है	वे लिखी गई हैं

३ पूर्ण भूत ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा गया था	हम लिखे गये थे
मध्यम पुरुष	तू लिखा गया था	तुम लिखे गये थे
अन्य पुरुष	वह लिखा गया था	वे लिखे गये थे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी गई थी	हम लिखी गई थीं

मध्यम पुरुष	तू लिखी गई थी	तुम लिखी गई थीं
अन्य पुरुष	वह लिखी गई थी	वे लिखी गई थीं

४ संदिग्ध भूत ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं लिखा गया होऊँगा	हम लिखे गये होवेंगे, होंगे
म० पु०	तू लिखा गया होगा	तुम लिखे गये होओगे, होगे
अ० पु०	वह लिखा गया होगा	वे लिखे गये होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं लिखी गई होऊंगी	हम लिखी गई होवेंगी, होंगी
म० पु०	तू लिखी गई होगी	तुम लिखी गई होओगी, होगी
अ० पु०	वह लिखी गई होगी	वे लिखी गई होवेंगी, होंगी

५ हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाता	हम लिखे जाते
मध्यम पुरुष	तू लिखा जाता	तुम लिखे जाते
अन्य पुरुष	वह लिखा जाता	वे लिखे जाते

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाती	हम लिखी जातीं
मध्यम पुरुष	तू लिखी जाती	तुम लिखी जातीं
अन्य पुरुष	वह लिखी जाती	वे लिखी जातीं

६ अपूर्ण भूत ।

पुल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाता था	हम लिखे जाते थे
मध्यम पुरुष	तू लिखा जाता था	तुम लिखे जाते थे
अन्य पुरुष	वह लिखा जाता था	वे लिखे जाते थे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाती थी	हम लिखी जाती थीं
मध्यम पुरुष	तू लिखी जाती थी	तुम लिखी जाती थीं
अन्य पुरुष	वह लिखी जाती थी	वे लिखी जाती थीं

७ नामान्य वर्त्तमान ।

पुल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाता हूं	हम लिखे जाते हैं

मध्यम पुरुष	तू लिखा जाता है	तुम लिखे जाते हो
अन्य पुरुष	वह लिखा जाता है	वे लिखे जाते हैं

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाती हूं	हम लिखी जाती हैं
मध्यम पुरुष	तू लिखी जाती है	तुम लिखी जाती हो
अन्य पुरुष	वह लिखी जाती है	वह लिखी जाती हैं

८ संदिग्धवर्त्तमान ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाता होऊंगा	हम लिखे जाते होवेंगे, होंगे
मध्यम पुरुष	तू लिखा जाता होगा	तुम लिखे जाते होओगे, होगे
अन्य पुरुष	वह लिखा जाता होगा	वे लिखे जाते होवेंगे, होंगे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाती होऊंगी	हम लिखी जाती होवेंगी, होंगी

मध्यम पुरुष	तू लिखी जाती होगी	तुम लिखी जाती होओगी, होगी
अन्य पुरुष	वह लिखी जाती होगी	वे लिखी जाती होवेंगी होंगी

९ पूर्वकालिक ।

लिखा जा, लिखा जाके, लिखा जाकर, लिखा जाकरके ।

१० विधि ।

इस रीतिके अनुसार विधिकालमेंभी पुँल्लिंग और स्त्रीलिंगका भेद रहता है ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाऊं	हम लिखे जावें
मध्यम पुरुष	तू लिखा जा	तुम लिखे जाओ
अन्य पुरुष	वह लिखा जावे	वे लिखे जावें

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाऊं	हम लिखी जावें
मध्यम पुरुष	तू लिखी जा	तुम लिखी जाओ
अन्य पुरुष	वह लिखी जावे	वे लिखी जावें

११ सामान्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाऊंगा	हम लिखे जायेंगे
मध्यम पुरुष	तू लिखा जायगा	तुम लिखे जाओगे
अन्य पुरुष	वह लिखा जायगा	वे लिखे जायेंगे

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाऊंगी	हम लिखी जायेंगी
मध्यम पुरुष	तू लिखी जायगी	तुम लिखी जाओगी
अन्य पुरुष	वह लिखी जायगी	वे लिखी जायेंगी

१२ संभाव्य भविष्यत् ।

पुँल्लिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखा जाऊं	हम लिखे जावें
मध्यम पुरुष	तू लिखा जाय, जावे	तुम लिखे जाओ
अन्य पुरुष	वह लिखा जाय, जावे	वे लिखे जावें

स्त्रीलिंग ।

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं लिखी जाऊं	हम लिखी जावें

मध्यम पुरुष तू लिखी जाय, जावे तुम लिखी जाओ
अन्य पुरुष वह लिखी जाय, जावे वे लिखी जावें

३२० अर्थात् विधि और संभावनाके रूपसे एकसे होते हैं जहां आज्ञा अनुज्ञाका बोध हो वहां विधि जानो । नहीं तो संभावना मानना चाहिये

३२१ क्रियाकी रूपावलीमें सर्वदा ऊपरके नियम काममें आते हैं और इसी भांति प्रत्येक क्रियापदके रूप हो जाते हैं परन्तु कुछ क्रिया ऐसी भी हैं जिनके रूप इन नियमोंके अनुसार नहीं होते जैसे करना इसकी रूपावली नीचे देखो ।

सामान्य भूत

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
करा वा किया	करे वा किये	करी वा की	करीं वा कीं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
करता	करते	करती	करतीं

जो काल सामान्य भूत और हेतुहेतुमद्भूतसे बनाते हैं वह इन रूपोंसे बन जायेंगे

३२२ बहुतोंका मत है कि संस्कृत धातु ' कृ ' से ही भाषा ' कर ' धातु निकली है । हमने अपने वर्णमालाके इतिहासमें इन सब रहस्योंको खोला है ।

३२३ कीना यह कोई अलग धातु नहीं है प्रायः देश और प्रान्तके प्रभावसे उच्चारणमें अन्तर आगया है और वह करना क्रियाका ही सामान्य भूत कालका रूप है । व्रजभाषामें या पुरानी उन भाषाओंमें जिनमें व्रजभाषका आदर था कीना, कीनी काममें लाया जाता है ।

३२४ कुछ काल बनानेमें जाना क्रियाकी सहायतासे भी रूप बनते हैं । जैसे किया गया, किया जाता। ऊपरके नियमोंको हृदयमें रखनेसे यह रूप सहजमें बन जाते हैं और इसी कारण उदाहरण नहीं लिखे ।

३२५ करना क्रियाके सन्मानसूचक और परोक्षदर्शी विधिके रूप कीजिये, करिये और कीजियो, करियो हैं ।

३२६ जैसे करना धातुके रूप साधारण नियमोंके विपरीत बनते हैं उसी भांति देना, पीना, लेना, होना और जाना क्रियापदोंके रूप भी अनियमित रीतिपर होते हैं । उनके उदाहरणभी नीचे लिखते हैं ।

देना क्रिया ।

सामान्य भूत: ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
दिया	दिये	दी	दीं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
देता	देते	देती	देतीं

पीना क्रिया ।

सामान्य भूत

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
पिया	पिये	पी	पीं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
पीता	पीते	पीती	पीतीं

लेना क्रिया ।

सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
लिया	लिये	ली	लीं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
लेता	लेते	लेती	लेतीं

होना क्रिया ।

सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
हुआ वा भया	हुए वा भये	हुई वा भई	हुईं वा भईं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
होता	होते	होती	होतीं

जाना क्रिया ।

सामान्य भूत ।

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
गया	गये	गई	गईं

हेतुहेतुमद्भूत ।

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
जाता	जाते	जाती	जातीं

३२७ इन क्रियाओंके शेष रूप साधारण नियमोंके अनुसार होते हैं सन्मानसूचक और परोक्षदर्शी विधिके रूप क्रमसे नीचे लिखे जाते हैं ।

सन्मानसूचक	परोक्षदर्शी	सन्मानसूचक	परोक्षदर्शी
दीजिये	दीजियो	पीजिये	पीजियो
लीजिये	लीजियो	हूजिये	हूजियो
जाइये	जाइयो		

३२८ जैसे करना क्रियाकी व्युत्पत्ति संस्कृत कृ धातुसे समझी जाती है उसी भांति भाषा जाना क्रियाको संस्कृत या धातुका रूप बताते हैं। जानाके रूपोंमें कहीं इसका रूप ज्योंका त्यों रहता है और कहीं गया गई आदिमें बदल

जाता है इस लिये अनुमान करते हैं कि यह गम् धातुके रूप हैं या तथा गम् धातु दोनोंही एक अर्थकी बोधक हैं भाषामें दोनोंके रूप मिलकर एक जाना धातुके रूप बन गये हैं ।

३२९ इसी भांति यह भी अनुमान किया जाताहै कि होना क्रियाका सामान्य भूतकालमें भया रूप जो है वह संस्कृत भू धातुसे निकला है ।

दशम अध्याय ।

क्रियाके स्फुट नियम और रूप ।

मिश्रित या वा यौगिक क्रिया ।

३३० भाषामें अनेक नई नई भाषाओंके अनुवाद होते हैं और उन दूसरी भाषाओंके भावको यथावत् जानने और जतानेके लिये बुद्धिमानोंने एक दो वा अधिक क्रियाओंको मिलाकर अनेक मिश्रित क्रिया बनाली हैं ।

३३१ ऐसी क्रियाके रूप सदा जिन क्रियाओंके संयोगसे वे बनी हैं उनमें पिछलीके अनुसार होते हैं परन्तु अकर्मक सकर्मक भेद और क्रियाका अर्थ पहली क्रियाके अनुसार होता है ।

३३२ दो वा अधिक क्रियाओंके मिश्रित होनेमें अनेक व्यतिक्रम होते हैं परन्तु: तीन उपनियम ध्यानमें रखनेसे उनका समझना सुगम हो जायगा ।

(अ) आदिकी क्रिया मिश्रित होते समय अपने साधारणरूपसे मिलती है । जैसे चलने पाना ।

(क) आदिकी क्रिया मिश्रित होते समय धातुरूपसेही मिलती है । जैसे पढ लेना ।

(ख) आदिकी क्रिया मिश्रित होते समय अपने सामान्य भूतके रूपसे मिलती है । जैसे देखा करना ।

३३३ यह मिश्रित क्रियाएं अनेक भावोंका बोध कराती हैं और नित्य नये भावोंके अनुसार बनती जाती हैं, परन्तु यहां कुछ प्रधान भावोंके नाम बताते हैं, अधिकतर यौगिक क्रिया इन्हींमें आ जाती हैं ।

३३४ इच्छाबोधक, संपूर्णबोधक, आरंभबोधक, अवकाशबोधक, अवधारणबोधक व निश्चयार्थक, अधिकारार्थक और नित्यताबोधक ।

३३५ इच्छाबोधक मिश्रित क्रिया बनानेके लिये पहली क्रियाके सामान्य भूतका रूप जोडा जाता है और उससे कर्त्ताके उस व्यापार करनेकी इच्छा पाई जाती है । इसमें

उदाहरण ।

खाया चाहना — सीखा चाहना
लाया चाहना — बोला चाहना
सोया चाहना — मारा चाहना
किया चाहना — जाना चाहना

३३६ जाया चाहनाको कभी गया चाहना भी कहते हैं क्योंकि जाना क्रियाका सामान्य भूत गया है जाया नहीं है परन्तु वर्त्तावमें अधिक जाया आता है इस कारण उसीको प्रधानता दी गई है ।

३३७ संपूर्णताबोधक मिश्रित क्रियाके बनानेको पहली क्रियाके धातुरूपमें चुकना लगाते हैं और इससे यह भाव पाया जाता है कि कर्त्ताने अमुक व्यापार संपूर्ण कर लिया ।

उदाहरण ।

जा चुकना — बैठ चुकना
ला चुकना — चल चुकना
दे चुकना — कर चुकना
खा चुकना — मार चुकना

३३८ आरम्भबोधक मिश्रित क्रियाके बनानेको पहली क्रियाके साधारण रूपके अन्त्य 'आ' को 'ए' आदेश करते हैं । बहुधा आरंभकी सूचना देनेवाली लगना क्रियाही

इसमें पीछे जोडी जाती है और इससे यह ज्ञान होता है कि कर्त्ता किसी व्यापारका आरंभ करता है ।

उदाहरण ।

जाने लगना	बोलने लगना
खाने लगना	फिरने लगना
चलने लगना	आने लगना
उठने लगना	देने लगना

३३९ अवकाशबोधक क्रियाके बनानेके लिये पहली क्रियाकी धातुमें अन्त्य 'आ' को 'ए' आदेश करते हैं, बहुधा पीछे जोडी जानेवाली क्रिया पाना और देना है । इस क्रियासे इस बातका बोध होता है कि कर्त्ताको किसी व्यापारके करनेका अवकाश दिया गया है ।

उदाहरण ।

उठने देना	करने पाना
लाने देना	लाने पाना
जाने देना	सोने पाना
गाने देना	गाने पाना

३४० अवधारण बोधक वा निश्चयार्थक क्रिया बनानेके लिये पहली क्रिया धातुरूपसे मिलती है और उसमें लेना, देना, आना, जाना, बैठना, रहना, पडना और डालना

आदि जोड़ देते हैं । इनसे कार्यमें एक प्रकारका ठहराव वा स्थिरता पाई जाती है ।

उदाहरण ।

कर लेना	देख आना	हो रहना
पढ़ लेना	सो जाना	सो रहना
सो लेना	खा जाना	चल पड़ना
हो लेना	आ जाना	गिर पड़ना
उठा देना	उठ जाना	उठ पड़ना
चल देना	कर बैठना	आ पड़ना
कर देना	ले बैठना	मार डालना
पढ़ देना	मार बैठना	काट डालना
ले आना	उठ बैठना	दे डालना
दे आना	आ रहना	धो डालना
खा आना	जा रहना	पोंछ डालना

३४१ जब अवधारणबोधक सकर्मकके रूपमें होता है तब लेना, देना आदि क्रिया पहली क्रियाकी धातुमें नहीं मिलती, पहली क्रियाके सामान्य भूतमें जोड़ी जाती हैं ।

उदाहरण ।

करा लेना   उठा डालना

उठा देना	करा बैठना
देखा जाना	हुआ रहना

३४२ अधिकारार्थक वा शक्तिबोधक क्रिया बनानेके लिये पहली क्रियाकी धातुमें सकना क्रिया जोडी जाती है और उससे यह भाव जाना जाता है कि किसी व्यापारके करनेकी शक्ति है ।

उदाहरण ।

आ सकना	देख सकना
जा सकना	उठ सकना
कर सकना	चढ सकना
चल सकना	दे सकना

३४३ अवधारणबोधककी भाँति इसको सकर्मकके रूपमें लानेके लिये भी पहली क्रियाके सामान्य भूतमें सकना जोडा जाता है ।

उदाहरण ।

करा सकना	चढा सकना
उठा सकना	बढा सकना

३४४ 'सकना' क्रिया कभी अकेली नहीं आती क्योंकि

उससे अकेली अवस्थामें कुछ भावही नहीं जाना जाता इस कारण इस क्रियाको परतंत्र वा पराधीन क्रिया कहा जाता है

३४५ नित्यताबोधक क्रिया बनानेके लिये पहली क्रियाके सामान्यभूतमें करना जोड देते हैं और उससे यह प्रकाशित होता है कि अमुक व्यापार नित्य वा सदा किया जाता है ।

उदाहरण ।

लाया करना	सोया करना
आया करना	दिया करना
लिखा करना	कहा करना
चला करना	उठा करना

३४६ जहाँ बोलचालमें एक शब्दके स्थानमें दो शब्द बोलनेकी परिपाटी है अथवा किसी बातकी विशेषता दिखानेके लिये दो एकही अर्थकी क्रिया काममें लाई जाती हैं तो वह अपने साधारण रूपसे मिलती हैं ।

उदाहरण ।

उठना बैठना	बोलना चलना
चलना फिरना	समझना बूझना
कूदना फांदना	आना जाना
देखना भालना	खाना पीना

३४७ कभी इन यौगिक क्रियाओंमें करना जोड़कर नित्य-ताबोधक रूप बनाया जाता है ।

उदाहरण ।

खाया पीया करना	देखा भाला करना
आया जाया करना	चला फिरा करना
उठा बैठा करना	बोला चाला करना

३४८ बहुतसे क्रियापदोंसे पहले संज्ञा पद जोड़े जाते हैं और उनको भी यौगिक क्रिया मानते हैं ।

उदाहरण ।

बट मारना	ध्यान रखना
मन करना	चुप रहना
भय खाना	सुध लेना

३४९ ऊपरके नियमोंको भली भांति हृदयमें रखनेके लिये नीचेके चक्रको स्मरण रखना चाहिये ।

क्रियाका साधारण रूप धातु क्रियाका सामान्यभूत (अन्त्य 'आ' को 'ए' आदेश करके)

आरंभबोधक संपूर्णताबोधक इच्छाबोधक
अवकाशबोधक अवधारणबोधक नित्यताबोधक
शक्तिबोधक ।

अकर्मकसे सकर्मक ।

३५० अकर्मक क्रियाको सकर्मक बनानेके कई नियम हैं अब उनको लिखते हैं ।

३५१ अकर्मक क्रियाके सामान्यभूत कालमें ना जोडनेसे सकर्मक क्रिया बनती है । जैसेः—

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
चलना	चलाना	बजना	बजाना
लगना	लगाना	हटना	हटाना
चढना	चढाना	गिरना	गिराना
उडना	उडाना	दबना	दबाना

३५२ किसी २ का मत है कि तीन अक्षरकी अकर्मक धातु जब सकर्मक बनाई जाती है तो मध्य व्यंजनको हलन्त कर देना चाहिये । जैसेः—

अकर्मक	सकर्मक	
चमकना	चम्‌काना	अर्थात् चम्काना
सरकना	सरकाना	अर्थात् सर्काना
बिथरना	बिथ्‌राना	अर्थात् बिथ्राना
पिघलना	पिघ्‌लाना	अर्थात् पिघ्लाना

३५३ आधुनिक शैलीमें इस नियमका पालन बिलकुल नहीं होता और बोलने तथा लिखनेमें आदि सब स्थानोंमें

मध्य अक्षर सस्वर माना जाता है और हल करनेका नियम अचलित हो गया है। आधुनिक रीतिसे ३५१ नियमके समान रूप होते हैं।

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
चमकना	चमकाना	सरकना	सरकाना
बिथरना	बिथराना	पिघलना	पिघलाना

३५४ दो व्यंजनके अकर्मक धातुमें यदि पहला व्यंजन दीर्घ हो तो सकर्मक बनाते समय उसको ह्रस्व कर देते हैं अर्थात् अकर्मक क्रियाके सामान्य भूतके रूपमें यह व्यतिक्रम और कर लेते हैं। जैसेः—

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
जीतना	जिताना	घूमना	घुमाना
सीखना	सिखाना	लूटना	लुटाना
सींचना	सिंचाना	लेटना	लिटाना

३५५ कभी अकर्मक क्रियाके आदि अक्षरको ह्रस्वसे दीर्घ करनेसेही सकर्मक क्रिया बन जाती है। जैसेः—

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
मरना	मारना	पलना	पालना
लदना	लादना	कटना	काटना

३५६ अब उन अकर्मक क्रियाओंके कुछ उदाहरण लिखते हैं जिनका सकर्मक ऊपरकी रीतियोंसे नहीं बनता वरन अनियमित रूपसे बना हुआ बताना चाहिये । जैसेः--

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
रहना	रखना	फटना	फाटना
टूटना	तोडना	छूटना	छोडना
विकना	बेचना		

३५७ अकर्मक क्रियामें कुछ प्रत्यय लगाकर ऐसी क्रिया बनती है जो एक प्रकारकी प्रेरणा वा आज्ञा प्रकाशित करती है इसलिये इस क्रियाको प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं ।

३५८ अकर्मकसे प्रेरणार्थ बनानेको अकर्मक धातुके पीछे 'वा' लगानेसे प्रेरणार्थक क्रिया बन जाती है । ऐसी अवस्थामें अकर्मक धातुका पहला अक्षर ह्रस्व होगा । समझनेकी सुगमताके लिये ऊपरके उदाहरणोंकोही फिर लिखेंगे । जैसेः—

अकर्मक	सकर्मक	अकर्मक	सकर्मक
चलना	चलवाना	बजना	बजवाना
लगना	लगवाना	हटना	हटवाना
चढना	चढवाना	गिरना	गिरवाना

उड़ना	उड़वाना	दबना	दबाना
चमकना	चमकवाना	सरकना	सरकवाना
बिथरना	बिथरवाना	पिघलना	पिघलवाना
मरना	मरवाना	पलना	पलवाना
लदना	लदवाना	कटना	कटवाना

३५९ विद्यार्थियोंको यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि नियम ३५१, ३५३ और ३५५ के सब उदाहरण ऊपरके एकही नियमके अन्तर्गत हो गये अर्थात् जो क्रिया अकर्मकसे सकर्मक बनते समय तीन रीतियोंसे रूप बदलती है वह प्रेरणार्थक बननेमें केवल एकही रीतिसे बन जाती है ।

३६० यदि अकर्मक धातुका पहला अक्षर दीर्घ हो तो उसको ह्रस्व करके 'वा' लगा देनेसे प्रेरणार्थक बन जायगी । जैसेः—

अकर्मक	प्रेरणार्थक	अकर्मक	प्रेरणार्थक
जीतना	जितवाना	घूमना	घुमवाना
सीखना	सिखवाना	लूटना	लुटवाना
सींचना	सिंचवाना	लेटना	लिटवाना

३६१ जिन अकर्मक क्रियाओंके सकर्मक रूप अनियमित रीतिसे बनते हैं उनके प्रेरणार्थक रूप भी किसी नियमसे नहीं बनते । जैसेः—

अकर्मक	प्रेरणार्थक	अकर्मक	प्रेरणार्थक
रहना	रखवाना	फटना	फड़वाना
टूटना	टुड़वाना	छूटना	छुड़वाना
फूटना	फुड़वाना		

३६२ दो अक्षरोंकी अनेक अकर्मक और सकर्मक धातु जिनका आदि अक्षर दीर्घ है उनके आदि अक्षरोंको ह्रस्व करके 'ला' और 'लवा' लगा देनेसे द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बन जाती हैं । जैसेः—

क्रिया	द्विकर्म	प्रेरणार्थक
पीना	पिलाना	पिलवाना
धोना	धुलाना	धुवाना धुलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना

३६३ कहीं २ पहले दीर्घ अक्षरका केवल ह्रस्व नहीं होता वरन जो कोई दीर्घ स्वर हो उसका ह्रस्व 'इ' कर देते हैं और वहां 'ला' और 'लवा' का भी ध्यान नहीं है । जैसेः—

क्रिया	द्विकर्म	प्रेरणार्थक
लेना	लिवाना	लिववाना
खाना	खिलाना	खिलवाना

३६४ सकना, होना, जाना, आना आदि अनेक अकर्मक क्रिया ऐसी है कि इनसे सकर्मक वा प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते ।

एकादश अध्याय ।

क्रियाके अन्वय ।

३६५ ऊपरके सूत्रोंसे किसी क्रियाके अन्वय इस प्रकार हो सक्ते हैं ।

क्रिया—१ क्रिया, २ भेद, ३ प्रभेद जो हो तो, ४ काल, ५ पुरुष, ६ लिंग, ७ वचन, ८ कर्त्ता और ९ कर्म यदि हो तो ।

यथा ।

३६६ मोहन छोटी पोथीको (पढता था) वह गुणवान् लडका (है) इस वाक्यमें केवल क्रियाओंके अन्वय लिखे जाते हैं ।

पढता था—क्रिया, सकर्मक, कर्तृप्रधान, अपूर्णभूत, (पुरुष, लिंग ' वचन) में अपने कर्त्ता (मोहन) के सदृश इसका कर्म्म (पोथी) है ।

है—क्रिया, अकर्मक, कर्तृप्रधान, वर्त्तमान, (पु०, लिं०, व०) में अपने कर्त्ता (लडका) के समान ।

३६७ वह लडका जो पाठशालाको (जाता था) बड़ा परिश्रमी (है)

जाता था—क्रिया, अकर्मक, कर्तृप्रधान, अपूर्णभूत (पु० लिं० व०) में अपने कर्त्ता (जो) के समान ।

है—क्रिया, अकर्मक कर्तृप्रधान, वर्त्तमान, (पु० लिं० व०) में अपने कर्त्ता (लडका) के समान ।

द्वादश अध्याय ।



अव्ययके विषयमें ।

३६८ अव्यय उसे कहते हैं जिसमें पुरुष, लिंग, वचन, कारक और काल कुछ न हो अर्थात् उनके कारक उसके रूपमें कुछ अन्तर न हो । जैसे ने, को, ता, व, क्या आदि ।

३६९ अव्ययके दो भेद हैं द्योतक और वाचक ।

३७० द्योतक वह अव्यय है जिसका अपने आप कुछ अर्थ नहीं होता परन्तु वह शब्दके साथ मिलकर उस शब्दके अर्थमें किसी प्रकारकी विशेषता या भिन्नता पैदा करता है । जैसे अकेले ' को ' शब्दका कुछ अर्थ नहीं है परन्तु इस ' को ' को किसी संज्ञापदमें जोडा जाता है तो अर्थ हो जाता है । यथा रामको हमको आदि । इन स्थानोंमें ' को ' से कर्मत्वका भाव जाना जाता है ।

३७१ वाचक वह अव्यय है जिसका अर्थ स्वयंभी होता है और जो किसी शब्दके साथ जुडकरभी सार्थक रहता है । जैसे ' अब ' यह केवल अपने आपभी सार्थक है और दूसरे शब्दमें जुडकर जैसे अवधारणमेंभी सार्थक है ।

द्योतक ।

३७२ द्योतक कई प्रकारके होते हैं । जैसे विभक्ति, क्रियाप्रत्यय, उपसर्ग आदि ।

३७३ विभक्ति वह है जो संज्ञापदके अन्तमें जोडी जाती है । जैसे रामको, मुझसे आदि ।

३७४ क्रियाप्रत्यय उसको कहते हैं जो किसी धातु वा क्रियाके पीछे जोडा जाता है । जैसे कर+ना = करना ।

३७५ उपसर्ग वह है जो शब्दके आदिमें जोडा जाय और उसके भावमें कुछ विशेषता पैदा करदे जैसे नूतनमें ।

वाचक ।

३७६ वाचक अव्ययभी अनेक प्रकारके होते हैं । जैसे क्रियाविशेषण, योजक, विभाजक, विस्मयादिबोधक, संबंध-वाचक आदि ।

क्रियाविशेषण ।

३७७ क्रियाविशेषण उसको कहते हैं जो क्रियाके काल भाव आदिका सूचक हो । जैसे संज्ञाका विशेषण गुणवाचक

संज्ञा है उसी भाँति क्रियाका विशेषण यह क्रिया विशेषण अव्यय है ।

३७८ क्रियाविशेषण अव्यय चार भांतिके होते हैं अर्थात् स्थानवाचक, कालवाचक, भाववाचक और प्रमाणवाचक ।

३७९ कुछ स्थानवाचक अव्यय जो नित्य काममें आते हैं उनके उदाहरण नीचे लिखते हैं ।

स्थानवाचक ।

यहां	वहां	तिधर	वार
कहां	जहां	पार	आसपास
तहां	इधर	दूर	निकट
उधर	किधर	समीप	नेरे, नेडे
	जिधर	सर्वत्र	

३८० इन अव्ययोंसे स्थानका भाव जाना जाता है अर्थात् किस स्थानपर क्रियाका व्यापार आदि हुआ ।

३८१ कुछ कालवाचक अव्ययोंके उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं जो साधारण बोलचालमें पाये जाते हैं ।

कालवाचक ।

अब	कब	तब	जब
आज	फिर	कल	परसों

तरसों	तड़के	नरसों	सवेरे
प्रातः	सर्वदा	सदा	निदान
बारंबार	पश्चात्	तुरन्त	एकदा
	सनातन	पुरातन	

३८२ इन अव्ययोंसे स्पष्ट होता है कि यह कालके बोधक हैं और इनसे क्रियाके व्यापारादिका काल निश्चय होता है ।

३८३ उन भाववाचक अव्ययोंके उदाहरण नीचे दिखाये जाते हैं जो नित्यके वर्त्तावमें आते हैं ।

भाववाचक ।

केवल	क्यों	यथार्थ	वृथा
ज्यों	नहीं	यों	स्वयं
त्यों	झटपट	परस्पर	शीघ्र
ठीक	तथापि	सचमुच	यद्यपि
सेंत मेंत	अचानक	अर्थात्	निकट
अकस्मात्	निरर्थक	निरंतर	हां
अवश्य	भी	तो	न
	मानों	मत	

३८४ इन अव्ययोंसे एक प्रकारका भाव जाना जाता है कि कैसा और इसी कारण इनको भाववाचक क्रियाविशेषण कहते हैं ।

३८५ अब कुछ प्रमाणवाचक अव्ययोंके उदाहरण यहां दिखाये जाते हैं ।

प्रमाणवाचक ।

अति	कुछ	एक वेर	विरले
अत्यन्त	तनक वा तनिक	दो वेर	इत्यादि
अधिक	अतिशय	बहुत	प्रायः

३८६ स्पष्ट रूपमें यह अव्यय प्रमाणके बोधक हैं और इनको प्रमाणवाचक इसी कारण कहा जाता है ।

३८७ ऊपर कहे हुए चार प्रकारके अतिरिक्त क्रियाविशेषणके दो भेद और भी माने जाते हैं एक निश्चयवाचक दूसरा अनिश्चयवाचक ।

३८८ नीचे निश्चयवाचकके उदाहरण दिखाते हैं ।

निश्चयवाचक ।

ऐसेही	जैसेही
अबही वा अभी	जबही वा जभी
तबही वा तभी	कबही वा कभी
योंहीं	त्योंहीं
वहीं	जहीं

३८९ इन अव्ययोंसे ज्ञात होता है कि ये निश्चयताके बोधक हैं ।

३९० अन्य क्रियाविशेषणोंमें ही वा हीं लगानेसे निश्चय वाचक बन जाते हैं ।

३९१ अनिश्चयवाचक अव्ययोंके उदाहरण इस भाँति जानने चाहिये ।

अनिश्चयवाचक ।

कभी न कभी	जब न तब	कहीं न कहीं
अब न कब	ऐसा न वैसा	यहां न वहां

३९२ यह उदाहरण स्पष्ट कहते हैं कि यहाँ निश्चय नहीं हैं और इसीसे इनको अनिश्चयवाचक कहा है ।

३९३ अनिश्चयवाचक बनानेके लिये दो क्रियाविशेषणोंके बीचमें 'न' लगाना होता है और इस बातकी कोई आवश्यकता नहीं कि दोनों क्रियाविशेषण समान हों अथवा असमान ।

३९४ कुछ ऐसे क्रियाविशेषणोंके उदाहरण जो बर्तावमें दोहराकर काम आते हैं ।

कभी कभी	जहां कहीं	जहाँ तहाँ	अबतक
बेर बेर	कबतक	कहीं कहीं	ऐसा वैसा
अब तब	ज्यों ज्यों	जब कभी	कहीं नहीं
और कहीं	त्यों त्यों	कभी नहीं	अभी नहीं

३९५ कुछ अव्यय शब्दोंमें पूर्वक, से, करके आदि लगानेसे क्रियाविशेषणका रूप बनाते हैं ।

३९६ कभी कभी गुणवाचक संज्ञा भी क्रियाविशेषणका काम देती है ।

३९७ अनेक क्रियाविशेषण संज्ञाकी भाँति काम आते हैं उस समय उनमें विभक्ति भी लग जाती है । जैसे यहांसे आठ कोश घर है ।

योजक ।

३९८ योजक उस अव्ययको कहते हैं जो दो शब्दों वा वाक्योंकी योजना करे अर्थात् मिलावे । उदाहरण ये हैं:—

औ	और	यदि	यथा
अथ	जो	एवं	भी
कि	फिर	तो	सो
	इस लिये	पुनः वा पुनर्	

विभाजक ।

३९९ विभाजक उस अव्ययको कहते हैं जो दो पदों वा वाक्योंको अलग करे । उदाहरण ये हैं ।

वा	क्या क्या	अथवा	परन्तु
पर	चाहे	किन्तु	जो

विस्मयादिबोधक।

४०० विस्मयादिबोधक अव्यय उसको कहते हैं जिसके द्वारा मनके भीतर एक अनोखे भावका उदय प्रकाशित होता है।

४०१ विस्मयादिबोधक अव्यय अनेक भांतिके होते हैं जैसे आश्चर्यबोधक, आनन्दबोधक, दुःखबोधक, लज्जाबोधक (निरादर) आदि।

(अ) आश्चर्यबोधक, जैसे हैं, अरे, ओहो, क्या है आदि।

(क) आनन्दबोधक जैसे आहा, वाह, धन्य, जय होय आदि।

(ख) दुःखबोधक जैसे आह, अहह, हो, हाय, त्राहि, बाप रे, मैया रे, ऊह आदि।

(ग) लज्जबोधक जैसे छिः, छी, धिक्, धत्, दुर्, हिश आदि।

४०२ लिखनेमें इस बातकी बडी कठिनाई होती है कि इन सब भावोंको साधारण शब्द कैसे दरसावें, बोलनेमें तो वक्ताके शब्दका उच्चारण भावको स्पष्ट कर देता है। बुद्धिमानोंने लिखनेमें इसके लिये ! यह चिह्न बनाया है।

संबंधवाचक ।

४०३ जिस अव्ययके द्वारा यह ज्ञात होता है कि संज्ञाका वाक्यमें दूसरे शब्दोंसे क्या संबंध है उस अव्ययको संबंध-सूचक अव्यय कहते हैं ।

४०४ संबंधसूचक अव्ययोंके दो भेद हैं एक वह जिनमें संज्ञाकी विभक्तिका कुछ समावेश नहीं होता, दूसरे वे जिनमें संबंधकारककी विभक्ति आती है ।

४०५ जिनके उदाहरण जिनमें विभक्ति नहीं आती है । रहित, सहित, समेत, लौं ।

४०६ उनके उदाहरण जिनमें विभक्ति आती है ।

दायाँ	भीतर	ऊपर	संग
बायाँ	नीचे	पीछे	आगे
बीच	साथ	पास	विषय
तले	बदले	बाहिर	तुल्य

४०७ इन अव्ययोंको ध्यानपूर्वक देखनेसे ज्ञात होता है कि, यह वास्तवमें अधिकरणकारककी विभक्तिवाले संज्ञापद हैं, वर्त्तावमें विना विभक्ति अर्थ देते हैं, इस कारण इनको अव्ययोंकी गणनामें ले लिया गया है ।

द्योतक ।

४०८ विभक्ति संज्ञा पदोंकी कारक रचनामें कही जा चुकी हैं उनकी व्याख्या फिर करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है ।

४०९ क्रियाप्रत्यय भी क्रियाकी रूपावलीमें दिखाये जा चुके हैं ।

उपसर्ग ।

४१० उपसर्ग उन अव्ययोंका नाम है जो क्रियावाचक शब्दके पहले आते हैं और उसके अर्थोंकी भिन्नताको प्रकाश करते हैं ।

४११ संस्कृतमें जिनको अव्यय माना गया है, भाषामें भी प्रायः वही पद अव्यय हैं और प्रायः उनका प्रयोग भी वैसाही है ।

४१२ यह कोई नियम नहीं है कि एकही उपसर्ग किसी पदमें जोडा जाय वरन कहीं कहीं दो, तीन तथा चार उपसर्गतक जोड दिये जाते हैं ।

४१३ कुछ उपसर्ग लिखे जाते हैं और उनके संयोगसे जो अवस्था प्रकाशित होती है वहभी उनके सामने दिखाई गई है ।

अ—जिस शब्दके पहले 'अ' लगाया जाता है उस शब्दके अर्थ विपरीत, निषेधित वा रहित हो जाते हैं । जैसे अचलित, चलितका विपरीत । अपवित्र, पवित्रका विपरीत वा निषेधित । अबल अर्थात् बलरहित ।

अन—जिस शब्दके पहले यह उपसर्ग आता है उस शब्दके अर्थको विपरीत निषेधित कर देता है । जैसे अनमिल यहां मिलसे विपरीतता प्रकाशित होती है । अनरस, अनहित आदि ।

अनु—जिस शब्दके पहले यह उपसर्ग आवेगा उसके अर्थमें समानता वा परिपाटीका बोधक होगा । जैसे अनुरूप, अनुगत, अनुसंधान, अनुकरण, अनुशील, अनुशासन आदि ।

अप—जिस शब्दके पहले यह अव्यय आता है उसके भावमें मलिनता, हीनता, दूषण आदि उत्पन्न कर देता है । जैसे अपशब्द, अपवाद, अपव्यय, अपमान, अपयोगी, अपलक्षण आदि ।

अव—जिस शब्दके पहले 'अव' लगाया जाता है उसके भावको बुरा और अनादरमय कर देता है । जैसे अवगुण, अवज्ञा, अवगीत, अवधारण आदि ।

अति—जिस शब्दके पहले यह लगाया जाता है उसके भावमें अधिकाई और बहुतायत जताता है । जैसे अतिशय, अतिगुप्त, अतिभय, अतिभाव, अतिकाल आदि ।

अतिशय—यह भी स्वयं उपसर्गका काम देता है और अति-के समानही भाव प्रकाश करता है ।

अधि—यह जिस शब्दके पहले जोड़ा जाता है उसमें बड़प्पन प्रधानता वा स्वामीपनका प्रकाश करता है । जैसे अधिकार, अधिपति, अधिराज, अधिकरण, अधीश्वर आदि ।

अभि—यह अव्यय किसी शब्दके पहले आकर उसके अर्थकी भिन्नता, बड़प्पन, निकटता आदिका बोध कराता है । जैसे अभिप्राय, अभिनन्दन, अभिगमन, अभिजात आदि ।

आ—यह उपसर्ग जिस शब्दके पहले आता है उसके अर्थमें विपरीतता, मर्य्यादा आदिका बोध कराता है जैसे आगम, आनय, आरोग्य, आकार, आदान आदि ।

उत्—जिस शब्दके पहले यह उपसर्ग लगाया जाता है उसके भावमें उच्चता और बड़ाई वा उत्कर्षता झलकने लगती है । जैसे उदय, उदाहरण, उत्पत्ति, उन्मत्त आदि ।

उप—यह उपसर्ग जिस शब्दके पहले आवेगा उसके भावमें

छोटापन, अधीनता वा निकटता दर्शाता है । जैसे उपवन, उपमंत्री, उपसंहार, उपग्रह आदि ।

कु—अव्यय जिस शब्दके पहले आता है उसका भाव बुरा कर देता है जैसे कुकर्म, कुपात्र, कुमार्ग, कुरूप, कुपथ, कुजाति आदि ।

दुः वा दुस्—यह जिस शब्दके पहले जोडा जाता है उसके भावमें दुःख, बुराई और कठिनताका प्रकाश करता है । जैसे दुर्जन, दुर्गम, दुर्बुद्धि, दुस्त्याज, दुराधर्ष आदि ।

निस् वा निः—यह उपसर्ग विपरीतका प्रकाश करता है । जिस शब्दके आदिमें यह आता है उसके विपरीत भाव देता है। जैसे निर्जीव, निर्दोष, निर्भय, निःस्नेह, निष्कारण आदि ।

नि—यह 'निः' का ही सूक्ष्म रूप है और निषेध तथा अवरोधका द्योतक है । जिस शब्दके पहले 'यह' लगाया जाता है उसके भावका निषेध करता है । जैसे निरोध, निकृत, निवारण, निमुहा, निशंक आदि ।

प्र—यह उपसर्ग जिस शब्दके पहले आता है उसके अर्थमें अधिकता गति वा उत्पत्ति आदिका प्रकाश करता है । जैसे प्रणाम, प्रवास, प्रकाश, प्रसिद्ध, प्रस्थान, प्रभृति, प्रयोग आदि ।

परा—जिस शब्दमें यह जोड़ा जाता है उसके भावमें निषेध नाश तथा अनादरपनका प्रकाश करता है। जैसे पराधीन, पराजय, परास्त, पराभव आदि ।

प्रति—यह उपसर्ग जब किसी शब्दके पहले आता है तो उसके अर्थमें एकएकपन, समानता, विपरीतभावका प्रकाश करता है। जैसे प्रतिदिन, प्रतिवार, प्रत्येक, प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, प्रतिवाद प्रतिहार आदि ।

परि—जिस शब्दके पहले यह उपसर्ग लगाया जाता है यह उसके अर्थमें अति अधिकता वा त्यागका प्रकाश करता है। जैसे परिपूर्ण, परिजन, परिच्छेद, परिहार आदि ।

वि—जिस शब्दके पहले यह उपसर्ग लगाया जाता है उसके अर्थमें एक प्रकारकी हीनता, असमानता वा भिन्नता प्रकाश करता है। जैसे विवर्ण, विदेह, विलक्षण, विरूप, वियोग आदि ।

स वा सह—यह उपसर्ग जब किसी शब्दके पहले आता है, तो उसके अर्थमें संयोग वा साथका प्रकाश करता है। जैसे सानुज, सचेत, सहवास, सहचर, साकार, सहकर्मी, सहगामी आदि ।

सम्—यह उपसर्ग जब किसी शब्दके पहले आता है तो उसके अर्थमें बड़ाई, अधिकता तथा संयोगका प्रकाश करता है। जैसे, समागम, समाधान, सम्बन्ध, संमुख, संतोष आदि।

सु—यह उपसर्ग सुन्दरता सरलता तथा श्रेष्ठताका द्योतक है। जिस शब्दके पहले यह आता है उसके अर्थमें यही भाव प्रकाश करता है। जैसे सुजन, सुहार, सुपुत्र, सुलभ, सुजाति आदि।

४१४ जितने उपसर्ग ऊपर दिखाये गये हैं उनसे स्पष्ट होता है कि उपसर्ग द्योतक होते हैं वाचक नहीं होते।

अव्ययके अन्वय।

४१५ ऊपरके सूत्रोंसे किसी अव्ययके अन्वय इस प्रकार हो सक्ते हैं। क्रिया प्रत्यय और उपसर्गके अन्वय नहीं होते।

अव्यय—१ अव्यय २ भेद ३ प्रभेद यदि हो तो, ४ किस कामको करता है।

४१६ मोहन छोटी पोथीको पढता था वह गुणवान् लड़का है।

इस वाक्यमें केवल अव्ययोंके अन्वय लिखे जाते हैं।

को—अव्यय, दूसरी विभक्ति, कर्मका चिह्न ।

४१७ वह लडका जो पाठशालाको जाता था बडा परिश्रमी है ।

को—अव्यय, द्योतक, दूसरी विभक्ति, अधिकरणका चिह्न ।

समास ।

४१८ जैसे संधि संस्कृत व्याकरणका विषय है उसी भाँति समास भी संस्कृत व्याकरणका विषय है परन्तु इससे भाषाके शब्दोंका बंधनभी नियमानुसार है इस कारण यह भाषा व्याकरणका प्रधान अंग मानना चाहिये ।

४१९ दो समास वा अधिकशब्दोंके उस मिल जानेको कहते हैं जहां शब्द अपनी विभक्ति छोडकर मिलता है और फिर एक शब्दके समान उसका अन्वय होता है ।

यह कभी न समझ लेना चाहिये कि सामासिक पद जिन पदोंके संयोगसे बना है उनकी वे विभक्ति जो लोप होगई हैं निरर्थक हो गईं वरन समास होनेसे वह गुप्तावस्थामें ही अपना भाव रखती हैं । जैसे दयानिधि अर्थात् दयाके निधि यहां ' के ' विभक्तिके लोप हो जानेसे उसका भाव नहीं लुप्त हुआ ।

४२१ भाषामें यह समास छः भाँतिके होते हैं १ द्वन्द्व, २ द्विगु, ३ कर्मधारय, ४ बहुव्रीहि, ५ तत्पुरुष, ६ अव्ययीभाव ।

४२२ द्वन्द्व समासमें दो शब्द साधारण रीति पर साथ साथ लिख दिये जाते हैं । वे दोनों शब्द क्रियासे एकसा संबंध रखते हैं और अन्वयमें एकही बारमें उनकी व्याख्या हो जाती है जैसे 'रात दिन' काम करना पडता है इस वाक्यमें रात दिन साधारण रीतिपर साथ साथ आगये और जो रात शब्दका संबंध करना क्रियासे है वही दिन शब्दका है ।

द्वन्द्वसमासान्त पदोंके उदाहरण

मा बाप	जाति बिरादार
अन्न जल	रोटी पानी
हाथ पांव	गुरु चेला
खान पान	लेन देन
हुक्का पानी	रोटी बेटी

४२३ द्विगु समासमें पहला शब्द तो किसी संख्याका बोधक होगा परन्तु दूसरे शब्दके लिये कोई नियम नहीं है कहते हैं वह समास समाहारका बोधक है जैसेः—

पंचक्रोशी त्रिकुटी त्रिभुवन त्रिलोकी

पंचरत्न चतुर्गुण सप्तर्षि त्रिकाल

४२४ कर्मधारय समास उपमान और उपमेय अथवा विशेष और विशेष्यके एकही स्थानपर आजानेको कहते हैं और इसमें दोनों शब्दोंका तुल्य भाव वा समान अधिकार ज्ञात होता है । जैसेः—

पीताम्बर सज्जन परमात्मा महाराज
नलिकमल चन्द्रमुख सिंह ध्वनि गजगामिनी

४२५ बहुव्रीहि समास उसका नाम है जहाँ दो वा अधिक शब्दोंके संयोगसे एक अन्य पदार्थका बोध होता हो । यह समास ऐसा उपयोगी है कि जहाँ पूरा वाक्य लिखनेसे हृदयका भाव प्रकाशित होता है वहाँ इस समासके दो वा तीन शब्द वही काम देते हैं । जैसे 'दश मुख है जिसके ऐसा मनुष्य' इस इतने बडे वाक्यको केवल 'दशमुख' दो शब्द प्रकाश करते हैं ।

बहुव्रीहि समासान्त पदोंके उदाहरण ।

दशमुख चन्द्रभाल शशिशेखर नारायण
चतुर्भुज बृषभध्वज सुग्रीव नीलकंठ

४२६ कहीं कहीं बहुव्रीहि समासान्त पद विशेषणके भावमें काम आता है और उस अवस्थामें अपने विशेष्य लिंग वचन आदिके अनुसार होता है । जैसे एक दिगंबर साधू देखा था

इस वाक्यमें दिगंबर बहुव्रीहि समासान्त पद है परन्तु साधूके विशेषण रूपमें आया है ।

४२७ तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जहाँ पहला शब्द अपनी विभक्ति छोडकर दूसरे शब्दमें मिलता है और विभक्तिका भाव ज्योंका त्यों बना रहता है । ऐसे अवसरपर दूसरा शब्द प्रधान माना जाता है और क्रियाके साथ उसीका अन्वय होता है । जैसे नरका ईश इन दोनों शब्दोंमें नर पहला शब्द है उसकी विभक्ति का है इसका लोप होकर नर ईश हुआ और संधिद्वारा नरेश होगया ।

तत्पुरुषसमासके उदाहरण ।

हिमालय	जन्मस्थान	विद्याहीन	प्रियवादी
देवभक्ति	यज्ञस्थान	शरणागत	शिवालय

४२८ अव्ययीभाव समास अव्यय और दूसरे शब्दके संयोगसे बनती है अनेक क्रियाविशेषण अव्ययीभाव समासान्त होते हैं । जैसेः—

अतिकाल अनुरुप हरघडी प्रतिदिन

यथाशक्ति निर्भय

त्रयोदश अध्याय ।

संज्ञा और क्रियाशब्दोंका बनाना ।

तद्धित ।

४२९ जब किसी संज्ञा पदमें कोई प्रत्यय लगाया जाता है तो इस व्यापारको तद्धित कहते हैं ।

४३० तद्धित प्रत्यय एक प्रकारकी संज्ञाको दूसरे प्रकारकी संज्ञा बना देता है । इनके प्रयोगसे संज्ञामें अनेक भाव उत्पन्न होते हैं । भाववाचक, गुणवाचक, अपत्यवाचक, न्यूनतावाचक, अधिकतावाचक, कर्तृवाचक, पुँल्लिंगबोधक, स्त्रीलिंगबोधक आदि ।

भाववाचक ।

४३१ नीचे वह प्रत्यय दिये हैं जिनके संयोगसे अन्य शब्द भाववाचक संज्ञा बन जाते हैं:—

आई—चतुराई, रसाई, भगताई, तरुनाई, रंगाई आदि ।

ई—भलाई, बुराई, लरिकाई, गरमी आदि ।

त्व—दासत्व, प्रभुत्व, मनुष्यत्व, पुंसत्व आदि ।

ता—सुन्दरता, कोमलता, हिमता, उत्तमता, स्वच्छतादि ।

पन—लड़कपन, भोलापन, प्रौढ़पन, खोटापन आदि ।

पा—बुढापा, रँडापा, मुटापा आदि ।

वट—मिलावट, सजावट, फुलावट, लिखावट आदि ।

हट—कडवाहट, सोंधाहट, चहपराहट, सुरसुराहट आदि ।

ताई—सुन्दरताई, कोमलताई, मनोहरताई, उत्तमताई आदि ।

गुणवाचक ।

४३२ अब वह प्रत्यय दिखाये जाते हैं जिनके संयोगसे गुणवाचक संज्ञाके रूप बनते हैं:—

आ—ठंडा, प्यासा, भूखा, मैला आदि ।

इत—तृषित, दुःखित, शोकित, आनन्दित आदि ।

ईय, इय वा इया—अनुकरणीय, समुद्रिय, झमेलिया, बखेडिया आदि ।

ई—बली, पुरुषार्थी, रथी, धनी, धर्म्मी आदि ।

ईला—सजीला, रँगीला, भडकीला, चमकीला आदि ।

एला वा ऐला—बनैला, घरेला, झुटैला, पिटैला आदि ।

लु वा लू—दयालु, कृपालु, झगडालू आदि । कहीं 'लु' को 'ल' भी कहते हैं ।

वन्त—शीलवन्त, गुणवन्त, कुलवन्त, बलवन्त आदि ।

वान्—रूपवान्, ज्ञानवान्, आशावान्, क्षमावान् आदि ।

इक—स्वाभाविक, धार्मिक, सांसारिक, शारीरिक आदि । चेत रखना चाहिये कि इस प्रत्ययके जोडते समय आदि अक्षरको दीर्घ करना होता है ।

शाली—भाग्यशाली, गुणशाली आदि ।

अपत्यवाचक ।

४३३ भाषामें अपत्यवाचक बनानेके लिये कुछ विशेष नियम नहीं दिये हैं जो संस्कृत शब्द संस्कृतरीतिपर अपत्य बनगये हैं वही ज्योंके त्यों काममें आते हैं । अपत्यवाचक उसे कहते हैं जिससे उत्पत्तिका ज्ञान हो ।

४३४ वह अपत्यवाचक जो आदि अक्षरको दीर्घ करके बने हैं:—

कश्यपसे	काश्यप	सुमित्रासे	सौमित्र
गोतमसे	गौतम	शिवसे	शैव
वशिष्ठसे	वाशिष्ठ	वसुदेवसे	वासुदेव

४३५ वह अपत्यवाचक जिनके आदि स्वरको दीर्घ किया जाता है और अन्त 'उ' को 'व' आदेश होता है:—

विष्णुसे	वैष्णव	मधुसे	माधव
रघुसे	राघव	यदुसे	यादव
मनुसे	मानव	कुरुसे	कौरव
पंडुसे	पांडव	भृगुसे	भार्गव

४३६ वह अपत्य जिनके अन्तमें 'ई' लगाई गई है:—

वंशसे	वंशी	रामानन्दसे	रामानन्दी

पंथसे	पंथी	बंगालसे	बंगाली
यंत्रसे	यंत्री	नेपालसे	नेपाली

४३७ वह अपत्य जो अन्तमें ' जं ' नाम जन्मदाताके संयोगसे बने हैं:—

पिंडसे	पिंडज	पंकसे	पंकज
स्वेदसे	स्वेदज	जलसे	जलज
अंडसे	अंडज	उद्भितसे	उद्भिज्ज

४३८ वह अपत्य जो अनियमित रीतिसे बने हैं:—

कुन्तीसे	कौन्तेय	पर्वत्रसे	पार्वती
बाप वा मासे	बेटा वा बेटी	बहिनसे	भांजा वा भांजी

न्यूनतावाचक ।

४३९ शब्दमें किसी प्रत्ययके लगनेसे वह अपने वास्तविक अर्थसे कुछ न्यूनताका बोधक होजाता है तो उसको न्यूनतावाचक कहते हैं:—

अक—मूलक, गोलक, ठंडक, सीरक आदि ।

इया—लठिया, डलिया, बिलिया, परिया, घुडिया आदि ।

ई—गोली, टोकरी, रस्सी, लंगोटी आदि ।

अधिकतावाचक ।

४४० जब शब्दमें किसी प्रत्ययके लगनेसे वह अपने

साधारण अर्थसे कुछ अधिकताका बोधक होता है तो उसको अधिकतावाचक कहते हैं:—

अ—नद, ताल, थार, लंगोट आदि ।

आ—घंटा, गोला, कलसा, पोथा आदि ।

कर्तृवाचक ।

४४१ जब किसी प्रत्ययके लगानेसे क्रियाके व्यापारका कर्तृत्व बोध होता है तौ उसको कर्तृवाचक संज्ञा कहते हैं ।

हारा—लकडिहारा, चुरिहारा आदि

वाला—दूधवाला, गाडीवाला आदि ।

इया—आढतिया, मखनिया आदि ।

४४२ पुँल्लिंग और स्त्रीलिंगके प्रत्यय लिंगके विषयमें दिखाये गये हैं।

हमारी शब्दावली नाम पुस्तकमें प्रायः सब प्रत्ययके उदाहरण दिये गये हैं ।

कृदन्त ।

४४३ जो प्रत्यय क्रियाके पीछे आकर क्रियाके भावमें कर्तृत्वका बोध कराते हैं उनको कृत प्रत्यय कहते हैं ।

४४४ कृत्के प्रयोगसे जो शब्द बनते हैं उनको कृदन्त कहते हैं । क्योंकि वह प्रायः क्रियाके समान भाव प्रकाश करते हैं इस लिये क्रियावाचक संज्ञाभी कहते हैं ।

४४५ कृदन्त शब्दोंको भाषा वैयाकरणोंने पांच भेदोंमें बाँटा है अर्थात् कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक तथा क्रियाद्योतक ।

कर्तृवाचक ।

४४६ जिन कृदन्त शब्दोंसे कर्त्तापनका बोध होता है उनको कर्तृवाचक कहते हैं ।

४४७ क्रियाके साधारण रूपमें जो अन्त्य 'ना' होता है उसके स्थानपर 'ने' आदेश करके 'वाला' वा 'हारा' लगा देनेसे कर्तृवाचक संज्ञा बन जाती है । जैसेः—

काटनेवाला मारनेहारा हांकनेवाला राखनेवाला
सोनेहारा खानेहारा

४४८ इनके स्त्रीलिंग रूप साधारण रीतिपर अन्त्य 'आ' को 'ई' आदेश करनेसे बन जाते हैं । जैसे काटनेवाली ।

४४९ क्रियाकी धातुमें 'अक' 'इया' वा 'वैया' प्रत्ययोंको जोडनेसेभी कर्तृवाचक संज्ञा बन जाती है जैसेः—

पूजक	लखिया	कटवैया
पालक	जडिया	कहवैया

४५० जहाँ धातुका अन्त्यस्वर दीर्घ है वहाँ 'वैया' का प्रयोग करते समय अन्त्यस्वरको ह्रस्व करदेते हैं जैसेः—

सवैया गवैया सुवैया उढवैया

कर्मवाचक ।

४५१ जब केवल सकर्मक क्रियासे कृदन्त संज्ञा बनी हो और उससे कर्मत्वका भाव जाना जाय तो उसको कर्मवाचक संज्ञा कहते हैं ।

४५२ कर्मवाचक संज्ञा बनानेके लिये सकर्मक क्रियाके 'ना' के स्थानमें 'आ' आदेश करते हैं और स्त्रीलिंगमें 'ई' आदेश करते हैं । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
देखा	देखी	रोका	रोकी
भेजा	भेजी	किया	की

४५३ किसी २ समय इसी रूपमें 'हुआ' और जोड देते हैं और तब भी कर्मवाचक संज्ञाही बनी रहती है । जैसेः—

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
देखा हुआ	देखी हुई	रोका हुआ	रोकी हुई
भेजा हुआ	भेजी हुई	किया हुआ	की हुई

भाववाचक ।

४५४ जहां कृदन्त संज्ञासे किसी भावमात्रका बोध होता है तो उसको भाववाचक संज्ञा कहते हैं । नियम १४० में भाववाचक संज्ञाकी परिभाषा लिख आये हैं ।

४५५ क्रियाके साधारण रूपमें 'ना' के स्थानमें

'वट' वा 'हट' का आदेश करनेसे भाववाचकका रूप बन जायगा । जैसेः—

बनावट चिल्लाहट सिखावट झुंझनाहट
चटकाहट रंगावट

४५६ क्रियाके साधारण रूपमें 'ना' के स्थानमें 'आई' आदेश कर देते हैं और इस भाँति भाववाचक संज्ञा बनाते हैं जैसेः—

ठगाई बोआई छुनाई दिखाई

४५७ केवल क्रियाके अन्त्य 'आ' का लोप कर देनेसे भाववाचकका रूप बन जाता है । जैसेः—

लेन देन खान पान

४५८ क्रियाके साधारण रूपके 'ना' के स्थानमें 'आव' आदेश करनेसे भाववाचक संज्ञा बन जाती है । जैसेः—

बिकाव फैलाव चौडाव मिलाव

४५९ केवल क्रियाके 'ना' को लोप करनेसे भी भाववाचक क्रियाका रूप बनता है जैसेः—

बोल दौड मान समझ
चाह पुकार

करणवाचक ।

४६० जिस क्रियावाचक संज्ञाके द्वारा क्रियाका व्यापार होना ज्ञात होता है उसको करणवाचक कहते हैं ।

४६१ क्रियाके साधारण रूपमें अन्त्य ' आ ' को ' ई ' आदेश करनेसे करणवाचक संज्ञाका रूप बन जाता है जैसेः—

ओढनी ढकनी घोटनी खोदनी

४६२ क्रियाके धातुमें ' आ ' का आगम करनेसे भी करणवाचकके रूप बन जाते हैं । जैसेः—

घेरा फेरा झूला फूला

४६३ कुछ करणवाचक शब्द अनियमित रीतिसे बन गये हैं जैसेः—

बेलन रंग खुरचना लेखनी

क्रियाद्योतक ।

४६४ जो क्रियावाचक संज्ञा विशेषणके भावमें काम आवे और उससे क्रियाका भाव प्रकाशित होता है उसको क्रियाद्योतक संज्ञा कहते हैं ।

४६५ क्रियाके अन्त्य 'ना' को ' ता ' आदेश करनेसे क्रियाद्योतक संज्ञाका रूप बनता है । कभी इसी रूपमें 'हुआ' आगम और करदेते हैं । जैसेः—

खाता	वा	खाता हुआ
मारता	वा	मारता हुआ
देखता	वा	देखता हुआ
बोलता	वा	बोलता हुआ

चतुर्दश अध्याय ।

शब्दान्वय वा पदान्वय ।

४६६ ऊपर लिखी अन्वयकी रीतियोंसे किसी वाक्यके शब्दान्वय इस प्रकार होंगे ।

१ वाक्य–मोहन छोटी पोथीको पढता था वह गुणवान् लडका है ।

मोहन–रूढि, संज्ञा, व्यक्तिवाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग एक वचन कर्त्ता (पढता था) क्रियाका ।

छोटी–रूढि, संज्ञा, गुणवाचक (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य (पोथी) के समान ।

पोथी–रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग एक वचन कर्म (पढता था) क्रियाका ।

को–अव्यय, द्योतक, दूसरी विभक्ति, कर्मका चिह्न ।

पढता था–क्रिया, सकर्मक, कर्तृप्रधान, अपूर्ण भूत (पु०, लिं०, व०) में कर्त्ता (मोहन) के सदृश जिसका कर्म (पोथी) है ।

वह–रूढि, संज्ञा, सर्वनाम, गुणवाची, निश्चयवाचक, दूरवर्त्ती (पु०, लिं०, व० और का०) में अपने विशेष्यरूपी निर्दिष्ट (लडका) के समान ।

गुणवान्- } यौगिक संज्ञा, गुणवाचक (पु०, लिं०,
(गुण+वान्) } व० और का०) में अपने विशेष्य
(लडका) के समान ।

लडका-रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन, कर्त्ता (है) क्रियाका ।

है-क्रिया, अकर्मक, कर्तृप्रधान, वर्त्तमान (पु०, लिं०, व०) में अपने कर्त्ता (लडका) के समान ।

२ वाक्य-वह लडका जो पाठशालाको जाता था बडा परिश्रमी है ।

वह-रूढि, संज्ञा, सर्वनाम, गुणवाची, निश्चयवाचक दूरवर्त्ती (पु०, लिं०, व० और का०) में अपने विशेष्य रूपी निर्दिष्ट (लडका) के समान ।

लडका-रूढि, संज्ञा, जातिवाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन कर्त्ता (है) के समान ।

जो-रूढि, संज्ञा, सर्वनाम, गुणवाची, संबंधवाचक (पु०, लिं०, व०) में अपने संबंधी निर्दिष्ट (लडका) के समान कर्त्ता (जाता था) कियाका ।

पाठशाला- } यौगिक, संज्ञा, जातिवाचक, अन्य पुरुष,
(पाठ+शाला) } स्त्रीलिंग, एकवचन संप्रदान कारक ।

को-अव्यय, द्योतक, दूसरी विभक्ति, संप्रदानका चिह्न ।

जाता था—क्रिया, अकर्मक, कर्तृप्रधान, अपूर्णभूत (पु०, लिं० और व०) में अपने कर्त्ता (जो) के समान ।

बड़ा—रूढि संज्ञा, गुणवाचक (पु०, लिं०, व० और का०) में अपने विशेष्य (परिश्रमी) के समान जो कि आपभी विशेषणभावमें है ।

परि+श्रमी—यौगिक संज्ञा गुणवाचक (पु०, लिं०, व० और का०) में अपने पूर्वोक्त विशेष्य (लड़का) के समान ।

है—क्रिया, अकर्मक, कर्तृप्रधान, वर्त्तमान (पु०, लिं०, व०) में अपने कर्त्ता (लड़का) के समान ।

पंचदश अध्याय ।

कारकोंकी व्यवस्था आदि ।

४६७ संज्ञा पदोंकी व्यवस्थामें कारकोंकी व्याख्या कर दी गई है परन्तु वह नियम जो अब सब शब्दोंकी व्युत्पत्ति आदि समझकर विद्यार्थियोंको ध्यान रखने चाहिये, यहां लिखते हैं ।

कर्त्ताकारक ।

४६८ कर्त्ता दो प्रकारका होता है एक प्रधान कर्त्ता दूसरा अप्रधान कर्त्ता ।

४६९ प्रधान कर्त्ता उसे कहते हैं जिसके पुरुष लिंग वचन क्रियाके समान होते हैं । जैसे मोहन रोटी खाता है ।

४७० अप्रधान कर्त्ता उसे कहते हैं जिसमें 'ने' आता है और जिसके कर्मके अनुसार क्रियाके पुरुष लिंग और वचन होते हैं । जैसे मोहनने रोटी खाई है ।

४७१ जहां कर्म अपनी विभक्तिके साथ आवे वहां अप्रधान कर्त्ताकी क्रिया पुरुष लिंग और वचनमें कर्मके आधीन नहीं है वरन अन्य पुरुष पुँल्लिंग एक वचन होता है । जैसे मोहनने रोटीको खाया है ।

४७२ जहां संज्ञाके अर्थकी उपस्थिति रीत्यनुसार होती है वहां कर्त्ता कारक होता है । जैसे ऊंचा नीचा आदि ।

४७३ जिसमें क्रियाके व्यापारका फल स्थित होता है और वह प्रधान हो तो कर्त्ता कारक होता है । जैसे कथा कही जाती है ।

४७४ जब लिंगकी स्पष्टता दिखानी होती है अथवा किसी प्रमाण वा संख्याका प्रकाश करना होता है तो कर्त्ता कारक काममें लाते हैं । जैसे लडका चला गया है । सेरभर घी गिर गया । दो मनुष्य आये थे ।

४७५ जब एक संज्ञा पद दूसरेका विशेषण हो जाता है तो

विधेयवाचक संज्ञाका कर्त्ता कारक होता है जैसे धर्म सबसे बडा है । उसका हृदय कठोर है ।

४७६ जब एकही कर्त्ताकी अनेक क्रिया होती हैं तो कर्त्ताको बार बार प्रत्येक क्रियाके साथ नहीं लाते वरन क्रियाओंके बीचमें (,) ऐसा चिह्न बना देते हैं जैसे मैं सदा हँसता, बोलता, खेलता, कूदता रहता हूं ।

कर्मकारक ।

४७७ जिसमें क्रियाके व्यापारका फल रहता है उसको कर्म कारक होता है । जैसे वह रोटीको खाता है ।

४७८ कह आये हैं कि कहीं कहीं कर्मकारककी विभक्ति लोप कर दी जाती है परन्तु इसके लिये कोई नियम नहीं है । यह प्रायः सुगमताके लिये नई शैलीकी रीति है । किसी किसीका मत है कि कर्मकी विभक्ति लानेसे उसमें एक प्रकारकी विशेषता आजाती है जैसे चटर्जीके बीज गणितको पढाता है इसमें 'को' के आनेसे अन्य बीजगणतोंकी अपेक्षा चटर्जीके बीज-गणितमें विशेषता पाई गई, वास्तवमें विभक्ति यथार्थ बोध कराती है ।

४७९ जब संप्रदान कारक और कर्म कारक दोनों एकही वाक्यमें आजाते हैं तो बार बार 'को' के उच्चारणको रोक-

नेके लिये कर्मकी विभक्तिका लोप करदेते हैं । जैसे विद्यार्थि-योंको पुस्तक बांटो ।

४८० किसी किसीके मतसे निर्जीव वाचक कर्मकारककी विभक्तिका लोप कर देना चाहिये जैसे वह पोथी पढता है ।

४८१ प्राणवाचक कर्मकी विभक्ति कभी लोप नहीं करनी चाहिये । जैसे धोबीको पैसे देदो ।

४८२ जहाँ अपादानादि कारककी विवक्षा नहीं होती और कर्म गुप्त हो वहाँ कारकके स्थानमें मुख्य कर्मके अतिरिक्त दूसरा कारक होता है । जैसे आज मेरी गैयाको कौन दुहैगा अर्थात् मेरी गैयाके दूधको कौन दुहैगा ।

करण कारक ।

४८३ कह आये हैं कि जिसके द्वारा क्रियाका व्यापार सिद्ध होता है उसको करणकारक कहते हैं ।

४८४ जो संज्ञा मूल्य वा दामका बोध कराती है उसमें बहुधा करण कारक होता है । जैसे धनसे घर मोल लिया । भावसे वस्तु वेची गई ।

४८५ क्रिया करनेकी रीतिको स्पष्ट करनेवाला करण कारक होता है । जैसे मनसे पोथी पढो ।

४८६ जिसके द्वारा किसी व्यक्ति वा वस्तुका उत्पन्न होना

प्रकाशित होता है उसमें करण कारक होता है । जैसे पितासे पुत्र उत्पन्न होता है । धर्म्मसे बल आता है ।

४८७ जो किसी व्यापारके सिद्ध होनेका हेतु वा कारण होता है उसमें करण कारक होता है । जैसे गाडीसे (गाडीके द्वारा) हमको जाना होता है ।

४८८ जहाँ करण कारक हेतुके कारणको प्रकाश करता है वहाँ बहुधा सुगमताके लिये उसकी विभक्तिका लोप हो जाता है । द्वारा शब्दके आगे आने पर तो विभक्ति अवश्य लोप हो जाती है ।

४८९ कहीं कहीं साधारणमेंभी करण कारककी विभक्तिका लोप कर देते हैं । जैसे कानों सुना न आखों देखा ।

४९० + जब क्रियाका कर्ता उक्त नहीं रहता तो उसमें करण कारक होता है । जैसे हमसे रोटी नहीं खाई जाती ।

+ (अ) जब अनुक्त कर्ताकी क्रिया सकर्मक होती है तो उसके कर्ममें कर्ता कारक होता है जैसे तुमसे वह नहीं खाया जायगा ।

(क) जब अनुक्त कर्ताकी क्रिया द्विकर्मकसे होती है तो उसके कर्ममेंभी कर्ता कारक होता है परन्तु गौण कर्म जो संप्रदान कारकके रूपसे आता है उसको कर्म कारकही होता है । जैसे तुमसे रोटी उसको नहीं दी जायगी ।

संप्रदान कारक ।

४९१ जिसके लिये कुछ होता है उसको संप्रदान कारक कहते हैं जैसे मेरे लिये गाडी लाओ ।

४९२ जिसको कुछ दिया जाय उसके लिये संप्रदान कारक लाते हैं । जैसे मोहनको रुपया दो ।

४९३ संप्रदान कारक प्रायः आवश्यकताका बोधक होकर आता है जैसे उनको यहाँ आना होगा ।

४९४ प्रणाम करने और आशीर्वाद देने आदिमें संप्रदान कारक होता है । जैसे मैं आपको प्रणाम करता हूं । तुमको ईश्वर चिरंजीव करै ।

४९५ उपयुक्तता, औचित्यता और योग्यता आदिक प्रकाश करनेमें भी संप्रदान कारक आता है । जैसे उसको चाहिये कि घर चला जाय । तुमको योग्य था कि उससे न बोलते ।

अपादान कारक ।

४९६ जिससे भिन्नता वा परिचय होता है उसको अपादान कारक कहते हैं । जैसे तुमसे पहलेकी जान पहिचान है । उसके मनसे तू नीच है ।

४९७ जिससे अलग होनेके स्थानका ज्ञान होता है उसको अपादान कारक कहते हैं । जैसे घरसे चला आया । छतसे गिर पडा ।

४९८ वरे, परे, रहित आदि शब्दोंके पहले अपादान कारक आता है जैसे मोहनलाल तुम्हारे घरसे वरे मिला था । वह कुआ सडकसे परे है । तुम अब मोहसे रहित हो चले हो ।

४९९ जब दो वा अधिक वस्तुओंमेंसे किसी एकका विशेष निश्चय करना होता है तो अधिकरण और अपादान कारक दोनोंकी विभक्तियाँ आती हैं । जैसे इन दुकानोंमेंसे तीसरी लेंगे । यह सब बढइयोंमेंसे अच्छा बढई है ।

५०० जब हेतुका प्रकाश होता है तो अपादानकारक आता है । जैसे वह बात होना चाहिये जिससे काम न बिगडे ।

संबंध कारक ।

५०१ जिससे मालिकपन वा अधिकारका प्रकाश होता है उसको संबंध कारक होता है जैसे मोहनका घर, राजाकी गद्दी, उसके पैसे ।

५०२ जो कार्य्य और उसका कारण दोनों एकही स्थानमें आवें तो संबंध कारक होता है । जैसे पीतलका लोटा, सोनेकी घडी, मट्टीके बरतन ।

५०३ स्वामी और सेवक अंग और अंगका भाग कर्त्ता और कर्म तथा जन्य और जनकके संयोगमें संबंध कारक

होता है। जैसे बाबूका नोकर, हाथकी अंगुली, व्यासजीका महाभारत, सेठका बेटा।

९०४ समान, सदृश, तुल्य, अधीन आदि शब्दोंके संयोगमें संबंध कारक होता है। जैसे वह गौके समान सीधा है। तू घोडेके सदृश शीघ्र चलता है। यह मोहनके तुल्य सुहावना है। मैं तो आपके अधीन हूं।

९०५ निकटता, अन्तर, संपूर्णता, अधीनता आदिके प्रकाश करनेमें संबंध कारक होता है। जैसे उस बागके पास गया था। इस और उस कोठीमें दो कोसका अन्तर है। हम सबके सब तुम्हारे यहाँ आवेंगे। उनकी आज्ञानुसार जाता हूं।

९०६ जब सकर्मक क्रियामें केवल धातु वा भाववाचकका प्रयोग होता है तो संबंध कारककी विभक्ति आती है। जैसे घरका फूंकना, गाँवकी लूट।

९०७ अवस्था, प्रमाण, शक्ति, योग्यता, मूल आदिका बोध करानेको संबंध कारक लाते हैं। जैसे आठ दिनका बालक, चार सेरकी थाली, उसमें एक घोडेका बल है, तुम उसकी चतुराई देखो, लोटेका दाम लेलो।

अधिकरण कारक।

९०८ कह आये हैं कि जिसपर कर्त्ता और कर्म्मके द्वारा

क्रियाका आधार है उसको अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे मैंने नदीमें स्नान किया है ।

५०९ जिसने किसी वस्तुपर आधार पाया जाता है उसको अधिकरण कारक होता है । जैसे खाटपर सोते थे ।

५१० जिससे इस बातका ज्ञान होता है कि अमुक पदार्थमें निवास है उसको अधिकरण कारक होता है । जैसे ईश्वरकी माया सबमें पाई जाती है ।

५११ जिससे किसी बिषयका बोध होता है उसे अधिकरण कारक होता है । जैसे वह पापमें रत है ।

५१२ जहाँ एकसे अधिक पदार्थोंमें किसी विशेषका निश्चय पाया जाता है तो अधिकरण कारक होता है । जैसे अचारोंमें आमका अचार सर्वोत्तम है ।

५१३ कहीं कहीं हेतुके प्रकाशमें भी अधिकरण कारक होता है । जैसे मोहनने बातकी बातमें काम बना लिया ।

विशेषण ।

५१४ जो किसीके गुणको बतावे उसे विशेषण कहते हैं जैसे काला घोडा ।

५१५ विशेषण अपने विशेष्यसे पहिले आता है परन्तु जहाँ वाक्यको सूक्ष्म करनेके लिये विशेष्यका लोप होगया है वहाँ विशेषण अकेला आता है । जैसे बुद्धिमानोंने यह नियम बनाये हैं ।

५१६ जो आकारान्त गुणवाचक यदि प्रधान कर्त्ताके अतिरिक्त किसी और कारकका विशेषण है तो बहुवचनमें 'आ' को 'ए' आदेश करते हैं जैसी हम नीचे घरोंमें रहते हैं ।

५१७ जहाँ आकारान्त गुणवाचक स्त्रीलिंग शब्दका विशेषण होकर आता है वहाँ 'आ' को 'ई' आदेश करते हैं। जैसी नीची सडकें बरसातमें दुःख देती हैं ।

५१८ विशेषण अपने विशेष्यके साथ किसी कारककी विभक्ति वा बहुवचनके प्रत्ययको ग्रहण नहीं करता परन्तु जहाँ विशेष्यका लोप है वहाँ विभक्ति, प्रत्यय सबका प्रयोग होता है । जैसे रोगियोंके निवास स्थान ।

५१९ कर्तृवाचक, कर्मवाचक और क्रियाद्योतक संज्ञाभी कहीं कहीं विशेषणके समान काम देती हैं। जैसे गवैया आदमीका सब आदर करते हैं । रोका हुआ जल सड जाता है । बोलता तोता उड गया ।

५२० संख्यावाचक शब्दमें 'आ' वा 'वाँ' प्रयोग होनेसे विशेषण बन जाता है । जैसे पन्द्रहवाँ अध्याय ।

५२१ विभक्तियुक्त कर्मके रहते विशेषण कर्त्ताके समान रहता है परन्तु जब कर्मकी विभक्तिका लोप होगया है तो

विशेषण कर्मके अनुसार होगा । जैसे तुमने लाठीको फेंका और तुमने लाठी फेंकी ।

५२२ नियम १४९ में कह आये हैं कि लिंग आदिमें विशेषण अपने विशेष्यके सदृश होता है । यदि किसी संज्ञाके एकसे अधिक विशेषण हैं तो भी इस नियममें व्यतिक्रम नहीं होता । जैसे बहुत ऊँचा: चौकोर कमरा ।

षोडश अध्याय ।



वाक्यनिरूपण ।

५२३ व्याकरणका तीसरा अंग वाक्य निरूपण है । इसमें शब्दोंसे वाक्य बनानेके नियम आदि बताये गये हैं ।

५२४ शब्दोंकी व्युत्पत्ति, एक रूपसे दूसरे रूपका बदलना, उनके भेद, प्रभेद आदि जो कुछ शब्द निरूपणमें दिखाया गया है उसको समझते हुए शब्दोंको जोडकर वाक्य कैसे बनता है यह बताया जाता है ।

५२५ वाक्य दो वा अधिक शब्दोंके समूहका नाम है । जैसे तुम आये वह भी कल आ गये आदि ।

५२६ कोई वाक्य जिसमें कर्त्ता और क्रियामेंसे एक भी

नहीं है उसको वाक्य नहीं कह सक्ते अर्थात् कर्त्ता और क्रिया वाक्यके प्रधान और आवश्यक अंग हैं ।

५२७ वाक्यमें कर्त्ता क्रियासे पहले आता है । जैसे बालकने खाया ।

५२८ कर्त्ताके अतिरिक्त वाक्यमें और कारकोंका स्थान वाक्यकी रचना पर निर्भर है जिस भावका वाक्य होगा उसीके अनुसार उसका नियम होगा ।

५२९ साधारण रीतिसे अन्य कारक कर्त्ता और क्रियाके बीचमें रहते हैं । जैसे मोहनलाल भोजनके लिये आसनपर बैठा । इस वाक्यमें मोहनलाल कर्त्ता और बैठा क्रिया है और संप्रदान और अधिकरण कारक कर्त्ता और क्रियाके बीचमें आये हैं ।

५३० कर्म वाक्यमें क्रियाके पास उससे पहिले आता है जैसे मोहनलाल पोथीको देखता है ।

५३१ अन्य कारक कर्त्ता और कर्म्मके बीचमें आने चाहिये । जैसे मोहनलाल चौकीपर पोथीको देखता है ।

५३२ संबंध कारक जिससे सम्बन्ध रखता है उसके पासही उससे पहिले आता है । जैसे मोहनकी पोथी मार्गमें गिर गई ।

५३३ वाक्यमें विशेषण अपने विशेष्यके पहिले आता है। जैसे कर्त्ताका विशेषण अच्छा लडका आया था।

अन्य कारकका विशेषण अच्छा लडका सुन्दर पोथी लाया था।

५३४ निश्चयवाचक सर्वनाम अपने विशेष्य रूपी निर्दिष्टसे पहिले आता है जैसे दूसरा मोहनलाल इस पोथीको पढता है।

५३५ प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके विषयमें प्रश्न करना है उस पदके पहिले आता है। जैसे मोहनलाल क्या गया ? मोहनलालने क्या अपनी टोपी खो डाली ? आदि परन्तु जब वाक्य सम्पूर्ण प्रश्नवाचक हैं तो प्रश्नवाचक सर्वनाम वाक्यके आदिमें आजाता है। जैसे क्या इसी मकानकी बातचीत थी ?

५३६ प्रश्नवाचक वाक्यके पीछे ? ऐसा चिह्न लगा देते हैं क्योंकि जब वाक्यमें प्रश्नवाचक सर्वनामके विनाही प्रश्न होता है तो चिह्नरहित वाक्यमें भ्रम पड जाता है। जैसे मैं जाऊं इस वाक्यमें भ्रम है कि कर्त्ता प्रश्न करता है वा नहीं। यदि मैं जाऊं ? ऐसा लिखा जाय तो कुछ भ्रम नहीं रहता। बोलनेमें तो उच्चारणका संकेत स्पष्ट कर देता है।

५३७ यदि अकर्मक क्रियाके भिन्न २ लिंगके अनेक कर्ता हों और उनका विशेषण भी हो तो विशेषणका लिंग अन्तिम कर्ताके समान होता है । जैसे मुरदाबादी कलईके कटोरे गिलास और थाली अच्छी होती हैं ।

५३८ क्रियाके लिंग वचन कर्त्ताके लिंग वचनके समान होते हैं । जैसे जल गिरता है । परन्तु सकर्मक क्रिया भूतकालकी क्रिया हो तो कर्त्ताके आगे 'ने' लगा देते हैं । जैसे हमने आम खाये थे ।

५३९ जहां भिन्न २ लिंगवाले अनेक कर्त्ता एक ही क्रियाके साथ आवें तो क्रियाका लिंग अन्तिम कर्त्ताके समान होता है परन्तु बहुवचनका रूप होगा । जैसे गाय बैल भैंसा और भैंस इस खेतमें चरती हैं ।

५४० जहाँ भिन्न २ लिंगवाले अनेक कर्त्ता एकही क्रियाके साथ आवें परन्तु उनके साथ कोई शब्दसमुदाय वा झूँडका बोधक भी आवे तो क्रिया पुँल्लिंग बहुवचन होती है जैसे:- गाय, बैल, भैंसा और भैंस सब इस खेतमें चरते हैं ।

५४१ ऊपरके नियमोंमें अनेक कर्त्ताओंको योजकसे जोडा है यदि योजकके स्थानमें विभाजक आवे तो क्रिया बहुवचन नहीं होगी, वरन एकवचन रहेगी । जैसे मुझे सुख, चैन, धन वा जन अब नहीं भाता ।

५४२ जब एकसे अधिक कर्त्ता वा संज्ञापद किसी वाक्यमें आते हैं तो योजक और विभाजक अन्तिम दोके बीचमें रक्खा जाता है और पहिलोंके बीचमें केवल (,) चिह्न कर देते हैं । जैसे मोहन, सोहन और राधेलाल पाठशालाको जाते हैं । मोहन, सोहन वा राधेलालकी पोथी है ।

५४३ जब एकही कर्त्ताकी अनेक क्रिया हैं तो योजक वा विभाजक अन्तिम दोके बीचमें आता है । जैसे मोहनलाल पढता, लिखता, खेलता और कूदता है । सोहन पढता, लिखता वा लेटता है ।

५४४ किसी किसीके मतसे जब एकही कर्त्ताकी अनेक क्रिया हों और उनके बीचमें विभाजक आवे तो क्रियाकी विभक्ति प्रत्येक क्रियाके साथ आनी चाहिये जैसे सोहन पढता लिखता है वा खेलता है ।

५४५ जैसे अनेक शब्दोंके जोडने वा अलग करनेमें योजक वा विभाजक पिछले दोके बीचमें आता उसी भाँति अनेक वाक्य वा वाक्यखंडोंके जोडने तथा अलग करनेमें पिछले दो वाक्य वा वाक्यखंडोंके बीचमें योजक वा विभाजक आवेगा । जैसे काबूलके बादाम, मेरठकी कैंची और सहारनपुरके लुकाट हमारे घर आये थे ।

५४६ जब उत्तम पुरुष कर्त्ताके साथ साथ किसी और पुरुषका कर्त्ता उसी क्रियाका हों तो क्रिया उत्तम पुरुषके

समान रहती है । जैसे हम और तुम खाएंगे । हम और वह गये थे । वे, हम और तुम देखेंगे ।

५४७ जब मध्यम और अन्य पुरुषके कर्त्ताओंकी एकही क्रिया हो तो क्रिया मध्यम पुरुषके अनुसार होगी जैसे वह और तुम जाओगे ।

५४८ पूर्वकालिक क्रिया अपनी सहगामिनी क्रियाके पहिले आती है और जहां सहगामिनी क्रियाका कर्म होता है वहां कर्मसे भी पहले आती है । जैसे वह लडका पढकर खेलता है रामचन्द्रने समुद्र उतरकर लंका जीती थी ।

५४९ वाक्यमें अनेक संज्ञाओंके रहते भी यदि कोई शब्द ऐसा आजाय जिससे उनकी एकता समझी जाय तो एक वचन क्रिया होती है । जैसे भोजन, वस्त्र, घर, द्वार मेरे सब कुछ है । जहां अनेक संज्ञाओंसे बहुतायत पाई जाय वहां साधारण रीति पर बहु वचन क्रिया होगी ।

५५० आदरसूचक वाक्यमें जब कर्ताके संग आदरसूचक शब्द आया हो वा न आया हो क्रिया बहु वचनही आती है। जैसे आप कल आवेंगे, पंडितजी आये थे ।

५५१ वाक्यमें उचित शब्दोंका प्रयोग करना चाहिये जो शब्द वर्त्तवमें जिस भावके लिये आता है उस शब्दको उस

भावमें न होनेसे कर्ता और क्रियाके रहते भी वाक्य नहीं बनता जैसे वह मूडामें वंहें गया । वह बसूलेसे रोटी सेंकता है ।

९५२ शब्दोंसे वाक्य बनाते समय प्रत्यासत्तिका विचार रखना योग्य है । जिन पदोंमें अन्वयकी अपेक्षा है वह एक दूसरेसें अधिक दूर न होने चाहिये । जेसे रामप्यारी सुई मेरे घरमी बहुत सुन्दर अच्छी सुई हैं से सींती है शुद्ध रूपमें यह वाक्य यों होगा रामप्यारी सुईसे सीती है और मेरे घरमी बहुत सुन्दर अच्छी सुई हैं ।

वाक्य ।

९५३ जिसमें कर्त्ता और क्रिया होती है और जिसमें ऊपरके नियमोंके अनुसार पदयोजना हुई है उसको वाक्य कहते हैं ।

९५४ वाक्य तीन प्रकारके हैं एक कर्तृप्रधान दूसरा कर्म-प्रधान, तीसरा भावप्रधान ।

९५५ कर्तृप्रधान वाक्य उसे कहते हैं जहां कर्त्ता अपनी ही विभक्तिके साथ रहता है और क्रियाके पुरुष लिंग वचन उसीके अनुसार रहते हैं । जैसे लडका पढता है । नियम ९५६ में कह आये हैं कि सकर्मक क्रियाके भूतकालमें यह नियम नहीं रहता ।

९५७ कर्मप्रधान वाक्य वह है जिसमें कर्मही पहली विभ-

क्तिमें होता है और क्रियाको पुरुष लिंग और वचनमें अपने आधीन रखता है। जैसे रावण रामसे मारा गया।

५५७ कर्मप्रधान वाक्यमें भी अन्य कारक तथा विशेषण आदि अपने २ संबंधसे उन्हीं स्थानोंमें आते हैं जैसे कर्तृप्रधान वाक्यमें कह आये हैं।

५५८ भावप्रधान वाक्य वह है जिसके कर्त्तामें पहली विभक्ति नहीं होती वरन तीसरी विभक्ति जोडी जाती है। मुझसे नहीं बैठा जाता।

५५९ कह आये हैं कि बहुधा भावप्रधानमें निषेधके अव्यय 'नहीं' वा 'विना' को जोडा जाता है।

५६० अब इन नियमोंसे स्पष्ट है कि कर्तृप्रधानमें कर्त्ता, कर्म प्रधानमें कर्म और भावप्रधानमें भाव ही प्रधान रहते हैं और प्रत्येकके संग क्रमानुसार कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान और भावप्रधान क्रिया आती है।

उद्देश्य विधेय।

५६१ जिसके बारेमें कुछ कहा जाता है। उसको उद्देश्य कहते हैं जैसे लाला आये थे। इस वाक्यमें लाला शब्द उद्देश्य है।

५६२ जो कुछ कहा जाता है वह ही विधेय है। जैसे

ऊपरके उदाहरणमें आये थे यह उद्देश्यके बारेमें कहा गया इस लिये यह विधेय है ।

५६३ उद्देश्य और विधेय दोनोंको विशेषण आदिके संयोगसे बडा किया जा सक्ता है । जैसे बडे लाला आये थे बडे लाला कल आये थे ।

५६४ उद्देश्यके विशेषण आदि शब्द उद्देशमें और विधेयके विशेषण आदि शब्द विधेयमें गिने जाते हैं । जैसे बडे लाला कल आये थे इसमें बडे लाला दोनों शब्द उद्देश्य हैं और कल आये थे यह शब्द विधेय हैं ।

५६५ वाक्यमें बहुधा कर्त्ता ही उद्देश्य होता है और क्रिया विधेय ।

५६६ जहां वाक्यमें कर्म आदि और कारक होते हैं तो वह भी विधेय हो जाते हैं ।

५६७ कर्त्ताका विशेषण यदि कर्त्तासे पीछे आता है तो वह भी विधेय होजाता है जैसे कहीं २ कूपका पानी खारा होता है ।

५६८ जहां क्रियाके दो कर्त्ता हों और आपसमें विशेष्य विशेषण न हों वहां दूसरा कर्त्ता विधेय माना जाता है जैसे देवदत्त पंडित हो गया ।

५६९ जहां क्रियाके दो कर्म्म और वह परस्परमें विशेष्य

विशेषण नहीं है तो दूसरा कर्म विधेयकी गणनामें आता है। जैसे वह पुरुष स्त्री बन गया।

५७० अवधारण वा विशेषतामें इन नियमोंका पालन कभी २ नहीं होता।

वाक्योंके अन्वय।

५७१ वाक्योंके अन्वयमें किसी वाक्यके पदोंका सम्बन्ध प्रकाशित किया जाता है।

५७२ ऊपर लिखी रीतियोंके अनुसार उद्देश्य और विधेयकी व्याख्या करके दोनोंको मिलाकर वाक्य पूरा करते हैं।

५७३ यदि वाक्य दो वा अधिक अवयवोंसे बना हो तो ऊपरकी रीतियोंसे उद्देश्य और विधेयकी व्याख्या करके दोनोंको मिलाकर एक अवयव फिर दूसरा आदि पूरा करके सब अवयवोंसे वाक्य पूरा करते हैं जैसा—१ वाक्य-मोहन छोटी पोथीको पढता था वह गुणवान् लडका है। इसके वाक्यान्वय लिखते हैं यथा—

(मोहन) कर्त्ता पढता था क्रियाका उद्देश्य। (छोटी) विशेषण, (पोथी) विशेष्य विशेषण और विशेष्य मिलके कर्म; (को) कर्मका चिह्न; (पढता था) क्रिया, कर्म और क्रिया मिलके विधेय। उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्यका एक अवयव पूरा हुआ वह कर्त्ता [है] क्रियाका उद्देश्य

(गुणवान्) विशेषण,: (लडका) विशेष्य; विशेषण और विशेष्य मिलकर कर्त्ता (है) क्रियाका; (है) क्रिया; पिछला कर्त्ता और क्रिया मिलकर विधेय इसलिये उद्देश्य और विधेय मिलकर वाक्यका दूसरा अवयव पूरा हुआ। निदान दोनों खंड मिलकर वाक्य पूरा होगया ।

५७४ २--वाक्य--लडका जो पाठ शालाको जाताथा बडा परिश्रमी है (लडका) कर्ता (है) क्रियाका, उद्देश्य । (जो) कर्ता: (जाता था) क्रियाका, उद्देश्य । पाठशाला-अधिकरण; (को) अधिकरणका चिह्न, (जाता था) क्रिया अधिकरण और क्रिया मिलकर विधेय । इसलिये दूसरा उद्देश्य और विधेय मिलकर अन्तर्गत वाक्य पूरा हुआ। (बडा) विशेषण परिश्रमीका, परिश्रमी विशेष्य विशेषण और विशेष्य मिलकर विशेषण; (है) क्रिया, विशेषण और क्रिया मिलकर विधेय । पहला उद्देश्य और यह विधेय मिलकर वाक्यका मुख्य खंड पूरा हुआ निदान मुख्य खंड और अन्तर्गत मिलके वाक्य पूरा होगया ।

अन्वय ।

५७५ यद्यपि संस्कृतमें छन्दोंके गद्य करनेको अन्वय कहते हैं पर भाषामें उसे गद्य कहते हैं और अन्वयसे यही भाव होता है जो नीचे लिखा जाता है ।

६७६ पदान्वय और वाक्यान्वय मिलाकर प्रकाशित करनेको पूर्णान्वय वा अन्वय कहते हैं।

१ वाक्य—मोहन छोटी पोथीको पढता था वह गुणवान् लडका है इसके अन्वय लिखे जाते हैं।

(मोहन) रूढि, संज्ञा गुणवाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग एक वचन कर्ता (पढता था) क्रियाका उद्देश्य। (छोटी) रूढी संज्ञा, गुणवाचक (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य पोथीके समान; (पोथी) रूढि संज्ञा जातिवाचक, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एक वचन कर्म्म (पढता था) क्रियाका, (को) अव्यय द्योतक, दूसरी विभक्ति कर्मका चिह्न (पढता) था सकर्मक क्रिया, कर्तृप्रधान, अपूर्णभूत (पुरुष लिंग, वचन) में अपने कर्ता (मोहन) के समान इसका कर्म (पोथी) है, इस लिये कर्म और क्रिया मिलके विधेय। निदान उद्देश्य और विधेय मिलके वाक्यका पहला खंड पूरा हुआ।

(वह) रूढि, संज्ञा, सर्वनाम गुणवाची, निश्चयवाचक, दूरवर्त्ती (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य रूपी निर्दिष्ट (लडका) के समान उद्देश्य (गुणवान्) यौगिक, संज्ञा, गुणवाचक, (पुरुष, लिंग, वचन और कारक) में अपने विशेष्य (लडका) के समान, (लडका) रूढी, संज्ञा, जाति-

वाचक, अन्य पुरुष, पुँल्लिंग, एक वचन कर्त्ता (है) क्रियाका (है) क्रिया अकर्मक, कर्तृप्रधान वर्त्तमान (पुरुष, लिंग, वचन) में अपने कर्त्ता (लडका) के समान; कर्त्ता और क्रिया मिलके विधेय । इसलिये उद्देश्य और विधेय मिलके वाक्यका दूसरा खंड पूरा हुआ, दोनों खंड मिलके वाक्य पूरा हुआ ।

सप्तदश अध्याय ।

विरामादि उपयोगी चिह्न ।

५७७ विराम नाम ठहरनेका है । वाक्यमें जिन शब्दों वा वाक्यों पर इनमेंसे एक अथवा अनेक चिह्न लगे हों उनको रीत्यनुसार पढनेके लिये और भाव समझनेके लिये यह चिह्न माने गये हैं ।

५७८ जहाँ (,) ऐसा चिह्न हो वहाँ इतनी देर ठहरना चाहिये जितनी देर 'एक' शब्दके उच्चारणमें लगती है । इसको विराम कहते हैं ।

५७९ दो वा अधिक शब्द और वाक्योंके योजन और विभाजनमें विरामका चिह्न आता है ।

५८० नई शैलीके अनुसार जहाँ अव्ययका लोप होता है । विभक्ति गुप्त रहती है वहां विरामका चिह्न लगाते हैं ।

५८१ जहां (;) ऐसा चिह्न हो वहां विरामसे ड्योढी देर ठहरना चाहिये । इसको विरामार्ध विराम वा डेढ विराम कहते हैं ।

५८२ जब दो मिश्रित वाक्य एकही साथ आते हैं तो उनको अलग अलग करनेके लिये बीचमें डेढ विराम लगाया जाता है ।

५८३ जब एक वाक्यका खंड दूसरे वाक्यखंडसे विपरी- तता दिखाता है तो बीचमें विरामार्ध विराम लगाते हैं ।

५८४ जहां (।) ऐसा चिह्न हो वहां विरामसे दूनी देर ठहरना चाहिये इसको द्विविराम कहते हैं ।

५८५ जब वाक्य पूरा होता है तो उसके पीछे द्विविरा- मका चिह्न लगाते हैं ।

५८६ जहां (॥) चिह्न हो वहां विरामसे तिगुनी देर ठहरना चाहिये । इसको त्रिविराम कहते हैं ।

५८७ परिच्छेदके अन्तमें त्रिविरामका चिह्न लगाते हैं । जब एक परिच्छेदमें अनेक वाक्य होते हैं और उनमें आप- समें कुछ संबंध नहीं होता तो बीचमें द्विविराम लगता है और अन्तमें त्रिविराम ।

५८८ जहां (?) ऐसा चिह्न होता है वहां प्रश्न समझा

जाता है और इसको प्रश्नवाचक चिह्न कहते हैं ।

५८९ जहां (!) ऐसा चिह्न होता है वहां संबोधन, विस्मय, आश्चर्य और आज्ञा समझी जाती है ।

५९० कोष्ठके विशेष दो स्वरूप हैं " " और ( )

५९१ " " इस कोष्ठके भीतर जो शब्द वा वाक्य हो उसको समझना चाहिये कि लिखनेवालेने किसी अन्य स्थानसे उद्धृत किया है ।

५९२ जहां यह कोष्ठ सूक्ष्म स्वरूपसे होता है जैसे ' ' वहां वाक्यसे कोष्ठके भीतरके अक्षर वा वाक्यकी भिन्नता सिद्ध होती है ।

५९३ जहां कोष्ठका ( ) यह स्वरूप होता है वहां कोष्ठके भीतरका पद वा वाक्य बाहिरके वाक्यसे अलग होता है ।

५९४ जहां–:ऐसा चिह्न होता है उस स्थानपर उसी पंक्तिमें चिह्नसे पहले शब्द वा अक्षरकी व्याख्या की जाती है । इसको यतीरेख कहते हैं ।

५९५ जहां:–ऐसा चिह्न होता है उस स्थानपर समझना चाहिये कि नीचे इसी वाक्यके संबंधकी व्याख्या आदि है । इस चिह्नको बेढ यतीरेख कहते हैं ।

५९६ जब पंक्तिके अन्त्य शब्दको पूर्ण स्वरूपमें उसी

पंक्तिमें स्थानाभावसे नहीं लिख सकें तो शब्दके खंडको लिखकर – यह अर्ध यतीरेखका चिह्न लगा देते हैं ।

५९७ गणितमें इस चिह्नको ऋणका चिह्न कहते हैं ।

५९८ अर्ध यतीरेखेका चिह्न प्रायः मुद्रालयोंमें काम आता है, हस्तलिखित पंक्तिमें इसका व्यवहार शोभा नहीं देता ।

५९९ जिन दो शब्दों वा अक्षरोंके बीचमें + ऐसा चिह्न होता है उनकी योजना समझी जाती है और इस चिह्नको धनका चिह्न कहते हैं ।

६०० जिन दो अक्षरों, शब्दों वा वाक्योंके बीच = ऐसा चिह्न होता है उससे समानता जानी जाती है और इसको बराबरका चिह्न कहते हैं ।

जब शब्दमें किसी अक्षरका लोप हो जाता है वहां ऽ ऐसा चिह्न बना देते हैं । इस चिह्नको उकारीका चिह्न कहा जाता है ।

इति भाषाव्याकरण पहिला भाग समाप्त ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी–मुंबई.

जाहिरात.

	की. रु. आ.
अर्थप्रकाशिका (व्याकरण) पढनेवालोंको अति उपयोगी है भाषाभाष्यभी है	०-८
अष्टाध्यायीसूत्रपाठ परिभाषापाठ शिक्षापाठश्च	०-१२
अष्टाध्यायी भाषाटीका	२-०
कारकस्वरूपप्रकाश भाषाटीका सहित	०-८
कारकवादार्थ शाब्दबोध व्याकरणन्याय ...	०-३
तत्त्वबोधिनी कौमुदीके पृष्ठांकसह पूर्वार्द्ध	२-०
धातुरूपावली लघुधातुपाठसहित	०-४
बालसंस्कृतप्रभाकर नवीन संस्कृत सिखनेवालेको बहुत उपयोगी है	०-८
मध्यसिद्धांत कौमुदी	१-०
रूपमाला अव्ययार्थविभाग	०-३
रूपमाला कारकसमासतद्धितादिक क्रियाकलाप आख्यातचान्द्रिका धातुरूपभेद श्लोकयोजनिकोपायः	१-८
रूपमाला प्रयोगविधि	०-३
रूपमालाव्याकरणका षड्लिङ्गविभाग	०-६
रूपमाला व्याकरण सन्धिभाग, अव्ययार्थभाग प्रयोगविधि-संग्रह (कारकसमासतद्धितादि)	

	की. रु. आ.
क्रियाकलाप आख्यातचंद्रिका धातुरूपभेद श्लोकयोजनिकोपाय और षड्लिंग भाग	१—८
रूपमाला व्याकरण सन्धिविभाग	०—६
लघुसिद्धान्तकौमुदी टिप्पणीसहित जिल्द अक्षर बडा सूत्र और वृत्ति तथा अकारादि सूत्रानुक्रमणिकासह	१—०
लघुकौमुदी भा० टी० अतिउत्तम	३—०
लघुसिधान्तकौमुदी टिप्पणीसहित छोटी	१—०
लिंगबोध व्याकरण भाषाटीका	०—२
शब्दरूपावली एकाक्षरीकोष सहित	०—२
समासचक्र	०—१
समासकुसुमावली	०—४
संस्कृतारोहण भाषाटीका समेत	०—६
संस्कृतनामावली भाषाटीका	०—२
संस्कृतप्रदीप भाषाटीका अतिउत्तम	०—३
संस्कृत प्रवेशिनी	०—२
संस्कृत प्रवेशिका	०—२
सारस्वतसटीक भाषाटीका	१—०

	की. रु. आ.
सारस्वतमूल पूर्वार्द्ध जिल्द टाईपका	०–९
सारस्वत तीनों वृत्ति मूल	१–०
सारस्वत चन्द्रकीर्त्तिटीकासह पूर्वार्द्ध ग्लेज	१–८
,, तथा रफ् कागजका	१–०
सारस्वत चंद्रकीर्ति उत्तरार्द्ध	२–८
सारस्वत भा० टी० (व्याकरण)	२–८
,, ,, रफ	१–८
सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनी और तत्त्वदीपिकासह संपूर्ण	५–०
सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनीटीका और तत्त्वदीपिकासह	३–०
सिद्धांतचन्द्रिका सटीक पूर्वार्द्ध सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका टीका	३–०

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.